1 समुएल

[illegible]

यह किताब एक का दावा पेश नहीं करती किसी तरह समुएल ने इसे लिखा हो और यकीनी तौर से मा'लूमात फ़राहम की हो क्यूंकि 1 समुएल 1:1 — 24:22, में जो उसकी ज़िन्दगी की कहानी है और तरक्की व नशोनुमा की बाबत खुद के आलावा किसी को मालूम नहीं था — यह बहुत ही मुमकिन है कि समुएल नबी इस किताब के कुछ हिस्से खुद ही लिखे हों — 1 समुएल के लिए दीगर मुमकिन मुज्मूनं निगार नबी या तारिख्दान नातन और जाद भी हो सकते हैं (1 तवारीख 29:29)।

[illegible]

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 1050 - 722 क़बल मसीह है।

मुसन्निफ़ ने इस किताब को इस्राईल और यहूदिया के बीच हुकूमत की तक़सीम के बाद लिखा यह बात साफ़ है क्यूंकि इस्राईल और यहूदिया की बाबत कई एक हवालाजात को फरक फरक नाम दिए गए हैं — (1 समुएल 11:8; 17:52; 18:16) (2 समुएल 5:5; 11:11; 12:8; 19:42-43; 24:1,9)।

[illegible]

इस किताब के असली कारिईन तकसीम शुद:इसराइल और यहूदिया के अरकान थे जिन्हें जायज़ क़रार देने पर और दाउद के शाही सिलसिले के लिए एक इलाही ज़ाहिरी तनासुब की ज़रुरत थी।

[illegible]

पहला समुएल बनी इजराइल की तारीख़ को कनान के मुल्क में काजियों की हुकुमरानी से बादशाहों के मातहत एक मुत्तहिद कौम

की तरफ़ होने को कलमबंद करती है — समुएल आखरी क़ाज़ी बतौर ज़हूर में आता है और बनी इस्राएल के पहले दो बादशाहों यानी साउल और दाउद का मसाह करता है।

□□□□’□

तबद्दुल हालात या कैफ़ियात में।

बैरूनी ख़ाका

1. समुएल की ज़िन्दगी और उसकी ख़िदमत — 1:1-8:22
2. इस्राईल का पहला बादशाह बतौर साऊल की नाकामी — 9:1-12:25
3. बादशाह बतौर साऊल की नाकामी — 13:1-15:35
4. दाउद की ज़िन्दगी — 16:1-20:42
5. इस्राईल का बादशाह बतौर दाउद का तजुर्बा — 21:1-31:13

□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

1 इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में रामातीम सोफ़ीम का एक शख़्स
था जिसका नाम इल्क़ाना था। वह इफ़्राईमी था और यरोहाम बिन
इलीहू बिन तूहू बिन सूफ़ का बेटा था।
2 उसके दो बीवियाँ थीं, एक का नाम हन्ना था और दूसरी का
फ़निन्ना, और फ़निन्ना के औलाद हुई लेकिन हन्ना बे औलाद थी।
3 यह शख़्स हर साल अपने शहर से शीलोह में रब्ब — उल
— अफ़्वाज के हुज़ूर सज्दा करने क़ुर्बानी पेश करने को जाता
था और एली के दोनों बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास जो ख़ुदावन्द के
काहिन थे वहीं रहते थे
4 और जिस दिन इल्क़ाना क़ुर्बानी अदा करता वह अपनी बीवी
फ़निन्ना को और उस के सब बेटे बेटियों को हिस्से देता था

5 लेकिन हन्ना को *दूना हिस्सा दिया करता था इसलिए कि
वह हन्ना को चाहता था लेकिन ख़ुदावन्द ने उसका रहम बंद कर
रख्खा था
6 और उसकी सौत उसे कुढ़ाने के लिए बे तरह छेड़ती थी क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रख्खा था
7 और चूँकि वह हर साल ऐसा ही करता था जब वह ख़ुदावन्द
के घर जाती इसलिए फ़निन्ना उसे छेड़ती थी चुनाँचे वह रोती
खाना न खाती थी
8 इसलिए उसके ख़ाविंद इल्क़ाना ने उससे कहा, "ऐ हन्ना तू
क्यूँ रोती है और क्यूँ नहीं खाती और तेरा दिल क्यूँ ग़मगीन है?
क्या मैं तेरे लिए दस बेटों से बढ़ कर नहीं?"

?????? ?? ?? ????? ?? ????? ???

9 और जब वह शीलोह में खा पी चुके तो हन्ना उठी; उस वक़्त
एली काहिन ख़ुदावन्द की हैकल की चौखट के पास कुर्सी पर बैठा
हुआ था
10 और वह निहायत दुखी थी, तब वह ख़ुदावन्द से दुआ करने
और ज़ार ज़ार रोने लगी
11 और उसने मिन्नत मानी और कहा, "ऐ रब्ब — उल —
अफ़वाज अगर तू अपनी लौंडी की मुसीबत पर नज़र करे और
मुझे याद फ़रमाए और अपनी लौंडी को फ़रामोश न करे और
अपनी लौंडी को फ़र्ज़न्द — ए — नरीना बख़्शे तो मैं उसे ज़िन्दगी
भर के लिए ख़ुदावन्द को सुपुर्द कर दूँगी और उस्तरा उसके सर
पर कभी न फिरेगा।"
12 और जब वह ख़ुदावन्द के सामने दु'आ कर रही थी, तो एली
उसके मुँह को ग़ौर से देख रहा था।
13 और हन्ना तो दिल ही दिल में कह रही थी सिर्फ़ उसके होंट
हिलते थे लेकिन उसकी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी तब एली को
गुमान हुआ कि वह नशे में है।

---

* **1:5** उसने बहुत प्यार किया, हालांकि उसने हन्ना से प्यार किया, मगर प्यार का एक हिस्सा ही दे पाएगा

14 इसलिए एली ने उस से कहा, कि तू कब तक नशे में रहेगी?
अपना नशा उतार।
15 हन्ना ने जवाब दिया "नहीं ऐ मेरे मालिक, मैं तो ग़मगीन
औरत हूँ — मैंने न तो मय न कोई नशा पिया लेकिन ख़ुदावन्द के
आगे अपना दिल उँडेला है।
16 तू अपनी लौंडी को †ख़बीस 'औरत न समझ, मैं तो अपनी
फ़िक्रों और दुखों के हुजूम के ज़रिए' अब तक बोलती रही।"
17 तब एली ने जवाब दिया, "तू सलामत जा और इस्राईल का
ख़ुदा तेरी मुराद जो तूने उससे माँगी है पूरी करे।"
18 उसने कहा, "तेरी ख़ादिमा पर तेरे करम की नज़र हो।" तब
वह 'औरत चली गई और खाना खाया और फिर उसका चेहरा
उदास न रहा।

[illegible]

19 और सुबह को वह सवेरे उठे और ख़ुदावन्द के आगे सज्दा
किया और रामा को अपने घर लोट गये। और इल्क़ाना ने अपनी
बीवी हन्ना से मुबाशरत की और ‡ख़ुदावन्द ने उसे याद किया।
20 और ऐसा हुआ कि वक़्त पर हन्ना हामिला हुई और उस के
बेटा हुआ और उस ने उसका नाम समुएल रख्खा क्यूँकि वह कहने
लगी, "मैंने उसे ख़ुदावन्द से माँग कर पाया है।"
21 और वह शख़्स इल्क़ाना अपने सारे घराने के साथ ख़ुदावन्द
के हुज़ूर सालाना क़ुर्बानी पेश करने और अपनी मिन्नत पूरी करने
को गया।
22 लेकिन हन्ना न गई क्यूँकि उसने अपने ख़ाविंद से कहा, जब
तक लड़के का दूध छुड़ाया न जाए मैं यहीं रहूँगी और तब उसे
लेकर जाऊँगी ताकि वह ख़ुदावन्द के सामने हाज़िर हो और फिर
हमेशा वहीं रहे

† **1:16** बलियालकी बेटी, इन हवालाजात को भी देखें: 2:12; 10:27 25:17; 30:22, इब्रानी में बलियाल की बेटी का मतलब है बदकार या शैतान, देखें 2 कुरिन्थि 6:15
‡ **1:19** ख़ुदा ने उसकी दुआ का जवाब दिया

23 और उस के ख़ाविन्द इल्क़ाना ने उससे कहा, जो तुझे अच्छा
लगे वह कर। जब तक तू उसका दूध न छुड़ाये ठहरी रह सिर्फ़
इतना हो कि ख़ुदावन्द अपनी बात को बरक़रार रख्खे इसलिए
वह 'औरत ठहरी रही और अपने बेटे को दूध छुड़ाने के वक़्त तक
पिलाती रही।
24 और जब उस ने उसका दूध छुड़ाया तो उसे अपने साथ लिया
और तीन बछड़े और एक एफ़ा आटा मय की एक मश्क अपने साथ
ले गई, और उस लड़के को शीलोह में ख़ुदावन्द के घर लाई, और
वह लड़का बहुत ही छोटा था
25 और उन्होंने एक बछड़े को ज़बह किया और लड़के को एली
के पास लाए:
26 और वह कहने लगी, "ऐ मेरे मालिक तेरी जान की क़सम
ऐ मेरे मालिक मैं वही 'औरत हूँ जिसने तेरे पास यहीं खड़ी होकर
ख़ुदावन्द से दुआ की थी।
27 मैंने इस लड़के के लिए दुआ की थी और ख़ुदावन्द ने मेरी
मुराद जो मैंने उससे माँगी पूरी की।
28 इसी लिए मैंने भी इसे ख़ुदावन्द को दे दिया; यह अपनी
ज़िन्दगी भर के लिए ख़ुदावन्द को दे दिया गया है" तब §उसने
वहाँ ख़ुदावन्द के आगे सिज्दा किया।

2

????? ?? ???????????? ?? ???

1 और हन्ना ने दुआ की और कहा, मेरा दिल ख़ुदावन्द मैं ख़ुश
है: मेरा *सींग ख़ुदावन्द के तुफ़ैल से ऊँचा हुआ। मेरा मुँह मेरे
दुश्मनों पर खुल गया है क्यूँकि मैं तेरी नजात से ख़ुश हूँ।
2 "ख़ुदावन्द की तरह कोई पाक नहीं क्यूँकि तेरे सिवा और कोई
है ही नहीं और न कोई चटटान है जो हमारे ख़ुदा की तरह हो

§ **1:28** उनहोंने * **2:1** ताक़त

3 इस क़दर ग़ुरूर से और बातें न करो और बड़ा बोल तुम्हारे
मुहँ से न निकले; क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा — ए — 'अलीम है, और
'आमाल का तोलने वाला है।
4 ताक़तवरों की कमाने टूट गईं और जो लड़खड़ाते थे वह
ताक़त से कमर बस्ता हुए।
5 वह जो आसूदा थे रोटी की ख़ातिर मज़दूर बनें और जो भूके
थे ऐसे न रहे, बल्कि जो बाँझ थी उस के साथ हुए, और जिसके
पास बहुत बच्चे हैं वह घुलती जाती है।
6 ख़ुदावन्द मारता है और जिलाता है; वही क़ब्र में उतारता और
उससे निकालता है।
7 ख़ुदावन्द ग़रीब कर देता और दौलतमंद बनाता है, वही पस्त
करता और बुलंद भी करता है।
8 वह ग़रीब को ख़ाक पर से उठाता, और कंगाल को घूरे में
से निकाल खड़ा करता है ताकि इनको शहज़ादों के साथ बिठाए,
और जलाल के तख़्त का वारिस बनाए; क्यूँकि ज़मीन के सुतून
ख़ुदावन्द के हैं उसने दुनिया को उन ही पर क़ाईम किया है।
9 वह अपने मुक़द्दसों के पाँव को संभाले रहेगा, लेकिन शरीर
अँधेरे में ख़ामोश किए जायेंगे क्यूँकि ताक़त ही से कोई फ़तह नहीं
पाएगा।
10 जो ख़ुदावन्द से झगड़ते हैं वह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएँगे;
वह उन के ख़िलाफ़ आस्मान में गरजेगा ख़ुदावन्द ज़मीन के
किनारों का इंसाफ करेगा, वह अपने बादशाह को ताक़त बख़्शेगा,
और अपने †मम्सूह के ‡सींग को बुलंद करेगा।”
11 तब इल्क़ाना रामा को अपने घर चला गया; और एली
काहिन के सामने वह लड़का ख़ुदावन्द की ख़िदमत करने लगा।

[illegible]

† **2:10** मम्सूहका मतलब है मसह किया हुआ ‡ **2:10** सींग ज़ोर या ताक़त को दिखाता है

12 और एली के बेटे बहुत §शरीर थे; उन्होंने ख़ुदावन्द को न
पहचाना।
13 और काहिनों का दस्तूर लोगों के साथ यह था, कि जब कोई
शख़्स क़ुर्बानी करता था तो काहिन का नोंकर गोश्त उबालने के
वक़त एक सहशाखा काँटा अपने हाथ मैं लिए हुए आता था;
14 और उसको कढ़ाह या दिग्चे या हांडे या हांड़ी में डालता
और जितना गोश्त उस काँटे में लग जाता उसे काहिन अपने आप
लेता था। यूँ ही वह शीलोह में सब इस्राईलियों से किया करते थे
जो वहाँ आते थे
15 बल्कि चर्बी जलाने से पहले काहिन का नोकर आ मौजूद
होता, और उस शख़्स से जो क़ुर्बानी पेश करता यह कहने लगता
था, "काहिन के लिए कबाब के वास्ते गोश्त दे, क्यूँकि वह तुझ से
उबला हुआ गोश्त नहीं बल्कि कच्चा लेगा।"
16 और अगर वह शख़्स यह कहता कि अभी वह चर्बी को ज़रूर
जलायेंगे तब जितना तेरा जी चाहे ले लेना "तो वह उसे जवाब
देता नहीं तू मुझे अभी दे नही तो मैं छीन कर ले जाऊँगा।"
17 इसलिए उन जवानों का गुनाह ख़ुदावन्द के सामने बहुत
बड़ा था क्यूँकि लोग ख़ुदावन्द की क़ुर्बानी से नफ़रत करने लगे
थे।
18 लेकिन समुएल जो लड़का था, कतान का अफ़ूद पहने हुए
ख़ुदावन्द के सामने ख़िदमत करता था।
19 और उस की माँ उस के लिए एक छोटा सा जुब्बा बनाकर
साल ब साल लाती जब वह अपने शौहर के साथ सालाना क़ुर्बानी
पेश करने आती थी।
20 और एली ने इल्क़ाना और उस की बीवी को दुआ दी और
कहा, "ख़ुदावन्द तुझको इस 'औरत से उस क़र्ज़ के बदले में जो
ख़ुदावन्द को दिया गया नसल दे।" फिर वह अपने घर गये।
21 और ख़ुदावन्द ने हन्ना पर नज़र की और वह हामिला हुई,

§ **2:12** बलियाल जैसे

और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुईं, और वह लड़का समुएल
ख़ुदावन्द के सामने बढ़ता गया।
22 एली बहुत बुड्ढा हो गया था, और उसने सब कुछ सुना कि
उसके बेटे सारे इस्राईल से क्या किया करते हैं और उन 'औरतों से
जो ख़ेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थी
हम आग़ोशी करते हैं।
23 और उस ने उन से कहा, तुम ऐसा क्यूँ करते हो? क्यूँकि मैं
तुम्हारी बदज़ातियाँ पूरी क़ौम से सुनता हूँ?
24 नहीं मेरे बेटों ये अच्छी बात नहीं जो मैं सुनता हूँ; तुम
ख़ुदावन्द के लोगों से नाफ़रमानी कराते हो।
25 अगर एक आदमी दूसरे का गुनाह करे तो *ख़ुदा उसका
इंसाफ करेगा लेकिन अगर आदमी ख़ुदावन्द का गुनाह करे तो
उस की शफ़ा'अत क़ौन करेगा? बावजूद इसके उन्होंने अपने बाप
का कहना न माना; क्यूँकि ख़ुदावन्द उनको मार डालना चाहता
था।
26 और वह लड़का समुएल बढ़ता गया और ख़ुदावन्द और
इंसान दोनों का मक़बूल था।

[illegible]

27 तब एक नबी एली के पास आया और उससे कहने लगा,
ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है क्या मैं तेरे आबाई ख़ानदान पर जब
वह मिस्र में फ़िर'औन के ख़ानदान की ग़ुलामी में था ज़ाहिर नहीं
हुआ?
28 और क्या मैंने उसे बनी इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन न
लिया, ताकि वह मेरा काहिन हो और मेरे मज़बह के पास जाकर
ख़ुशबू जलाये और मेरे सामने अफ़ूद पहने और क्या मैंने सब
क़ुर्बानियाँ जो बनी इस्राईल आग से अदा करते है तेरे बाप को
न दी?

* **2:25** इस को क़ाज़ी लोग पढ़ें, ख़ुदा

29 तब तुम क्यूँ मेरे उस क़ुर्बानी और हदिये को जिनका हुक्म
मैंने अपने घर में दिया लात मारते हो? और क्यूँ तू अपने बेटों की
मुझ से ज़्यादा 'इज़्ज़त करता है, ताकि तुम मेरी क़ौम इस्राईल के
अच्छे से अच्छे हदियों को खाकर मोटे बनो।
30 इसलिए ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैंने
तो कहा, था कि तेरा घराना और तेरे बाप का घराना हमेशा मेरे
सामने चलेगा लेकिन अब ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि यह बात अब
मुझ से दूर हो, क्यूँकि वह जो मेरी 'इज़्ज़त करते है मैं उन की
'इज़्ज़त करूँगा लेकिन वह जो मेरी हिक़ारत करते है बेक़द्र होंगे
31 देख वह दिन आते हैं कि मैं तेरा बाज़ू और तेरे बाप के घराने
का †बाज़ू काट डालूँगा, कि तेरे घर में कोई बुड्ढा होने न पाएगा।
32 और तू मेरे घर की मुसीबत देखेगा बावजूद उस सारी दौलत
के जो ख़ुदा इस्राईल को देगा और तेरे घर में कभी कोई बुड्ढा होने
न पाएगा
33 और तेरे जिस आदमी को मैं अपने मज़बह से काट नहीं
डालूँगा वह तेरी आँखों को घुलाने और तेरे दिल को दुख देने के
लिए रहेगा और तेरे घर की सब बढ़ती अपनी भरी जवानी में मर
मिटेगी।
34 और जो कुछ तेरे दोनों बेटों हुफ़्नी फ़ीन्हास पर नाज़िल
होगा वही तेरे लिए निशान ठहरेगा; वह दोनों एक ही दिन मर
जाएँगे।
35 और मैं अपने लिए एक वफ़ादार काहिन पैदा करूँगा जो
सब कुछ मेरी मर्ज़ी और मंशा के मुताबिक़ करेगा, और मैं उस के
लिए एक पायदार घर बनाऊँगा और वह हमेशा मेरे मम्सूह के
आगे आगे चलेगा
36 और ऐसा होगा की हर एक शख़्स जो तेरे घर में बच रहेगा,
एक टुकड़े चाँदी और रोटी के एक टुकड़े के लिए उस के सामने
आकर सिज्दा करेगा और कहेगा, कि कहानत का कोई काम मुझे

† **2:31** ताक़त

दीजिए ताकि मैं रोटी का निवाला खा सकूँ।

3

[illegible]

1 और वह लड़का समुएल एली के सामने ख़ुदावन्द की ख़िदमत
करता था, और उन दिनों ख़ुदावन्द का कलाम गिराँक़द्र था कोई
ख़्वाब ज़ाहिर न होता था।
2 और उस वक़्त ऐसा हुआ कि जब एली अपनी जगह लेटा था
उस की आँखें धुन्द्लाने लगी थी, और वह देख नहीं सकता था।
3 और ख़ुदा का चराग़ अब तक बुझा नहीं था और समुएल
ख़ुदावन्द की हैकल में जहाँ ख़ुदा का संदूक़ था लेटा हुआ था
4 तो ख़ुदावन्द ने समुएल को पुकारा; उसने कहा, "मैं हाज़िर
हूँ।"
5 और वह दौड़ कर एली के पास गया और कहा, तूने मुझे
पुकारा इसलिए में हाज़िर हूँ "उसने कहा, मैंने नहीं पुकारा फिर
लेट जा" इसलिए वह जाकर लेट गया।
6 और ख़ुदावन्द ने फिर पुकारा "समुएल।" समुएल उठ कर
एली के पास गया और कहा, "तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर
हूँ।" उसने कहा, "ऐ, मेरे बेटे मैंने नहीं पुकारा; फिर लेट जा।"
7 और समुएल ने अभी ख़ुदावन्द को नही पहचाना था और न
ख़ुदावन्द का कलाम उस पर ज़ाहिर हुआ था।
8 फिर ख़ुदावन्द ने तीसरी दफ़ा समुएल को पुकारा और वह
उठ कर एली के पास गया और कहा, तूने मुझे पुकारा इसलिए
में हाज़िर हूँ "तब एली जान गया कि ख़ुदावन्द ने उस लड़के को
पुकारा।
9 इसलिए एली ने समुएल से कहा, जा लेट रह और अगर वह
तुझे पुकारे तो तू कहना ऐ ख़ुदावन्द फ़रमा; क्यूँकि तेरा बन्दा
सुनता है।" तब समुएल जाकर अपनी जगह पर लेट गया

10 तब ख़ुदावन्द आ मौजूद हुआ, और पहले की तरह पुकारा
“समुएल! समुएल! समुएल ने कहा, फ़रमा, क्यूँकि तेरा बन्दा
सुनता है।”
11 ख़ुदावन्द ने समुएल से कहा, “देख मैं इस्राईल में ऐसा काम
करने पर हूँ जिस से हर सुनने वाले के कान भन्ना जाएँगे।
12 उस दिन मैं एली पर सब कुछ जो मैंने उस के घराने के हक़
में कहा है शुरू' से आख़िर तक पूरा करूँगा
13 क्यूँकि मैं उसे बता चुका हूँ कि मैं उस बदकारी की वजह से
जिसे वह जानता है हमेशा के लिए उसके घर का फ़ैसला करूँगा
क्यूँकि उसके *बेटों ने अपने ऊपर ला'नत बुलाई और उसने उनको
न रोका।
14 इसी लिए एली के घराने के बारे में मैंने क़सम खाई कि एली
के घराने की बदकारी न तो कभी किसी ज़बीहा से साफ़ होगी न
हदिये से।”

[illegible]

15 और समुएल सुबह तक लेटा रहा; तब उसने ख़ुदावन्द के
घर के दरवाज़े खोले और समुएल एली पर ख़्वाब ज़ाहिर करने से
डरा।
16 तब एली ने समुएल को बुलाकर कहा, ऐ मेरे बेटे समुएल
“उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।”
17 तब उसने पूछा वह “क्या बात है जो ख़ुदावन्द ने तुझ से
कही हैं? मैं तेरी मिन्नत करता हूँ उसे मुझ से पोशीदा न रख,
अगर तू कुछ भी उन बातों में से जो उसने तुझ से कहीं हैं छिपाए
तो ख़ुदा तुझ से ऐसा ही करे बल्कि उससे भी ज़्यादा।”
18 तब समुएल ने उसको पूरा हाल बताया और उससे कुछ न
छिपाया, उसने कहा, “वह ख़ुदावन्द है जो वह भला जाने वह
करे।”

---

* **3:13** उसके बेटों ने ख़ुदा के ख़िलाफ़ तकफीरकी (कुफ़रबकना)

19 और समुएल बड़ा होता गया और ख़ुदावन्द उसके साथ था
और उसने †उसकी बातों में से किसी को मिट्टी में मिलने न दिया।
20 और सब बनी इस्राईल ने दान से बैरसबा' तक जान लिया
कि समुएल ख़ुदावन्द का नबी मुक़र्रर हुआ।
21 और ख़ुदावन्द शीलोह में फिर ज़ाहिर हुआ, क्यूँकि ख़ुदावन्द
ने अपने आप को सैला में समुएल पर अपने कलाम के ज़रिए' से
ज़ाहिर किया।

4

1 और समुएल की बात सब इस्राईलीयों के पास पहुँची,

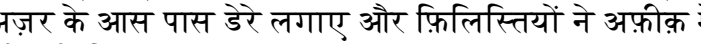

और इसराईली फ़िलिस्तियों से लड़ने को निकले और इबन-
'अज़र के आस पास डेरे लगाए और फ़िलिस्तियों ने अफ़ीक़ में
ख़ेमे खड़े किए।
2 और फ़िलिस्तियों ने इस्राईल के मुक़ाबिले के लिए सफ़
आराई की और जब वह इकट्ठा लड़ने लगे तो इस्राईलियों ने
फिलिस्तियों से शिकस्त खाई; और उन्होंने उनके लश्कर में से
जो मैदान में था क़रीबन चार हज़ार आदमी क़त्ल किए।
3 और जब लोग लश्कर गाह में फिर आए तो इस्राईल के
बुज़ुर्गों ने कहा, "कि आज ख़ुदावन्द ने हमको फ़िलिस्तियों के
सामने क्यूँ शिकस्त दी आओ हम ख़ुदावन्द के 'अहद का संदूक़
शीलोह से अपने पास ले आयें ताकि *वह हमारे बीच आकर
हमको हमारे दुशमनों से बचाए।"
4 तब उन्होंने शीलोह में लोग भेजे, और वह करुबियों के ऊपर
बैठने वाले रब्ब — उल — अफ़्वाज के 'अहद के संदूक़ को वहाँ
से ले आए और एली के दोनों बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास ख़ुदा के
'अहद का संदूक़ के साथ वहाँ हाज़िर थे।

---

† **3:19** उसकी को अपनी करें * **4:3** यह्वे

5 और जब ख़ुदावन्द के 'अहद का संदूक़ लश्कर गाह में आ
पहुँचा तो सब इस्राईली ऐसे ज़ोर से ललकारने लगे, कि ज़मीन
गूँज उठी।
6 और फ़िलिस्तियों ने जो ललकारने की आवाज़ सुनी तो वह
कहने लगे, कि इन “इब्रानियों की लश्कर गाह में इस बड़ी ललकार
के शोर के क्या मा'ना हैं?” फिर उनको मा'लूम हुआ कि ख़ुदावन्द
का संदूक़ लश्कर गाह में आया है।
7 तब फ़िलिस्ती डर गए क्यूँकि वह कहने लगे, कि ख़ुदा लश्कर
गाह में आया है और उन्होंने कहा, “कि हम पर बर्बादी है इस लिए
कि इस से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ।
8 हम पर बर्बादी है, ऐसे ज़बरदस्त मा'बूदों के हाथ से हमको
क़ौन बचाएगा? यह वहीं मा'बूद हैं जिन्होंने मिस्रियों को वीराने
में हर क़िस्म की बला से मारा।
9 ऐ फ़िलिस्तियों तुम मज़बूत हो और मर्दानगी करो ताकि तुम
'इब्रानियों के ग़ुलाम न बनो जैसे वह तुम्हारे बने बल्कि मर्दानगी
करो और लड़ो।”
10 और फ़िलिस्ती लड़े और बनी इस्राईल ने शिकस्त खाई और
हर एक अपने डेरे को भागा, और वहाँ बहुत बड़ी ख़ूँरेज़ी हुई क्यूँकि
तीस हज़ार इस्राईली पियादे वहाँ मारे गए।
11 और ख़ुदावन्द का संदूक़ छिन गया, और 'एली के दोनों बेटे
हुफ़्नी और फ़ीन्हास मारे गये।

[illegible]

12 और बिनयमीन का एक आदमी लश्कर में से दौड़ कर अपने
कपड़े फाड़े और सर पर ख़ाक डाले हुए उसी दिन शीलोह में आ
पहुँचा।
13 और जब वह पहुँचा तो एली रास्ते के किनारे कुर्सी पर बैठा
इंतिज़ार कर रहा था क्यूँकि उसका दिल ख़ुदा के संदूक़ के लिए

काँप रहा था और जब उस शख़्स ने शहर में आकर हाल सुनाया,
तो सारा शहर चिल्ला उठा।
14 और एली ने चिल्लाने की आवाज़ सुनकर कहा, इस हुल्लड़
की आवाज़ के क्या मा'ने हैं "और उस आदमी ने जल्दी की और
आकर एली को हाल सुनाया।
15 और एली अठानवे साल का था और उसकी आँखें रह गई
थीं और उसे कुछ नहीं सूझता था।
16 तब उस शख़्स ने एली से कहा, मैं फ़ौज में से आता हूँ और
मैं आज ही फ़ौज के बीच से भागा हूँ, उसने कहा, ऐ मेरे बेटे क्या
हाल रहा?"
17 उस ख़बर लाने वाले ने जवाब दिया "इस्राईली फ़िलिस्तियों
के आगे से भागे और लोगों में भी बड़ी ख़ूँरेज़ी हुई और तेरे दोनों
बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास भी मर गये और ख़ुदा का संदूक़ छिन
गया।"
18 जब उसने ख़ुदा के संदूक़ का ज़िक्र किया तो वह कुर्सी पर
से पछाड़ खाकर फाटक के किनारे गिरा, और उसकी गर्दन टूट
गई और वह मर गया क्यूँकि वह बुड्ढा और भारी आदमी था, वह
चालीस बरस बनी इस्राईल का क़ाज़ी रहा।
19 और उसकी बहू, फ़ीन्हास की बीवी हमल से थी, और उसके
जनने का वक़्त नज़दीक था और जब उसने यह ख़बरें सुनीं कि
ख़ुदा का संदूक़ छिन गया और उसका ससुर और शौहर मर गये
तो वह झुक कर जनी क्यूँकि दर्द ऐ ज़िह उसके लग गया था।
20 और उसने उसके मरते वक़्त उन 'औरतों ने जो उस के पास
खड़ी थीं उसे कहा, "मत डर क्यूँकि तेरे बेटा हुआ है।" लेकिन
उसने न जवाब दिया और न कुछ तवज्जुह की।
21 और उसने उस लड़के का नाम यकबोद रख्खा और कहने
लगी, "कि हशमत इस्राईल से जाती रही।" इसलिए कि ख़ुदा का
संदूक़ छिन गया था, और उसका ससुर और शौहर जाते रहे थे।

22 इसलिए उसने कहा, “हशमत इस्राईल से जाती रही, क्यूँकि
ख़ुदा का संदूक़ छिन गया है।”

5

[illegible]

1 और फ़िलिस्तियों ने ख़ुदा का संदूक़ छीन लिया और वह उसे
इबन-'अज़र से अशदुद को ले गए;
2 और फ़िलिस्ती ख़ुदा के संदूक़ को लेकर उसे दजोन के घर में
लाए और *दजोन के पास उसे रख्खा;
3 और अशदूदी जब सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन
ख़ुदावन्द के संदूक़ के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है।
तब उन्होंने दजोन को लेकर उसी की जगह उसे फिर खड़ा कर
दिया।
4 फिर वह जो दूसरे दिन की सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि
दजोन ख़ुदावन्द के संदूक़ के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा
है, और दजोन का सर और उसकी हथेलियाँ दहलीज़ पर कटी पड़ी
थीं, सिर्फ़ दजोन का धड़ ही धड़ रह गया था;
5 तब दजोन के पुजारी और जितने दजोन के घर में आते हैं,
आज तक अश्दूद में दजोन की दहलीज़ पर पाँव नहीं रखते।
6 तब ख़ुदावन्द का हाथ अशदूदियों पर भारी हुआ, और वह
उनको हलाक करने लगा, और अशदूद और उसकी 'इलाक़े के
लोगों को गिल्टियों से मारा।
7 और अशदूदियों ने जब यह हाल देखा तो कहने लगे, “कि
इस्राईल के ख़ुदा का संदूक़ हमारे साथ न रहे, क्यूँकि उसका हाथ
बुरी तरह हम पर और हमारे मा'बूद दजोन पर है।”
8 तब उन्होंने फ़िलिस्तियों के सब सरदारों को बुलवा कर अपने
यहाँ जमा' किया और कहने लगे, “हम इस्राईल के ख़ुदा के संदूक़
को क्या करें?” उन्होंने जवाब दिया, “कि इस्राईल के ख़ुदा का

* **5:2** मंदिर

संदूक़ जात को पहुँचाया जाए।” इसलिए वह इस्राईल के ख़ुदा के
संदूक़ को वहाँ ले गए।
9 और जब वह उसे ले गए तो ऐसा हुआ कि ख़ुदावन्द का हाथ
उस शहर के ख़िलाफ़ ऐसा उठा कि उस में बड़ी भारी हल चल मच
गई; और उसने उस शहर के लोगों को छोटे से बड़े तक मारा और
उनके गिल्टियाँ निकलने लगीं।
10 जब उन्होंने ख़ुदा का संदूक़ 'अक़्रून को भेज दिया। और जैसे
ही ख़ुदा का संदूक़ अक़रून को पहुँचा, अक़्रूनी चिल्लाने लगे, “वह
इस्राईल के ख़ुदा का संदूक़ हम में इसलिए लाए हैं, कि हमको और
हमारे लोगों को मरवा डालें।”
11 तब उन्होंने फ़िलिस्तियों के सरदारों को बुलवा कर जमा'
किया और कहने लगे, “कि इस्राईल के ख़ुदा के संदूक़ को रवाना
कर दो कि वह फिर अपनी जगह पर जाए, और हमको और हमारे
लोगों को मार डालने न पाए।” क्यूँकि वहाँ सारे शहर में मौत की
हलचल मच गई थी, †और ख़ुदा का हाथ वहाँ बहुत भारी हुआ।
12 और जो लोग मरे नहीं वह गिल्टियों के मारे पड़े रहे, और
शहर की फ़रियाद आसमान तक पहुँची।

6

[illegible]

1 इसलिए ख़ुदावन्द का संदूक़ सात महीने तक फ़िलिस्तियों के
मुल्क में रहा।
2 तब फ़िलिस्तियों ने काहिनों और नजूमियों को बुलवाया और
कहा, “कि हम ख़ुदावन्द के इस संदूक़ को क्या करें? हमको बताओ
कि हम क्या साथ कर के उसे उसकी जगह भेजें?”
3 उन्होंने कहा, “कि अगर तुम इस्राईल के ख़ुदा के संदूक़ को
वापस भेजते हो, तो उसे ख़ाली न भेजना बल्कि जुर्म की क़ुर्बानी

† **5:11** ख़ुदा उनको सख़्ती से सज़ा दे रहा था

उसके लिए ज़रूर ही साथ करना तब तुम शिफ़ा पाओगे और
तुमको मा'लूम हो जाएगा कि वह तुम से किस लिए अलग नहीं
होता।"
4 उन्होंने पूछा कि वह जुर्म की क़ुर्बानी जो हम उसको दें क्या
हो उन्होंने जवाब दिया, "कि फ़िलिस्ती सरदारों के शुमार के
मुताबिक़ सोने की पाँच गिल्टियाँ और सोने ही की पाँच चुहियाँ
क्यूँकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही दुख में मुब्तिला
हुए।
5 इसलिए तुम अपनी गिल्टियों की मूरतें और उन चूहियों की
मूरतें, जो मुल्क को ख़राब करतीं हैं बनाओ और इस्राईल के ख़ुदा
की बड़ाई करो; शायद यूँ वह तुम पर से और तुम्हारे मा'बूदों पर
से और तुम्हारे मुल्क पर से अपना हाथ हल्का कर ले।
6 तुम क्यूँ अपने दिल को सख़्त करते हो, जैसे मिस्रियों ने और
फ़िर'औन ने अपने दिल को सख़्त किया? जब उसने उनके बीच
'अजीब काम किए, तो क्या उन्होंने लोगों को जाने न दिया और
क्या वह चले न गये?
7 अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और दो दूध वाली गायों को
जिनके जुआ न लगा हो लो, और उन गायों को गाड़ी में जोतो
और उनके बच्चों को घर लौटा लाओ।
8 और ख़ुदावन्द का संदूक़ लेकर उस गाड़ी पर रख्खो, और सोने
की चीज़ों को जिनको तुम जुर्म की क़ुर्बानी के तौर पर साथ करोगे
एक सन्दूक्चे में करके उसके पहलू में रख दो और उसे रवाना न
कर दो कि चला जाए।
9 और देखते रहना, अगर वह अपनी ही सरहद के रास्ते बैत
शम्स को जाए, तो उसी ने हम पर यह बलाए 'अज़ीम भेजीं और
अगर नहीं तो हम जान लेंगे कि उसका हाथ हम पर नहीं चला,
बल्कि यह हादसा जो हम पर हुआ इत्तिफ़ाक़ी था।"
10 तब उन लोगों ने ऐसा ही किया, और दो दूध वाली गायें
लेकर उनको गाड़ी में जोता और उनके बच्चों को घर में बन्द कर

दिया।
11 और ख़ुदावन्द के सन्दूक़ और सोने की चुहियों और अपनी
गिल्टियों की मूरतों के संदूक्चे को गाड़ी पर रख दिया।
12 उन गायों ने बैत शम्स का सीधा रास्ता लिया, वह सड़क
ही सड़क डकारती गईं, और दहने या बाएँ हाथ न मुड़ीं, और
फ़िलिस्ती सरदार उनके पीछे — पीछे बैत शम्स की सरहद तक
गये।
13 और बैत शम्स के लोग वादी में गेहूं की फ़सल काट रहे थे।
उनहों ने जो आँख उठाई तो संदूक़ को देखा, और देखते ही ख़ुश
हो गए।
14 और गाड़ी बैत शम्सी यशौ के खेत में आकर वहाँ खड़ी हो
गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था। तब उनहोंने गाड़ी की लकड़ियों
को चीरा और गायों को सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के
सामने पेश किया।
15 और लावियों ने ख़ुदावन्द के संदूक़ को और उस संदूक्चे को
जो उसके साथ था, जिसमें सोने की चीजें थीं, नीचे उतारा और
उनको उस बड़े पत्थर पर रख्खा। और बैत शम्स के लोगों ने उसी
दिन ख़ुदावन्द के लिए सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं और ज़बीहे
पेश किए।
16 जब उन पाँचों फ़िलिस्ती सरदारों ने यह देख लिया तो वह
उसी दिन अक़रून को लौट गए।
17 सोने की गिल्टियाँ जो फ़िलिस्तियों ने जुर्म की क़ुर्बानी के
तौर पर ख़ुदावन्द को पेश कीं वह यह हैं, एक अशदूद की तरफ़ से,
एक ग़ज़्ज़ा की तरफ़ से, एक अस्क़लोन की तरफ़ से, एक जात की
तरफ़ से, और एक अक़रून की तरफ़ से।
18 और वह सोने की चुहियाँ फ़िलिस्तियों के उन पाँचो सरदारों
के शहरों के शुमार के मुताबिक़ थीं, जो फ़सीलदार शहरों और
दिहात के मालिक उस बड़े पत्थर तक थे जिस पर उन्होंने
ख़ुदावन्द के संदूक़ को रख्खा था जो आज के दिन तक बैत शम्सी

यशौ के खेत में मौजूद है।

[illegible]

19 और उसने बैत शम्स के लोगों को मारा इस लिए कि उन्होंने
ख़ुदावन्द के संदूक़ के अंदर झाँका था तब उसने उनके *पचास
हज़ार और सत्तर आदमी मार डाले, और वहाँ के लोगों ने मातम
किया, इसलिए कि ख़ुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी वबा से मारा।
20 तब बैत शम्स के लोग कहने लगे, "कि किसकी मजाल है
कि इस ख़ुदावन्द ख़ुदा — ए — क़ुद्दूस के आगे खड़ा हो? और वह
हमारे पास से किस की तरफ़ जाए?"
21 और उन्होंने क़रयत या'रीम के बाशिंदों के पास क़ासिद भेजे
और कहला भेजा, कि फ़िलिस्ती ख़ुदावन्द के संदूक़ को वापस ले
आए हैं इसलिये तुम आओ और उसे अपने यहाँ ले जाओ।

7

1 तब क़रयत या'रीम के लोग आए और ख़ुदावन्द के संदूक़ को
लेकर अबीनदाब के घर में जो टीले पर है, लाए, और उसके बेटे
एलियाज़र को पाक किया कि वह ख़ुदावन्द के संदूक़ की निगरानी
करे।
2 और जिस दिन से संदूक़ क़रयत या'रीम में रहा, तब से एक
मुद्दत हो गई, या'नी बीस बरस गुज़रे और इस्राईल का सारा
घराना ख़ुदावन्द के पीछे नौहा करता रहा।

[illegible]

3 और समुएल ने इस्राईल के सारे घराने से कहा कि "अगर तुम
अपने सारे दिल से ख़ुदावन्द की तरफ़ फिरते हो तो ग़ैर मा'बूदों
और '*इस्तारात को अपने बीच से दूर करो और ख़ुदावन्द के लिए
अपने दिलों को मुसत'इद करके सिर्फ़ उसकी इबादत करो, और
वह फ़िलिस्तियों के हाथ से तुमको रिहाई देगा।"

* **6:19** कुछ इब्रानी तूमार कहते हैं 70
* **7:3** देवियों की मूर्तियाँ को

4 तब बनी इस्राईल ने बा'लीम और 'इस्तारात को दूर किया,
और सिर्फ़ ख़ुदावन्द की इबादत करने लगे।
5 फिर समुएल ने कहा कि "सब इस्राईल को मिस्फ़ाह में जमा'
करो, और मैं तुम्हारे लिए ख़ुदावन्द से दुआ करूंगा।"
6 तब वह सब मिस्फ़ाह में इकट्ठा हुए और पानी भर कर
ख़ुदावन्द के आगे उँडेला, और उस दिन रोज़ा रख्खा और वहाँ
कहने लगे, कि "हमने ख़ुदावन्द का गुनाह किया है।" और समुएल
मिस्फ़ाह में बनी इस्राईल की 'अदालत करता था।
7 और जब फ़िलिस्तियों ने सुना कि बनी इस्राईल मिस्फ़ाह में
इकट्ठे हुए हैं, तो उनके सरदारों ने बनी इस्राईल पर हमला किया,
और जब बनी — इस्राईल ने यह सुना तो वह फ़िलिस्तियों से
डरे।
8 और बनी — इस्राईल ने समुएल से कहा, "ख़ुदावन्द हमारे
ख़ुदा के सामने हमारे लिए फ़रियाद करना न छोड़, ताकि वह
हमको फ़िलिस्तियों के हाथ से बचाए।"
9 और समुएल ने एक दूध पीता बर्रा लिया और उसे पूरी
सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर ख़ुदावन्द के सामने पेश किया, और
समुएल बनी — इस्राईल के लिए ख़ुदावन्द के सामने फ़रियाद
करता रहा और ख़ुदावन्द ने उस की सुनी।
10 और जिस वक़्त समुएल उस सोख़्तनी क़ुर्बानी को अदा कर
रहा था उस वक़्त फ़िलिस्ती इस्राईलियों से जंग करने को नज़दीक
आए, लेकिन ख़ुदावन्द फ़िलिस्तियों के उपर उसी दिन बड़ी कड़क
के साथ गरजा और उनको घबरा दिया; और उन्होंने इस्रालियों के
आगे शिकस्त खाई।
11 और इस्राईल के लोगों ने मिस्फ़ाह से निकल कर
फ़िलिस्तियों को दौड़ाया, और बैतकर के नीचे तक उन्हें मारते
चले गए।
12 तब समुएल ने एक पत्थर ले कर उसे मिस्फ़ाह और †शेन

† **7:12** जेशनाह

के बीच में खड़ा किया, और उसका नाम इबन-'अज़र यह कहकर
रख्खा, “कि यहाँ तक ख़ुदावन्द ने हमारी मदद की।”
13 इस लिए फ़िलिस्ती मग़लूब हुए और इस्राईल की सरहद
में फिर न आए, और समुएल की ज़िन्दगी भर ख़ुदावन्द का हाथ
फ़िलिस्तियों के ख़िलाफ़ रहा।
14 और अक़रून से जात तक के शहर जिनको फ़िलिस्तियों ने
इस्राईलियों से ले लिया था, वह फिर इस्रालियों के क़ब्ज़े में आए;
और इस्राईलियों ने उनकी 'इलाक़ा भी फ़िलिस्तियों के हाथ से
छुड़ा लिया और इस्राईलियों और अमोरियों में सुलह थी।
15 और समुएल अपनी ज़िन्दगी भर इस्राईलियों की 'अदालत
करता रहा।
16 और वह हर साल बैतएल और जिल्जाल और मिस्फ़ाह
में दौरा करता, और उन सब मक़ामों में बनी — इस्राईल की
'अदालत करता था।
17 फिर वह रामा को लौट आता क्यूँकि वहाँ उसका घर था, और
वहाँ इस्राईल की 'अदालत करता था, और वहीं उसने ख़ुदावन्द
के लिए एक मज़बह बनाया।

8

[illegible]

1 जब समुएल बुड्ढा हो गया, तो उसने अपने बेटों को
इस्राईलियों के क़ाज़ी ठहराया।
2 उसके पहलौठे का नाम यूएल, और उसके दूसरे बेटे का नाम
अबियाह था। वह दोनों बैरसबा' के क़ाज़ी थे।
3 लेकिन उसके बेटे उसकी रास्ते पर न चले, बल्कि वह नफ़ा'
के लालच से रिश्वत लेते और इन्साफ़ का ख़ून कर देते थे।
4 तब सब इस्राईली बुज़ुर्ग जमा' होकर रामा में समुएल के पास
आए।

5 और उससे कहने लगे "देख, तू ज़ईफ़ है, और तेरे बेटे तेरी
राह पर नही चलते; अब तो किसी को हमारा बादशाह मुक़र्रर
करदे, जो और क़ौमों की तरह हमारी 'अदालत करे।"
6 लेकिन जब उन्होंने कहा, कि हमको कोई बादशाह दे जो
हमारी 'अदालत करे, तो यह बात समुएल को बुरी लगी, और
समुएल ने ख़ुदावन्द से दुआ की।
7 और ख़ुदावन्द ने समुएल से कहा, कि "जो कुछ यह लोग
तुझ से कहते हैं, तू उसको मान क्यूँकि उन्होंने तेरी नहीं बल्कि
मेरी हिक़ारत की है कि मैं उनका बादशाह न रहूँ।
8 जैसे काम वह उस दिन से जब से में उनको मिस्र से निकाल
लाया आज तक करते आए हैं, कि मुझे छोड़ करके और मा'बूदों
की इबादत करते रहे हैं, वैसा ही वह तुझ से करते हैं।
9 इसलिए तू उसकी बात मान, तो भी तू संजीदगी से उनको
ख़ूब जता दे और उनको बता भी दे, कि जो बादशाह उनपर हुकूमत
करेगा उसका तरीक़ा कैसा होगा।"

[illegible]

10 और समुएल ने उन लोगों को जो उससे बादशाह के तालिब
थे, ख़ुदावन्द की सब बातें कह सुनाईं।
11 और उसने कहा, कि जो बादशाह तुम पर हुकूमत करेगा
उसका तरीक़ा यह होगा, कि वह तुम्हारे बेटों को लेकर अपने रथों
के लिए और अपने रिसाले में नौकर रख्खेगा और वह उसके रथों
के आगे आगे दौड़ेंगे।
12 और वह उनको हज़ार — हज़ार के सरदार और पचास —
पचास के जमा'दार बनाएगा और कुछ से हल जुतवायेगा और
फ़सल कटवाएगा और अपने लिए जंग के हथियार और अपने
रथों के साज़ बनवाएगा।
13 और तुम्हारी बेटियों को लेकर गंधिन और बावरचिन और
नानबज़ बनाएगा।

14 और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों को
जो अच्छे से अच्छे होंगे लेकर अपने ख़िदमत गारों को 'अता
करेगा,
15 और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों का दसवाँ हिस्सा लेकर
अपने ख़ोजों और ख़ादिमों को देगा।
16 और तुम्हारे नौकर चाकरों और लौंडियों और तुम्हारे
ख़ूबसूरत *जवानों और तुम्हारे गदहों को लेकर अपने काम पर
लगाएगा।
17 और वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवाँ हिस्सा लेगा
इस लिए तुम उसके ग़ुलाम बन जाओगे।
18 और तुम उस दिन उस बादशाह की वजह से जिसे तुमने
अपने लिए चुना होगा, फ़रियाद करोगे पर उस दिन ख़ुदावन्द
तुम को जवाब न देगा।
19 तो भी लोगों ने समुएल की बात न सुनी और कहने लगे,
“नहीं हम तो बादशाह चाहते हैं जो हमारे ऊपर हो।
20 ताकि हम भी और सब क़ौमों की तरह हों और हमारा
बादशाह हमारी 'अदालत करे, और हमारे आगे आगे चले और
हमारी तरफ़ से लड़ाई करे।”
21 और समुएल ने लोगों की सब बातें सुनीं और उनको
ख़ुदावन्द के कानों तक पहुँचाया।
22 और ख़ुदावन्द ने समुएल को फ़रमाया तू उनकी बात मान
और उनके लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर तब समुएल ने इस्राईल
के लोगों से कहा कि तुम सब अपने अपने शहर को चले जाओ।

9

[illegible]

---

* **8:16** मवेशी

1 और बिनयमीन के क़बीले का एक शख़्स था जिसका नाम
क़ीस, बिन अबीएल, बिन सरोर, बिन बकोरत, बिन अफ़ीख़ था
वह एक बिनयमीनी का बेटा और ज़बरदस्त सूरमा था।
2 उसका एक जवान और ख़ूबसूरत बेटा था जिसका नाम
साऊल था, और बनी — इस्राईल के बीच उससे ख़ूबसूरत कोई
शख़्स न था। वह ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते
थे।
3 और साऊल के बाप क़ीस के गधे खो गए, इसलिए क़ीस ने
अपने बेटे साऊल से कहा, "कि नौकरों में से एक को अपने साथ
ले और उठ कर गधों को ढूँड ला।"
4 इसलिए वह इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क और सलीसा की सर
ज़मीन से होकर गुज़रा, लेकिन वह उनको न मिले। तब वह
सा'लीम की सर ज़मीन में गए और वह वहाँ भी न थे, फिर वह
बिनयमीनी के मुल्क में आए लेकिन उनको वहाँ भी न पाया।
5 जब वह सूफ़ के मुल्क में पहुँचे तो साऊल अपने नौकर से जो
उसके साथ था कहने लगा, "आ हम लौट जाएँ, ऐसा न हो कि
मेरा बाप गधों की फ़िक्र छोड़ कर हमारी फ़िक्र करने लगे।"
6 उसने उससे कहा, "देख इस शहर में खुदा एक नबी है जिसकी
बड़ी 'इज़्ज़त होती है, जो कुछ वह कहता है, वह सब ज़रूर ही
पूरा होता है। इसलिए हम उधर चलें, शायद वह हमको बता दे
कि हम किधर जाएँ।"
7 साऊल ने अपने नौकर से कहा, "लेकिन देख अगर हम वहाँ
चलें तो उस शख़्स के लिए क्या लेते जाएँ? रोटियाँ तो हमारे
तोशेदान की हो चुकीं और कोई चीज़ हमारे पास है नहीं, जिसे
हम उस नबी को पेश करें हमारे पास है किया?"
8 नौकर ने साऊल को जवाब दिया, "देख, *पाव मिस्क़ाल
चाँदी मेरे पास है, उसी को मैं उस नबी को दूँगा ताकि वह हमको

* **9:8** 3 ग्राम का चांदी का एक छोटा सिक्का

रास्ता बता दे।"

9 अगले ज़माने में इस्राईलियों में जब कोई शख़्स ख़ुदा से
मशवरा करने जाता तो यह कहता था, कि आओ, हम ग़ैबबीन के
पास चलें, क्यूँकि जिसको अब नबी कहतें हैं, उसको पहले ग़ैबबीन
कहते थे।

10 तब साऊल ने अपने नौकर से कहा, तू ने क्या ख़ूब कहा, आ
हम चलें इस लिए वह उस शहर को जहाँ वह नबी था चले।

11 और उस शहर की तरफ़ टीले पर चढ़ते हुए, उनको कई
जवान लड़कियाँ मिलीं जो पानी भरने जाती थीं; उन्होंने उन से
पूछा, "क्या ग़ैबबीन यहाँ है?"

12 उन्होंने उनको जवाब दिया, "हाँ है, देखो वह तुम्हारे सामने
ही है, इसलिए जल्दी करो क्यूँकि वह आज ही शहर में आया
है, इसलिए कि आज के दिन ऊँचे मक़ाम में लोगों की तरफ़ से
क़ुर्बानी होती है।

13 जैसे ही तुम शहर में दाख़िल होगे, वह तुमको पहले उससे
कि वह ऊँचे मक़ाम में खाना खाने जाए मिलेगा, क्यूँकि जब तक
वह न पहुँचे लोग खाना नहीं खायेंगे, इसलिए कि वह क़ुर्बानी को
बरकत देता है, उसके बाद मेहमान खाते हैं, इसलिए अब तुम चढ़
जाओ, क्यूँकि इस वक़्त वह तुमको मिल जाएगा।"

14 इसलिए वह शहर को चले और शहर में दाख़िल होते ही
देखा कि समुएल उनके सामने आ रहा है कि वह ऊँचे मक़ाम को
जाए।

15 और ख़ुदावन्द ने साऊल के आने से एक दिन पहले समुएल
पर ज़ाहिर कर दिया था कि

16 कल इसी वक़्त मैं एक शख़्स को बिन यमीन के मुल्क से तेरे
पास भेजूँगा, तू उसे मसह करना ताकि वह मेरी क़ौम इस्राईल
का सरदार हो, और वह मेरे लोगों को फ़िलिस्तियों के हाथ से
बचाएगा, क्यूँकि मैंने अपने लोगों पर नज़र की है, इसलिए कि

उनकी फ़रियाद मेरे पास पहुँची है।

17 इसलिए जब समुएल साऊल से मिला, तो ख़ुदावन्द ने
उससे कहा, "देख यही वह शख़्स है जिसका ज़िक्र मैंने तुझ से
किया था, यही मेरे लोगों पर हुकूमत करेगा।"

18 फिर साऊल ने फाटक पर समुएल के नज़दीक जाकर उससे
कहा, "कि मुझको ज़रा बता दे कि ग़ैबबीन का घर कहा, है?"

19 समुएल ने साऊल को जवाब दिया कि वह ग़ैबबीन मैं ही हूँ;
मेरे आगे आगे ऊँचे मक़ाम को जा, क्यूँकि तुम आज के दिन मेरे
साथ खाना खाओगे और सुबह को मैं तुझे रुख़्सत करूँगा, और
जो कुछ तेरे दिल में है सब तुझे बता दूँगा।

20 और तेरे गधे जिनको खोए हुए तीन दिन हुए, उनका ख़्याल
मत कर, क्यूँकि वह मिल गए और इस्राईलियों में जो कुछ
दिलकश हैं वह किसके लिए हैं, क्या वह तेरे और तेरे बाप के सारे
घराने के लिए नहीं?

21 साऊल ने जवाब दिया "क्या मैं बिन यमीनी, या'नी इस्राईल
के सब से छोटे क़बीले का नहीं? और क्या मेरा घराना बिन यमीन
के क़बीले के सब घरानों में सब से छोटा नहीं? इस लिए तू मुझ
से ऐसी बातें क्यूँ कहता है?"

22 और समुएल साऊल और उसके नौकर को मेहमानख़ाने में
लाया, और उनको मेहमानों के बीच जो कोई तीस आदमी थे सद्र
जगह में बिठाया।

23 और समुएल ने बावर्ची से कहा "कि वह टुकड़ा जो मैंने तुझे
दिया, जिसके बारे में तुझ से कहा, था कि उसे अपने पास रख
छोड़ना, लेआ।"

24 बावर्ची ने वह रान म'अ उसके जो उसपर था, उठा कर
साऊल के सामने रख दी, तब समुएल ने कहा, यह देख जो रख
लिया गया था, उसे अपने सामने रख कर खा ले क्यूँकि वह इसी
मु'अय्यन वक़्त के लिए, तेरे लिए रख्खी रही क्यूँकि मैंने कहा कि

मैंने इन लोगों की दा'वत की है "इस लिए साऊल ने उस दिन
समुएल के साथ खाना खाया।
25 और जब वह ऊँचे मक़ाम से उतर कर शहर में आए तो †उसने
साऊल से उस के घर की छत पर बातें कीं
26 और वह सवेरे उठे, और ऐसा हुआ, कि जब दिन चढ़ने लगा,
तो समुएल ने साऊल को फिर घर की छत पर बुलाकर उससे कहा,
उठ कि मैं तुझे रुख़्सत करूँ।" इस लिए साऊल उठा, और वह और
समुएल दोनों बाहर निकल गए।
27 और शहर के सिरे के उतार पर चलते चलते समुएल ने
साऊल से कहा कि अपने नौकर को हुक्म कर कि वह हम से आगे
बढ़े, इसलिए वह आगे बढ़, गया, लेकिन तू अभी ठहरा रह ताकि
मैं तुझे ख़ुदा की बात सुनाऊँ।

10

[illegible]

1 फिर समुएल ने तेल की कुप्पी ली और उसके सर पर उँडेली
और उसे चूमा और कहा, कि क्या यही बात नहीं कि ख़ुदावन्द ने
तुझे मसह किया, ताकि तू उसकी *मीरास का रहनुमा हो?
2 जब तू आज मेरे पास से चला जाएगा, तो ज़िल्ज़ह में जो
बिनयमीन की सरहद में है, राख़िल की क़ब्र के पास दो शख़्स तुझे
मिलेंगे, और वह तुझ से कहेंगे, कि वह गधे जिनको तू ढूंडने गया
था मिल गए; और देख अब तेरा बाप गधों की तरफ़ से बेफ़िक्र
होकर तुम्हारे लिए फ़िक्र मंद है, और कहता है, कि मैं अपने बेटे
के लिए क्या करूँ?
3 फिर वहाँ से आगे बढ़ कर जब तू तबूर के बलूत के पास
पहुँचेगा, तो वहाँ तीन शख़्स जो बैतएल को ख़ुदा के पास जाते

† **9:25** समुएल ने शाऊल को घर के छत पर लेगाया औरवहां उस के लिए एक बिछोना तय्यार किया * **10:1** उसके इस्राईली लोगों के ऊपर

होंगे तुझे मिलेंगे, एक तो बकरी के तीन बच्चे, दूसरा रोटी के तीन
टुकड़े, और तीसरा मय का एक मश्कीज़ा लिए जाता होगा।
4 और वह तुझे सलाम करेंगे, और रोटी के दो टुकड़े तुझे देंगे,
तू उनको उनके हाथ से ले लेना।
5 और बाद उसके तू ख़ुदा के पहाड़ को पहुँचेगा, जहाँ
फ़िलिस्तियों की चौकी है, और जब तू वहाँ शहर में दाख़िल होगा
तो नबियों की एक जमा'अत जो ऊँचे मक़ाम से उतरती होगी,
तुझे मिलेगी, और उनके आगे सितार और दफ़ और बाँसुली और
बरबत होंगे और वह नबुव्वत करते होंगे।
6 तब ख़ुदावन्द की रूह तुझ पर ज़ोर से नाज़िल होगी, और तू
उनके साथ नबुव्वत करने लगेगा, और बदल कर और ही आदमी
हो जाएगा।
7 इसलिए जब यह निशान तेरे आगे आएँ, तो फिर जैसा मौक़ा
हो वैसा ही काम करना क्यूँकि ख़ुदा तेरे साथ है।
8 और तु मुझ से पहले जिल्जाल को जाना; और देख में तेरे पास
आऊँगा ताकि सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ करूँ और सलामती के ज़बीहों
को ज़बह करूँ। तू सात दिन तक वहीं रहना जब तक मैं तेरे पास
आकर तुझे बता न दूँ कि तुझको क्या करना होगा।

[illegible]

9 और ऐसा हुआ कि जैसे ही उसने समुएल से रुख़्सत होकर
पीठ फेरी, ख़ुदा ने उसे दूसरी तरह का दिल दिया और वह सब
निशान उसी दिन वजूद में आए।
10 और जब वह उधर उस पहाड़ के पास आए तो नबियों की
एक जमा'अत उसको मिली, और ख़ुदा की रूह उस पर ज़ोर से
नाज़िल हुई, और वह भी उनके बीच नबुव्वत करने लगा।
11 और ऐसा हुआ कि जब उसके अगले जान पहचानों ने यह
देखा कि वह नबियों के बीच नबुव्वत कर रहा है तो वह एक दूसरे

से कहने लगे, "क़ीस के बेटे को क्या हो गया? क्या साऊल भी
नबियों में शामिल है?"
12 और वहाँ के एक आदमी ने जवाब दिया, कि भला उनका बाप
कौन है? "तब ही से यह मिसाल चली, क्या साऊल भी नबियों में
है?"
13 और जब वह नबुव्वत कर चुका तो ऊँचे मक़ाम में आया।
14 वहाँ साऊल के चचा ने उससे और उसके नौकर से कहा, "तुम
कहाँ गए थे?" उसने कहा, "गधे ढूंडने और जब हमने देखा कि वह
नहीं मिलते, तो हम समुएल के पास आए।"
15 फिर साऊल के चचा ने कहा, "कि मुझको ज़रा बता तो सही
कि समुएल ने तुम से क्या क्या कहा।"
16 साऊल ने अपने चचा से कहा, उसने हमको साफ़ — साफ़
बता दिया, कि गधे मिल गए, लेकिन हुकूमत का मज़मून जिसका
ज़िक्र समुएल ने किया था न बताया।

[illegible]

17 और समुएल ने लोगों को मिसफ़ाह में ख़ुदावन्द के सामने
बुलवाया।
18 और उसने बनी इस्राईल से कहा "कि ख़ुदावन्द इस्राईल का
ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि मैं इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और
मैंने तुमको मिस्रयों के हाथ से और सब सल्तनतों के हाथ से जो
तुम पर ज़ुल्म करती थीं रिहाई दी।
19 लेकिन तुमने आज अपने ख़ुदा को जो तुम को तुम्हारी सब
मुसीबतों और तकलीफ़ों से रिहाई बख़्शी है, हक़ीर जाना और
उससे कहा, हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर, इसलिए अब
तुम क़बीला — क़बीला होकर और हज़ार हज़ार करके सब के सब
ख़ुदावन्द के सामने हाज़िर हो।"
20 जब समुएल इस्राईल के सब क़बीलों को नज़दीक लाया,
और पर्ची बिनयमीन के क़बीले के नाम पर निकली।

21 तब वह बिनयमीन के क़बीला को ख़ानदान — ख़ानदान
करके नज़दीक लाया, तो मतरियों के ख़ानदान का नाम निकला
और फिर क़ीस के बेटे साऊल का नाम निकला लेकिन जब उन्होंने
उसे ढूँढा, तो वह न मिला।
22 तब उन्होंने ख़ुदावन्द से फिर पूछा, क्या यहाँ किसी और
आदमी को भी आना है, ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, देखो वह
असबाब के बीच छिप गया है।
23 तब वह दौड़े और उसको वहाँ से लाए, और जब वह लोगों
के बीच खड़ा हुआ, तो ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक
आते थे।
24 और समुएल ने उन लोगों से कहा तुम उसे देखते हो जिसे
ख़ुदावन्द ने चुन लिया, कि उसकी तरह सब लोगो में एक भी नहीं,
तब सब लोग ललकार कर बोल उठे, "कि बादशाह जीता रहे।"
25 फिर समुएल ने लोगों को हुकूमत का तरीक़ा बताया और
उसे किताब में लिख कर ख़ुदावन्द के सामने रख दिया, उसके बाद
समुएल ने सब लोगों को रुख़्सत कर दिया, कि अपने अपने घर
जाएँ।
26 और साऊल भी जिबा' को अपने घर गया, और लोगों का
एक जत्था, भी जिनके दिल को ख़ुदा ने उभारा था उसके साथ, हो
लिया।
27 लेकिन †शरीरों में से कुछ कहने लगे, "कि यह शख़्स हमको
किस तरह बचाएगा?" इसलिए उन्होंने उसकी तहक़ीर की और
उसके लिए नज़राने न लाए तब वह अनसुनी कर गया।

11

???? ?? ???????? ?????? ?? ??????

1 तब अम्मूनी नाहस चढ़ाई कर के यबीस जिल'आद के
मुक़ाबिल ख़ेमाज़न हुआ; और यबीस के सब लोगों ने नाहस

† **10:27** बलियाल, नाक़ाबिल लोग

से कहा, हम से 'अहद — ओ — पैमान कर ले, “और हम तेरी ख़िदमत करेंगे।”
2 तब अम्मूनी नाहस ने उनको जवाब दिया, “इस शर्त पर मैं
तुम से 'अहद करूँगा, कि तुम सब की दहनी आँख निकाल डाली
जाए और मैं इसे सब इस्राईलियों के लिए ज़िल्लत का निशान
ठहराऊँ।”
3 तब यबीस के बुज़ुर्गों ने उस से कहा, “हमको सात दिन की
मोहलत दे ताकि हम इस्राईल की सब सरहदों में क़ासिद भेजें,
तब अगर हमारा हिमायती कोई न मिले तो हम तेरे पास निकल
आएँगे।”
4 और वह क़ासिद साऊल के जिबा' में आए और उन्होंने लोगों
को यह बातें कह सुनाई और सब लोग चिल्ला चिल्ला कर रोने
लगे।
5 और साऊल खेत से बैलों के पीछे पीछे चला आता था,
और साऊल ने पूछा, “कि इन लोगों को क्या हुआ, कि रोते हैं?”
उन्होंने यबीस के लोगों की बातें उसे बताईं।
6 जब साऊल ने यह बातें सुनीं तो ख़ुदा की रूह उसपर ज़ोर से
नाज़िल हुई, और उसका ग़ुस्सा निहायत भड़का
7 तब उसने एक जोड़ी बैल लेकर उनको टुकड़े — टुकड़े काटा
और क़ासिदों के हाथ इस्राईल की सब सरहदों में भेज दिया, और
यह कहा कि “जो कोई आकर साऊल और समुएल के पीछे न हो
ले, उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा, और ख़ुदावन्द का ख़ौफ़
लोगों पर छा गया, और वह एक तन हो कर निकल आए।
8 और उसने उनको बज़क़ में गिना, इसलिए बनी इस्राईल तीन
लाख और यहूदाह के आदमी तीस हज़ार थे।
9 और उन्होंने उन क़ासिदों से जो आए थे कहा कि तुम यबीस
जिल'आद के लोगों से यूँ कहना कि कल धूप तेज़ होने के वक़्त तक
तुम रिहाई पाओगे इस लिए क़ासिदों ने जाकर यबीस के लोगों
को ख़बर दी और वह ख़ुश हुए।

10 तब अहल — ए — यबीस ने कहा, कल हम तुम्हारे पास
निकल आएँगे, और जो कुछ तुमको अच्छा लगे, हमारे साथ
करना।"
11 और दूसरी सुबह को साऊल ने लोगों के तीन ग़ोल किए;
और वह रात के पिछले पहर लश्कर में घुस कर 'अम्मूनियों को
क़त्ल करने लगे, यहाँ तक कि दिन बहुत चढ़ गया, और जो बच
निकले वह ऐसे तितर बितर हो गए, कि दो आदमी भी कहीं एक
साथ न रहे।
12 और लोग समुएल से कहने लगे "किसने यह कहा, था कि
क्या साऊल हम पर हुकूमत करेगा? उन आदमियों को लाओ,
ताकि हम उनको क़त्ल करें।"
13 साऊल ने कहा "आज के दिन हरगिज़ कोई मारा नहीं
जाएगा, इसलिए कि ख़ुदावन्द ने इस्राईल को आज के दिन रिहाई
दी है।"
14 तब समुएल ने लोगों से कहा, "आओ जिल्जाल को चलें
ताकि वहाँ हुकूमत को नए सिरे से क़ाईम करें।"
15 तब सब लोग जिल्जाल को गए, और वहीं उन्होंने ख़ुदावन्द
के सामने साऊल को बादशाह बनाया, फिर उन्होंने वहाँ ख़ुदावन्द
के आगे, सलामती के ज़बीहे ज़बह किए, और वहीं साऊल और
सब इस्राईली मर्दों ने बड़ी ख़ुशी मनाई।

12

□□□□ □□ □□□

1 तब समुएल ने सब इस्राईलियों से कहा, "देखो जो कुछ तुमने
मुझ से कहा, मैंने तुम्हारी एक एक बात मानी और एक बादशाह
तुम्हारे ऊपर ठहराया है।
2 और अब देखो यह बादशाह तुम्हारे आगे आगे चलता है, मैं
तो बुड्ढा हूँ और मेरा सिर सफ़ेद हो गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे

साथ हैं, मैं लड़कपन से आज तक तुम्हारे सामने ही चलता रहा
हूँ।
3 मैं हाज़िर हूँ, इसलिए तुम ख़ुदावन्द और उसके मम्सूह के
आगे मेरे मुँह पर बताओ, कि मैंने किसका बैल ले लिया या
किसका गधा लिया? मैंने किसका हक़ मारा या किस पर ज़ुल्म
किया, या किस के हाथ से मैंने रिश्वत ली, ताकि अंधा बनज़ाऊँ?
बताओ और यह मैं तुमको वापस कर दूँगा।"
4 उन्होंने जवाब दिया "तूने हमारा हक़ नहीं मारा और न हम
पर ज़ुल्म किया, और न तूने किसी के हाथ से कुछ लिया।"
5 तब उसने उनसे कहा, कि ख़ुदावन्द तुम्हारा गवाह, और
उसका मम्सूह आज के दिन गवाह है, "कि मेरे पास तुम्हारा कुछ
नहीं निकला।" उन्होंने कहा, "वह गवाह है।"
6 फिर समुएल लोगों से कहने लगा, वह ख़ुदावन्द ही है जिसने
मूसा और हारून को मुक़र्रर किया, और तुम्हारे बाप दादा को
मुल्क मिस्र से निकाल लाया।
7 इस लिए अब ठहरे रहो ताकि मैं ख़ुदावन्द के सामने उन सब
नेकियों के बारे में जो ख़ुदावन्द ने तुम से और तुम्हारे बाप दादा
से कीं बातें करूँ।
8 जब या'क़ूब मिस्र में गया, और तुम्हारे बाप दादा ने ख़ुदावन्द
से फ़रियाद की तो ख़ुदावन्द ने मूसा और हारून को भेजा,
जिन्होंने तुम्हारे बाप दादा को मिस्र से निकाल कर इस जगह
बसाया।
9 लेकिन वह ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को भूल गए, तब उसने
उनको हसूर की फ़ौज के सिपह सालार सीसरा के हाथ और
फ़िलिस्तियों के हाथ और शाह — ए — मोआब के हाथ बेच
डाला, और वह उनसे लड़े।
10 फिर उन्होंने ख़ुदावन्द से फ़रियाद की और कहा कि हमने
गुनाह किया, इसलिए कि हमने ख़ुदावन्द को छोड़ा, और बा'लीम

और इस्तारात की इबादत की लेकिन अब तू हमको हमारे दुश्मनों
के हाथ, से छुड़ा, तो हम तेरी इबादत करेंगे।
11 इस लिए ख़ुदावन्द ने *यरुब्बा'ल और †बिदान और इफ़्ताह
और समुएल को भेजा और तुम को तुम्हारे दुश्मनों के हाथ से जो
तुम्हारी चारों तरफ़ थे, रिहाई दी और तुम चैन से रहने लगे।
12 और जब तुमने देखा कि बनी अम्मून का बादशाह नाहस तुम
पर चढ़ आया, तो तुमने मुझ से कहा कि हम पर कोई बादशाह
हुकूमत करे हालाँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारा बादशाह
था।
13 इसलिए अब उस बादशाह को देखो जिसे तुमने चुन लिया,
और जिसके लिए तुमने दरख़्वास्त की थी, देखो ख़ुदावन्द ने तुम
पर बादशाह मुक़र्रर कर दिया है।
14 अगर तुम ख़ुदावन्द से डरते और उसकी इबादत करते और
उस की बात मानते रहो, और ख़ुदावन्द के हुक्म से सरकशी न
करो और तुम और वह बादशाह भी जो तुम पर हुकूमत करता है
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के पैरौ बने रहो तो भला;
15 लेकिन अगर तुम ख़ुदावन्द की बात न मानों बल्कि ख़ुदावन्द
के हुक्म से सरकशी करो तो ख़ुदावन्द का हाथ तुम्हारे ख़िलाफ़
होगा, जैसे वह तुम्हारे बाप दादा के ख़िलाफ़ होता था।
16 इसलिए अब तुम ठहरे रहो और इस बड़े काम को देखो जिसे
ख़ुदावन्द तुम्हारी आँखों के सामने करेगा।
17 क्या आज गेहूँ काटने का दिन नही, मैं ख़ुदावन्द से
दरख़्वास्त करूँगा, कि बादल गरजे और पानी बरसे, और तुम जान
लोगे, और देख भी लोगे कि तुमने ख़ुदावन्द के सामने अपने लिए,
बादशाह माँगने से कितनी बड़ी शरारत की।
18 चुनाँचे समुएल ने ख़ुदावन्द से दरख़्वास्त की और ख़ुदावन्द
की तरफ़ से उसी दिन बादल गरजा और पानी बरसा; तब सब

* **12:11** जिदौन † **12:11** बरक़, बिदान

लोग ख़ुदावन्द और समुएल से निहायत डर गए।
19 और सब लोगों ने समुएल से कहा, कि अपने ख़ादिमों के
लिए ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से दुआ कर कि हम मर न जाएँ क्यूँकि
हमने अपने सब गुनाहों पर यह शरारत भी बढ़ा दी है कि अपने
लिए एक बादशाह माँगा।
20 समुएल ने लोगों से कहा, "खौफ़ न करो, यह सब शरारत
तो तुमने की है तो भी ख़ुदावन्द की पैरवी से किनारा कशी न करो
बल्कि अपने सारे दिल से ख़ुदावन्द की इबादत करो।
21 तुम किनारा कशी न करना, वरना बातिल चीज़ों की पैरवी
करने लगोगे जो न फ़ायदा पहुंचा सकती न रिहाई दे सकती हैं,
इसलिए कि वह सब बातिल हैं।
22 क्यूँकि ख़ुदावन्द अपने बड़े नाम के ज़रिए' अपने लोगों को
नहीं छोड़ेगा, इस लिए कि ख़ुदावन्द को यही पसंद आया कि तुम
को अपनी क़ौम बनाए।
23 अब रहा मैं इसलिए ख़ुदा न करे कि तुम्हारे लिए दुआ करने
से बाज़ आकर ख़ुदावन्द का गुनहगार ठहरुँ, बल्कि मैं वही रास्ता
जो अच्छा और सीधा है, तुमको बताऊँगा।
24 सिर्फ़ इतना हो कि तुम ख़ुदावन्द से डरो, और अपने सारे
दिल और सच्चाई से उसकी इबादत करो क्यूँकि सोचो कि उसने
तुम्हारे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।
25 लेकिन अगर तुम अब भी शरारत ही करते जाओ, तो तुम
और तुम्हारा बादशाह दोनों के दोनों मिटा दिए जाओगे।"

13

[illegible]

1 साऊल तीस बरस की उम्र में हुकूमत करने लगा, और
इस्राईल पर दो बरस हुकूमत कर चुका।

2 तो साऊल ने तीन हज़ार इस्राईली जवान अपने लिए चुने,
उनमें से दो हज़ार मिक्मास में और बैत — एल के पहाड़ पर
साऊल के साथ और एक हज़ार बिनयमीन के जिबा' में यूनतन
के साथ रहे और बाक़ी लोगों को उसने रुख़्सत किया, कि अपने
अपने डेरे को जाएँ।
3 और यूनतन ने फ़िलिस्तियों की चौकी के सिपाहियों को जो
जिबा' में थे क़त्ल कर डाला और फ़िलिस्तियों ने यह सुना, और
साऊल ने सारे मुल्क में नरसिंगा फुंकवा कर कहला भेजा कि
'इब्रानी लोग सुनें।
4 और सारे इस्राईल ने यह कहते सुना, कि साऊल ने
फ़िलिस्तियों की चौकी के सिपाही मार डाले और यह भी कि
इस्राईल से फ़िलिस्तियों को नफ़रत हो गई है, तब लोग साऊल
के पीछे चल कर जिल्जाल में जमा' हो गए।
5 और फ़िलिस्ती इस्राईलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए या'नी
तीस हज़ार रथ और छ: हज़ार सवार और एक बड़ा गिरोह जैसे
समन्दर के किनारे की रेत। इसलिए वह चढ़ आए और मिक्मास
में बैतआवन के पूरब की तरफ़ ख़ेमाज़न हुए।
6 जब बनी इस्राईल ने देखा, कि वह आफ़त में मुब्तिला हो गए,
क्यूँकि लोग परेशान थे, तो वह ग़ारों और झाड़ियों और चट्टानों
और गढ़यों और गढ़ों में जा छिपे।
7 और कुछ 'इब्रानी यरदन के पार जद्द और जिल'आद के 'इलाक़े
को चले गए लेकिन साऊल जिल्जाल ही में रहा, और सब लोग
काँपते हुए उसके पीछे पीछे रहे।

[illegible]

8 और वह वहाँ सात दिन समुएल के मुक़र्रर वक़्त के मुताबिक़
ठहरा रहा, लेकिन समुएल जिल्जाल में न आया, और लोग उसके
पास से इधर उधर हो गए।

9 तब साऊल ने कहा, सोख़्तनी क़ुर्बानी और सलामती की
क़ुर्बानियों को मेरे पास लाओ, तब उसने सोख़्तनी क़ुर्बानी अदा
की।
10 और जैसे ही वह सोख़्तनी क़ुर्बानी अदा कर चुका तो क्या,
देखता है, कि समुएल आ पहुँचा और साऊल उसके इस्तक़बाल
को निकला ताकि उसे सलाम करे
11 समुएल ने पूछा, "कि तूने क्या किया?" साऊल ने जवाब
दिया "कि जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो गए,
और तू ठहराए, हुए दिनों के अन्दर नहीं आया, और फ़िलिस्ती
मिक्मास में जमा' हो गए हैं।
12 तो मैंने सोंचा कि फ़िलिस्ती जिल्जाल में मुझ पर आ पड़ेंगे,
और मैंने ख़ुदावन्द के करम के लिए अब तक दुआ भी नहीं की है,
इस लिए मैंने मजबूर होकर सोख़्तनी क़ुर्बानी अदा की।"
13 समुएल ने साऊल से कहा, "तूने बेवक़ूफ़ी की, तूने ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के हुक्म को जो उसने तुझे दिया, नहीं माना वर्ना
ख़ुदावन्द तेरी बादशाहत बनी इस्राईल में हमेशा तक क़ाईम
रखता।
14 लेकिन अब तेरी हुकूमत क़ाईम न रहेगी क्यूँकि ख़ुदावन्द ने
एक शख़्स को जो उसके दिल के मुताबिक़ है, तलाश कर लिया है
और ख़ुदावन्द ने उसे अपनी क़ौम का सरदार ठहराया है, इसलिए
कि तूने वह बात नहीं मानी जिसका हुक्म ख़ुदावन्द ने तुझे दिया
था।"

[illegible]

15 और समुएल उठकर जिल्जाल से बिनयमीन के जिबा' को
गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उसके साथ हाज़िर थे, गिना
और वह क़रीबन छ: सौ थे
16 और साऊल और उसका बेटा यूनतन और उनके साथ के
लोग बिनयमीन के जिबा' में रहे, लेकिन फ़िलिस्ती मिक्मास में
ख़ेमाज़न थे।

17 और ग़ारतगर फ़िलिस्तियों के लश्कर में से तीन ग़ोल होकर
निकले एक ग़ोल तो सु'आल के 'इलाक़े को उफ़रह के रास्ते से
गया।
18 और दूसरे ग़ोल ने बैतहोरून की राह ली और तीसरे ग़ोल
ने उस सरहद की राह ली जिसका रुख़ वादी — ए — ज़ुबू'ईम की
तरफ़ जंगल के सामने है।
19 और इस्राईल के सारे मुल्क में कहीं लुहार नहीं मिलता था
क्यूँकि फ़िलिस्तियों ने कहा था कि, 'इब्रानी लोग अपने लिए
तलवारें और भाले न बनाने पाएँ।
20 इसलिए सब इस्राईली अपनी अपनी फाली और भाले और
कुल्हाड़ी और कुदाल को तेज़ कराने के लिए फ़िलिस्तियों के पास
जाते थे।
21 *लेकिन कुदालों और फालियों और काँटो और कुल्हाड़ों के
लिए, और पैनों को दुरुस्त करने के लिए, वह रेती रखते थे।
22 इस लिए लड़ाई के दिन साऊल और यूनतन के साथ के
लोगों में से किसी के हाथ में न तो तलवार थी न भाला, लेकिन
साऊल और उसके बेटे यूनतन के पास तो यह थे।
23 और फ़िलिस्तियों की चौकी के सिपाही, निकल कर मिक्मास
की घाटी को गए।

14

[illegible]

1 और एक दिन ऐसा हुआ, कि साऊल के बेटे यूनतन ने
उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था कहा कि आ हम
फ़िलिस्तियों की चौकी को जो उस तरफ़ है चलें, पर उसने अपने
बाप को न बताया।

* **13:21** फालियों और कुदालों की क़ीमत एक शकेल का दूसरा हिस्सा था पर कुल्हाड़ोंऔर पैनों की धार लगाने और सीधे करने की मज़दूरी एक शकेल का तीसरा हिस्सा था

2 और साऊल जिबा' के निकास पर उस अनार के दरख़्त के नीचे
जो मजरुन में है मुक़ीम था, और क़रीबन छ: सौ आदमी उसके
साथ थे।
3 और अख़ियाह बिन अख़ीतोब जो यकबोद बिन फ़ीन्हास बिन
'एली का भाई और शीलोह में ख़ुदावन्द का काहिन था अफ़ूद
पहने हुए था और लोगों को ख़बर न थी कि यूनतन चला गया है।
4 और उन की घाटियों के बीच जिन से होकर यूनतन
फ़िलिस्तियों की चौकी को जाना चाहता था एक तरफ़ एक बड़ी
नुकीली चट्टान थी और दूसरी तरफ़ भी एक बड़ी नुकीली चट्टान
थी, एक का नाम बुसीस था दूसरी का सना।
5 एक तो शिमाल की तरफ़ मिक्मास के मुक़ाबिल और दूसरी
जुनूब की तरफ़ जिबा' के मुक़ाबिल थी।
6 इसलिए यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार
था, कहा, "आ हम उधर उन नामख़्तूनों की चौकी को चलें —
मुम्किन है, कि ख़ुदावन्द हमारा काम बना दे, क्यूँकि ख़ुदावन्द के
लिए बहुत सारे या थोड़ों के ज़रिए' से बचाने की क़ैद नहीं।"
7 उसके सिलाह बरदार ने उससे कहा, "जो कुछ तेरे दिल में है
इसलिए कर और उधर चल मैं तो तेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ तेरे साथ
हूँ।"
8 तब यूनतन ने कहा, "देख हम उन लोगों के पास इस तरफ़
जाएँगे, और अपने को उनको दिखाएँगे।
9 अगर वह हम से यह कहें, कि हमारे आने तक ठहरो, तो हम
अपनी जगह चुप चाप खड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएँगे।
10 लेकिन अगर वह यूँ कहें, कि हमारे पास तो आओ, तो हम
चढ़ जाएँगे, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उनको हमारे क़ब्ज़े में कर दिया,
और यह हमारे लिए निशान होगा।"
11 फिर इन दोनों ने अपने आप को फ़िलिस्तियों की चौकी
के सिपाहियों को दिखाया, और फ़िलिस्ती कहने लगे, "देखो ये

'इब्रानी उन सुराख़ों में से जहाँ वह छिप गए थे, बाहर निकले
आते हैं।”
12 और चौकी के सिपाहियों ने यूनतन और उसके सिलाह
बरदार से कहा, “हमारे पास आओ, तो सही, हम तुमको एक चीज़
दिखाएँ।” इसलिए यूनतन ने अपने सिलाह बरदार से कहा, “अब
मेरे पीछे पीछे चढ़ा, चला आ, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उनको इस्राईल
के क़ब्ज़े में कर दिया है।”
13 और यूनतन अपने हाथों और पाँव के बल चढ़ गया, और
उसके पीछे पीछे उसका सिलाह बरदार था, और वह यूनतन के
सामने गिरते गए और उसका सिलाह बरदार उसके पीछे पीछे
उनको क़त्ल करता गया।
14 यह पहली ख़ूरेज़ी जो यूनतन और उसके सिलाह बरदार ने
की क़रीबन बीस आदमियों की थी जो कोई एक बीघा *ज़मीन की
रेघारी में मारे गए।
15 तब लश्कर और मैदान और सब लोगों में †लरज़िश हुई और
चौकी के सिपाही, और ग़ारतगर भी काँप गए, और ज़लज़ला
आया इसलिए निहायत तेज़ कपकपी हुई।

[illegible]

16 और साऊल के निगहबानों ने जो बिनयमीन के जिबा' में थे
नज़र की और देखा कि भीड़ घटती जाती है और लोग इधर उधर
जा रहे हैं।
17 तब साऊल ने उन लोगों से जो उसके साथ थे, कहा, “गिनती
करके देखो, कि हम में से कौन चला गया है,” इसलिए उन्होंने
शुमार किया तो देखो, यूनतन और उसका सिलाह बरदार ग़ायब
थे।

---

* **14:14** वह इतनी अराज़ी थीजितनी कि एक दिन में एक खेत में एक जोड़ी बैल हल जोत सकते थे † **14:15** एक दहशत, अज़ हद दहशत तारी होना, कपकपी, थरथराहट

18 और साऊल ने अख़ियाह से कहा, "ख़ुदा का संदूक़ यहाँ
ला।" क्यूँकि ख़ुदा का संदूक़ उस वक़्त बनी इस्राईल के साथ वहीं
था।
19 और जब साऊल काहिन से बातें कर रहा था तो फ़िलिस्तियों
की लश्कर गाह, में जो हलचल मच गई थी वह और ज़्यादा हो
गई तब साऊल ने काहिन से कहा कि "अपना हाथ खींच ले।"
20 और साऊल और सब लोग जो उसके साथ थे, एक जगह
जमा' हो गए, और लड़ने को आए और देखा कि हर एक की
तलवार अपने ही साथी पर चल रही है, और सख़्त तहलका मचा
हुआ है।
21 और वह 'इब्रानी भी जो पहले की तरह फ़िलिस्तियों के साथ
थे और चारो तरफ़ से उनके साथ लश्कर में आए थे फिर कर उन
इस्राईलियों से मिल गए जो साऊल और यूनतन के साथ थे।
22 इसी तरह उन सब इस्राईली मर्दों ने भी जो इफ़्राईम के
पहाड़ी मुल्क में छिप गए थे, यह सुन कर कि फ़िलिस्ती भागे
जाते हैं, लड़ाई में आ उनका पीछा किया।
23 तब ख़ुदावन्द ने उस दिन इस्राईलियों को रिहाई दी और
लड़ाई बैत आवन के उस पार तक पहुँची।

[illegible]

24 और इस्राईली मर्द उस दिन बड़े परेशान थे, क्यूँकि साऊल
ने लोगों को क़सम देकर यूँ कहा, था कि जब तक शाम न हो और
मैं अपने दुश्मनों से बदला न ले लूँ उस वक़्त तक अगर कोई कुछ
खाए तो वह ला'नती हो। इस वजह से उन लोगों में से किसी ने
खाना चखा तक न था।
25 और सब ‡लोग जंगल में जा पहुँचे और वहाँ ज़मीन पर शहद
था।

‡ **14:25** फ़ौज, मुल्क के तमाम लोग

26 और जब यह लोग उस जंगल में पहुँच गए तो देखा कि शहद
टपक रहा है तो भी कोई अपना हाथ अपने मुँह तक नही ले गया
इसलिए कि उनको क़सम का ख़ौफ़ था।
27 लेकिन यूनतन ने अपने बाप को उन लोगों को क़सम देते
नहीं सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की लाठी के सिरे को
शहद के छत्ते में भोंका और अपना हाथ अपने मुँह से लगा लिया
और उसकी आँखों में §रोशनी आई।
28 तब उन लोगों में से एक ने उससे कहा, तेरे बाप ने लोगों
को क़सम देकर सख़्त ताकीद की थी, और कहा था "कि जो शख़्स
आज के दिन कुछ खाना खाए, वह ला'नती हो और लोग बेदम से
हो रहे थे।"
29 तब यूनतन ने कहा कि मेरे बाप ने मुल्क को दुख दिया है,
देखो मेरी आँखों में ज़रा सा शहद चखने की वजह से कैसी रोशनी
आई।
30 कितना ज़्यादा अच्छा होता अगर सब लोग दुश्मन की
लूट में से जो उनको मिली दिल खोल कर खाते क्यूँकि अभी तो
फ़िलिस्तियों में कोई बड़ी ख़ूरेज़ी भी नहीं हुई है।
31 और उन्होंने उस दिन मिक्मास से अय्यालोन तक
फ़िलिस्तियों को मारा और लोग बहुत ही बे दम हो गए।
32 इसलिए वह लोग लूट पर गिरे और भेड़ बकरियों और बैलों
और बछड़ों को लेकर उनको ज़मीन पर ज़बह, किया और ख़ून
समेत खाने लगे।
33 तब उन्होंने साऊल को ख़बर दी कि देख लोग ख़ुदावन्द
का गुनाह करते हैं कि ख़ून समेत खा रहे हैं। उसने कहा, तुम ने
बेईमानी की, इसलिए एक बड़ा पत्थर आज मेरे सामने ढलका
लाओ।
34 फिर साऊल ने कहा कि लोगों के बीच इधर उधर जाकर उन
से कहो कि हर शख़्स अपना बैल और अपनी भेड़ यहाँ मेरे पास

§ **14:27** उस ने अपनी ताक़त वापस हासिल की

लाए और यहीं, ज़बह करे और खाए और ख़ून समेत खाकर ख़ुदा
का गुनहगार न बने। चुनाँचे उस रात लोगों में से हर शख़्स अपना
बैल वहीं लाया और वहीं ज़बह किया।
35 और साऊल ने ख़ुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाया, यह
पहला मज़बह है, जो उसने ख़ुदावन्द के लिए बनाया।
36 फिर साऊल ने कहा, "आओ, रात ही को फ़िलिस्तियों का
पीछा करें और पौ फटने तक उनको लूटें और उन में से एक आदमी
को भी न छोड़ें।" उन्होंने कहा, "जो कुछ तुझे अच्छा लगे वह कर
तब काहिन ने कहा, कि आओ, हम यहाँ ख़ुदा के नज़दीक हाज़िर
हों।"
37 और साऊल ने ख़ुदा से सलाह ली, कि क्या मैं फ़िलिस्तियों
का पीछा करूँ? क्या तू उनको इस्राईल के हाथ में कर देगा। तो
भी उसने उस दिन उसे कुछ जवाब न दिया।
38 तब साऊल ने कहा कि तुम सब जो लोगों के सरदार हो
यहाँ, नज़दीक आओ, और तहक़ीक़ करो और देखो कि आज के
दिन गुनाह क्यूँकर हुआ है।
39 क्यूँकि ख़ुदावन्द की हयात की क़सम जो इस्राईल को रिहाई
देता है अगर वह मेरे बेटे यूनतन ही का गुनाह हो, वह ज़रूर
मारा जाएगा, लेकिन उन सब लोगों में से किसी आदमी ने उसको
जवाब न दिया।
40 तब उस ने सब इस्राईलियों से कहा, "तुम सब के सब एक
तरफ़ हो जाओ, और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी तरफ़ हो
जायेंगे।" लोगों ने साऊल से कहा, "जो तू मुनासिब जाने वह
कर।"
41 तब साऊल ने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा से कहा, "हक़ को
ज़ाहिर कर दे," इसलिए पर्ची यूनतन और साऊल के नाम पर
निकली, और लोग बच गए।
42 तब साऊल ने कहा कि "मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम
पर पर्ची डालो, तब यूनतन पकड़ा गया।"

43 और साऊल ने यूनतन से कहा, "मुझे बता कि तूने क्या किया है?" यूनतन ने उसे बताया कि "मैंने बेशक अपने हाथ की लाठी के सिरे से ज़रा सा शहद चख्खा था इसलिए देख मुझे मरना होगा।"

44 साऊल ने कहा, "ख़ुदा ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे क्यूँकि ऐ यूनतन तू ज़रूर मारा जाएगा।"

45 तब लोगों ने साऊल से कहा, "क्या यूनतन मारा जाए, जिसने इस्राईल को ऐसा बड़ा छुटकारा दिया है ऐसा न होगा, ख़ुदावन्द की हयात की क़सम है कि उसके सर का एक बाल भी ज़मीन पर गिरने नहीं पाएगा क्यूँकि उसने आज ख़ुदा के साथ हो कर काम किया है।" इसलिए लोगों ने यूनतन को बचा लिया और वह मारा न गया।

46 और साऊल फ़िलिस्तियों का पीछा छोड़ कर लौट गया और फ़िलिस्ती अपने मक़ाम को चले गए

[illegible]

47 जब साऊल बनी इस्राईल पर बादशाहत करने लगा, तो वह हर तरफ़ अपने दुश्मनों या'नी मोआब और बनी 'अम्मून और अदोम और ज़ोबाह के बादशाहों और फ़िलिस्तियों से लड़ा और वह जिस जिस तरफ़ फिरता उनका बुरा हाल करता था।

48 और उसने बहादुरी करके अमालीक़ियों को मारा, और इस्राईलियों को उनके हाथ से छुड़ाया जो उनको लूटते थे।

49 साऊल के बेटे यूनतन और इसवी और मलकीशू'अ थे; और उसकी दोनों बेटियों के नाम यह थे, बड़ी का नाम मेरब और छोटी का नाम मीकल था।

50 और साऊल कि बीवी का नाम अख़ीनु'अम था जो अख़ीमा'ज़ की बेटी थी, और उसकी फ़ौज के सरदार का नाम अबनेर था, जो साऊल के चचा नेर का बेटा था।

51 और साऊल के बाप का नाम क़ीस था और अबनेर का बाप नेर अबीएल का बेटा था।

52 और साऊल की ज़िन्दगी भर फ़िलिस्तियों से सख़्त जंग
रही, इसलिए जब साऊल किसी ताक़तवर मर्द या सूरमा को
देखता था तो उसे अपने पास रख लेता था।

15

[illegible]

1 और समुएल ने साऊल से कहा कि "ख़ुदावन्द ने मुझे भेजा है
कि मैं तुझे मसह करूँ ताकि तू उसकी क़ौम इस्राईल का बादशाह
हो, इसलिए अब तू ख़ुदावन्द की बातें सुन।
2 रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मुझे इसका ख़्याल
है कि 'अमालीक़ ने इस्राईल से क्या किया और जब यह मिस्र से
निकल आए तो वह रास्ते में उनका मुख़ालिफ़ हो कर आया।
3 इस लिए अब तू जा और 'अमालीक़ को मार और जो कुछ
उनका है, सब को बिलकुल मिटा दे, और उनपर रहम मत कर
बल्कि मर्द और 'औरत नन्हे, बच्चे और दूध पीते, गाय बैल और
भेड़ बकरियाँ, ऊँट और गधे सब को क़त्ल कर डाल।"
4 चुनाँचे साऊल ने लोगों को जमा' किया और तलाइम में
उनको गिना; इस लिए वह दो लाख पियादे, और यहूदाह के दस
हज़ार जवान थे।
5 और साऊल 'अमालीक़ के शहर को आया और वादी के बीच
घात लगा कर बैठा।
6 और साऊल ने क़ीनियों से कहा कि तुम चल दो
'अमालीक़ियों के बीच से निकल जाओ; ऐसा न हो कि मैं तुमको
उनके साथ हलाक कर डालूँ इसलिए कि तुम सब इस्राईलियों
से जब वह मिस्र से निकल आए महेरबानी के साथ पेश आए।
इसलिए क़ीनी अमालीक़ियों में से निकल गए।
7 और साऊल ने 'अमालीक़ियों को हवीला से शोर तक जो
मिस्र के सामने है मारा।

8 और 'अमालीक़ियों के बादशाह अजाज को जीता पकड़ा और
सब लोगों को तलवार की धार से मिटा दिया।
9 लेकिन साऊल ने और उन लोगों ने अजाज को और अच्छी
अच्छी भेड़ बकरियों गाय — बैलों और मोटे मोटे बच्चों और बर्रों
को और जो कुछ अच्छा था उसे जीता रख्खा और उनको बरबाद
करना न चाहा लेकिन उन्होंने हर एक चीज़ को जो नाक़िस और
निकम्मी थी बरबाद कर दिया।

[illegible]

10 तब ख़ुदावन्द का कलाम समुएल को पहुँचा कि।
11 मुझे अफ़सोस है कि मैंने साऊल को बादशाह होने के लिए
मुक़र्रर किया है, क्यूँकि वह मेरी पैरवी से फिर गया है, और उसने
मेरे हुक्म नहीं माने, तब समुएल का ग़ुस्सा भड़का और वह सारी
रात ख़ुदावन्द से फ़रियाद करता रहा।
12 और समुएल सवेरे उठा कि सुबह को साऊल से मुलाक़ात
करे, और समुएल को ख़बर मिली, कि साऊल करमिल को आया
था, और अपने लिए लाट खड़ी की और फिर गुज़रता हुआ
जिल्जाल को चला गया है।
13 फिर समुएल साऊल के पास गया और साऊल ने उस से
कहा, "तू ख़ुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हुआ, मैंने ख़ुदावन्द के
हुक्म पर 'अमल किया।"
14 समुएल ने कहा, "फिर यह भेड़ बकरियों का मिम्याना और
गाय, और बैलों का बनबाना कैसा है, जो मैं सुनता हूँ?"
15 साऊल ने कहा कि "यह लोग उनको 'अमालीक़ियों के यहाँ
से ले आए है, इसलिए कि लोगों ने अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों
और गाय बैलों को जीता रख्खा ताकि उनको ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा
के लिए ज़बह करें और बाक़ी सब को तो हम ने बरबाद कर दिया।"

16 तब समुएल ने साऊल से कहा, “ठहर जा और जो कुछ
ख़ुदावन्द ने आज की रात मुझ से कहा है, वह मैं तुझे बताऊँगा।”
उसने कहा, “बताइये।”
17 समुएल ने कहा, “अगर्चे तू अपनी ही नज़र में हक़ीर था
तो भी क्या तू बनी इस्राईल के क़बीलों का सरदार न बनाया
गया? और ख़ुदावन्द ने तुझे मसह किया ताकि तू बनी इस्राईल
का बादशाह हो।
18 और ख़ुदावन्द ने तुझे सफ़र पर भेजा और कहा कि जा और
गुनहगार 'अमालीक़ियों को मिटा कर और जब तक वह फ़ना न
हो जायें उन से लड़ता रह।
19 तब तूने ख़ुदावन्द की बात क्यूँ न मानी बल्कि लूट पर टूट
कर वह काम कर गुज़रा जो ख़ुदावन्द की नज़र में बुरा है?”
20 साऊल ने समुएल से कहा, “मैंने तो ख़ुदावन्द का हुक्म माना
और जिस रास्ते पर ख़ुदावन्द ने मुझे भेजा चला, और 'अमालीक़
के बादशाह अजाज को ले आया हूँ, और 'अमालीक़ियों को बरबाद
कर दिया।
21 जब लोग लूट के माल में से भेड़ बकरियाँ और गाय बैल
या'नी अच्छी अच्छी चीज़ें जिनको बरबाद करना था, ले आए
ताकि जिल्जाल में ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के सामने क़ुर्बानी करें।”
22 समुएल ने कहा, “क्या ख़ुदावन्द सोख़्तनी क़ुर्बानियों और
जबीहों से इतना ही ख़ुश होता है जितना इस बात से कि ख़ुदावन्द
का हुक्म माना जाए? देख फ़रमा बरदारी क़ुर्बानी से और बात
मानना मेंढों की चर्बी से बेहतर है।
23 क्यूँकि बग़ावत और जादूगरी बराबर हैं और सरकशी ऐसी ही
है जैसी मूरतों और बुतों की इबादत इस लिए चूँकि तूने ख़ुदावन्द
के हुक्म को रद्द किया है इसलिए उसने भी तुझे रद्द किया है कि
बादशाह न रहे।”

24 साऊल ने समुएल से कहा, मैंने गुनाह किया कि मैंने
ख़ुदावन्द के फ़रमान को और तेरी बातों को टाल दिया है, क्यूँकि
मैं लोगों से डरा और उनकी बात सुनी।
25 इसलिए अब में तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरा गुनाह बख़्श
दे, और मेरे साथ लौट चल ताकि मैं ख़ुदावन्द को सिज्दा करूँ।
26 समुएल ने साऊल से कहा, "मैं तेरे साथ नहीं लौटूँगा क्यूँकि
तूने ख़ुदावन्द के कलाम को रद्द कर दिया है और ख़ुदावन्द ने तुझे
रद्द किया, कि इस्राईल का बादशाह न रहे।"
27 और जैसे ही समुएल जाने को मुड़ा साऊल ने उसके जुब्बा
का दामन पकड़ लिया, और वह फट गया।
28 तब समुएल ने उससे कहा, "ख़ुदावन्द ने इस्राईल की
बादशाही तुझ से आज ही चाक कर के छीन ली और तेरे एक
पड़ोसी को जो तुझ से बेहतर है दे दी है।
29 और जो इस्राईल की ताक़त है, वह न तो झूट बोलता और
न पछताता है, क्यूँकि वह इंसान नही है कि पछताए।"
30 उसने कहा, "मैंने गुनाह तो किया है तो भी मेरी क़ौम के
बुज़ुर्गों और इस्राईल के आगे मेरी 'इज्ज़त कर और मेरे साथ,
लौट कर चल ताकि मैं ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा को सिज्दा करूँ।"
31 तब समुएल लौट कर साऊल के पीछे हो लिया और साऊल
ने ख़ुदावन्द को सिज्दा किया।

[illegible]

32 तब समुएल ने कहा कि 'अमालीक़ियों के बादशाह अजाज
को यहाँ मेरे पास लाओ, इसलिए अजाज ख़ुशी ख़ुशी उसके पास
आया और अजाज कहने लगा, हक़ीक़त में मौत की कड़वाहट
गुज़र गयी।

33 समुएल ने कहा, जैसे तेरी तलवार ने 'औरतों को बे औलाद
किया वैसे ही तेरी माँ 'औरतों में बे औलाद होगी और समुएल ने
अजाज को जिल्जाल में ख़ुदावन्द के सामने टुकड़े टुकड़े किया।
34 और समुएल रामा को चला गया और साऊल अपने घर
साऊल के ज़िबा' को गया।
35 और समुएल अपने मरते दम तक साऊल को फिर देखने
न गया क्यूँकि साऊल के लिए ग़म खाता रहा, और ख़ुदावन्द
साऊल को बनी इस्राईल का बादशाह करके दुखी हुआ।

16

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने समुएल से कहा, "तू कब तक साऊल के
लिए ग़म खाता रहेगा, जिस हाल कि मैंने उसे बनी इस्राईल का
बादशाह होने से रद्द कर दिया है? तू अपने सींग में तेल भर और
जा, मैं तुझे बैतलहमी यस्सी के पास भेजता हूँ, क्यूँकि मैंने उसके
बेटों में से एक को अपनी तरफ़ से बादशाह चुना है।"
2 समुएल ने कहा, में क्यूँकर जाऊँ? अगर साऊल सुन लेगा,
तो मुझे मार ही डालेगा "ख़ुदावन्द ने कहा, एक बछिया अपने
साथ लेजा और कहना कि मैं ख़ुदावन्द के लिए क़ुर्बानी करने को
आया हूँ।
3 और यस्सी को क़ुर्बानी की दा'वत देना फिर मैं तुझे बता दूँगा
कि तुझे क्या करना है, और उसी को जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ
मेरे लिए मसह करना।"
4 और समुएल ने वही जो ख़ुदावन्द ने कहा था किया और
बैतलहम में आया, तब शहर के बुज़ुर्ग काँपते हुए उससे मिलने
को गए और कहने लगे, "तू सुलह के ख़्याल से आया है?"

5 उसने कहा, सुलह के ख़्याल से, मैं ख़ुदावन्द के लिए क़ुर्बानी
पेश करने आया हूँ। तुम अपने आप को पाक साफ़ करो और मेरे
साथ क़ुर्बानी के लिए आओ "और उसने यस्सी को और उसके बेटों
को पाक किया और उनको क़ुर्बानी की दा'वत दी।
6 जब वह आए तो वह इलियाब को देख कर कहने लगा,
यक़ीनन ख़ुदावन्द का म्मसूह उसके आगे है।"
7 तब ख़ुदावन्द ने समुएल से कहा कि "तू उसके चेहरा और
उसके क़द की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद
किया है, क्यूँकि ख़ुदावन्द इंसान की तरह नज़र नहीं करता
इसलिए कि इंसान ज़ाहिरी सूरत को देखता है, पर ख़ुदावन्द दिल
पर नज़र करता है।"
8 तब यस्सी ने अबीनदाब को बुलाया और उसे समुएल के
सामने से निकाला, उसने कहा, "ख़ुदावन्द ने इसको भी नहीं
चुना।"
9 फिर यस्सी ने सम्मा को आगे किया, उसने कहा, "ख़ुदावन्द
ने इसको भी नहीं चुना।"
10 और यस्सी ने अपने सात बेटों को समुएल के सामने से
निकाला और समुएल ने यस्सी से कहा कि "ख़ुदावन्द ने उनको
नहीं चुना है।"
11 फिर समुएल ने यस्सी से पूछा, "क्या तेरे सब लड़के यहीं
हैं?" उसने कहा, सब से छोटा अभी रह गया, वह भेड़ बकरियाँ
चराता है "समुएल ने यस्सी से कहा, उसे बुला भेज क्यूँकि जब
तक वह यहाँ न आ जाए हम नहीं बैठेंगे।"
12 इसलिए वह उसे बुलवाकर अंदर लाया। वह सुर्ख रंग और
ख़ूबसूरत और हसीन था और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, "उठ, और
उसे मसह कर क्यूँकि वह यही है।"
13 तब समुएल ने तेल का सींग लिया और उसे उसके भाइयों
के बीच मसह किया; और ख़ुदावन्द की रूह उस दिन से आगे को

दाऊद पर ज़ोर से नाज़िल होती रही, तब समुएल उठकर रामा
को चला गया।

[illegible]

14 और ख़ुदावन्द की रूह साऊल से जुदा हो गई और ख़ुदावन्द
की तरफ़ से एक बुरी रूह उसे सताने लगी।
15 और साऊल के मुलाज़िमों ने उससे कहा, "देख अब एक बुरी
रूह ख़ुदा की तरफ़ तुझे सताती है।
16 इसलिए हमारा मालिक अब अपने ख़ादिमों को जो उसके
सामने हैं, हुक्म दे कि वह एक ऐसे शख़्स को तलाश कर लाएँ जो
बरबत बजाने में क़ाबिल हो, और जब जब ख़ुदा की तरफ़ से यह
बुरी रूह तुझ पर चढ़े वह अपने हाथ से बजाए, और तू बहाल हो
जाए।"
17 साऊल ने अपने ख़ादिमों से कहा, "ख़ैर एक अच्छा बजाने
वाला मेरे लिए ढूँढों और उसे मेरे पास लाओ।"
18 तब जवानों में से एक यूँ बोल उठा कि "देख मैंने बैतलहम के
यस्सी के एक बेटे को देखा जो बजाने में क़ाबिल और ज़बरदस्त
सूरमा और जंगी जवान और बात में साहिबे तमीज़ और ख़ूबसूरत
आदमी है और ख़ुदावन्द उसके साथ है।"
19 तब साऊल ने यस्सी के पास क़ासिद रवाना किए और
कहला भेजा कि "अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ
रहता है, मेरे पास भेज दे।"
20 तब यस्सी ने एक गधा जिस पर रोटियाँ लदीं थीं, और मय
का एक मश्कीज़ा और बकरी का एक बच्चा लेकर उनको अपने
बेटे दाऊद के हाथ साऊल के पास भेजा।
21 और दाऊद साऊल के पास आकर उसके सामने खड़ा हुआ,
और साऊल उससे मुहब्बत करने लगा, और वह उसका सिलह
बरदार हो गया।

22 और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि दाऊद को मेरे
सामने रहने दे क्यूँकि वह मेरा मंज़ूरे नज़र हुआ है।
23 इसलिए जब वह बुरी रूह ख़ुदा की तरफ़ से साऊल पर
चढ़ती थी तो दाऊद बरबत लेकर हाथ से बजाता था, और साऊल
को राहत होती और वह बहाल हो जाता था, और वह बुरी रूह
उस पर से उतर जाती थी।

17

[illegible]

1 फिर फ़िलिस्तियों ने जंग के लिए अपनी फ़ौजें जमा' कीं, और
यहूदाह के शहर शोको में इकट्ठे हुए और शोके और 'अजीक़ा के
बीच अफ़सदम्मीम में ख़ैमाज़न हुए।
2 और साऊल और इस्राईल के लोगों ने जमा' होकर एला की
वादी में डेरे डाले और लड़ाई के लिए फ़िलिस्तियों के मुक़ाबिल
सफ़ आराई की।
3 और एक तरफ़ के पहाड़ पर फ़िलिस्ती और दूसरी तरफ़ के
पहाड़ पर बनी इस्राईल खड़े हुए और इन दोनों के बीच वादी थी।
4 और फ़िलिस्तियों के लश्कर से एक पहलवान निकला जिसका
नाम जाती जूलियत था, उसका क़द छ हाथ और एक बालिश्त
था।
5 और उसके सर पर पीतल का टोपा था, और वह पीतल ही की
ज़िरह पहने हुए था जो तोल में *पाँच हज़ार पीतल की मिस्क़ाल
के बराबर थी।
6 और उसकी टाँगों पर पीतल के दो साकपोश थे और उसके
दोनों शानों के बीच पीतल की बरछी थी।
7 और उसके भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जुलाहे का शहतीर
और उसके नेज़े का फ़ल छ: सौ मिस्क़ाल लोहे का था और एक
शख़्स ढाल लिए हुए उसके आगे आगे चलता था।

---
* **17:5** 57 किलोग्राम

8 वह खड़ा हुआ, और इस्राईल के लश्करों को पुकार कर उन
से कहने लगा कि तुमने आकर जंग के लिए क्यूँ सफ आराई की?
क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं और तुम साऊल के ख़ादिम नहीं? इसलिए
अपने लिए किसी शख़्स को चुनो जो मेरे पास उतर आए।
9 अगर वह मुझे से लड़ सके और मुझे क़त्ल कर डाले तो हम
तुम्हारे ख़ादिम हो जाएँगे लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आऊँ
और उसे क़त्ल कर डालूँ तो तुम हमारे ख़ादिम हो जाना और
हमारी ख़िदमत करना।
10 फिर उस फ़िलिस्ती ने कहा कि मैं आज के दिन इस्राईली
फ़ौजों की बे'इज़्ज़ती करता हूँ कोई जवान निकालो ताकि हम
लड़ें।
11 जब साऊल और सब इस्राईलियों ने उस फ़िलिस्ती की बातें
सुनीं, तो परेशान हुए और बहुत डर गए।

[illegible]

12 और दाऊद बैतल हम यहूदाह के उस इफ्राती आदमी का
बेटा था जिसका नाम यस्सी था, उसके आठ बेटे थे और वह ख़ुद
साऊल के ज़माना के लोगों के बीच बुड्ढा और उम्र दराज़ था।
13 और यस्सी के तीन बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे जंग में गए
थे और उसके तीनों बेटों के नाम जो जंग में गए थे यह थे इलियाब
जो पहलौठा था, और दूसरा अबीनदाब और तीसरा सम्मा।
14 और दाऊद सबसे छोटा था और तीनों बड़े बेटे साऊल के
पीछे पीछे थे।
15 और दाऊद बैतलहम में अपने बाप की भेड़ बकरयाँ चराने
को साऊल के पास से आया जाया करता था।
16 और वह फ़िलिस्ती सुबह और शाम नज़दीक आता और
चालिस दिन तक निकल कर आता रहा।
17 और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि "इस भुने अनाज
में से एक †ऐफ़ा और यह दस रोटियाँ अपने भाइयों के लिए लेकर

† **17:17** 10 किलोग्राम

इनको जल्द लश्कर गाह, में अपने भाइयों के पास पहुचा दे।
18 और उनके हज़ारी सरदार के पास पनीर की यह दस टिकियाँ
लेजा और देख कि तेरे भाइयों का क्या हाल है, और उनकी कुछ
निशानी ले आ।"
19 और साऊल और वह भाई और सब इस्राईली जवान एला
की वादी में फ़िलिस्तियों से लड़ रहे थे।
20 और दाऊद सुबह को सवेरे उठा, और भेड़ बकरियों को एक
रखवाले के पास छोड़ कर यस्सी के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ
लेकर रवाना हुआ, और जब वह लश्कर जो लड़ने जा रहा था,
जंग के लिए ललकार रहा था, उस वक़्त वह छकड़ों के पड़ाव में
पहुँचा।
21 और इस्राईलियों और फ़िलिस्तियों ने अपने — अपने
लश्कर को आमने सामने करके सफ़ आराई की।
22 और दाऊद अपना सामान असबाब के निगहबान के हाथ में
छोड़ कर आप लश्कर में दौड़ गया और जाकर अपने भाइयों से
ख़ैर — ओ — 'आफ़ियत पूछी।
23 और वह उनसे बातें करता ही था कि देखो वह पहलवान
जात का फ़िलिस्ती जिसका नाम जूलियत था फ़िलिस्ती सफ़ों में
से निकला और उसने फिर वैसी ही बातें कहीं और दाऊद ने उनको
सुना।
24 और सब इस्राईली जवान उस शख़्स को देख कर उसके
सामने से भागे और बहुत डर गए।
25 तब इस्राईली जवान ऐसा कहने लगे, "तुम इस आदमी को
जो निकला है देखते हो? यक़ीनन यह इस्राईल की बे'इज़्ज़ती
करने को आया है, इसलिए जो कोई उसको मार डाले उसे
बादशाह बड़ी दौलत से माला माल करेगा और अपनी बेटी उसे
ब्याह देगा, और उसके बाप के घराने को इस्राईल के बीच आज़ाद
कर देगा।"
26 और दाऊद ने उन लोगों से जो उसके पास खड़े थे पूछा

कि जो शख़्स इस फ़िलिस्ती को मार कर यह नंग इस्राईल
से दूर करे उस से क्या सुलूक किया जाएगा? क्यूँकि यह ना
मख़्तून फ़िलिस्ती होता कौन है कि वह जिंदा ख़ुदा की फ़ौजों की
बे'इज़्ज़ती करे?
27 और लोगों ने उसे यही जवाब दिया कि उस शख़्स से जो उसे
मार डाले यह सुलूक किया जाएगा।
28 और उसके सब से बड़े भाई इलियाब ने उसकी बातों को जो
वह लोगों से करता था सुना और इलयाब का ग़ुस्सा दाऊद पर
भड़का और वह कहने लगा, "तू यहाँ क्यूँ आया है? और वह थोड़ी
सी भेड़ बकरियाँ तूने जंगल में किस के पास छोड़ीं? मैं तेरे घमंड
और तेरे दिल की शरारत से वाक़िफ़ हूँ, तु लड़ाई देखने आया है।"
29 दाऊद ने कहा, "मैंने अब क्या किया? क्या बात ही नहीं हो
रही है?"
30 और वह उसके पास से फिर कर दूसरे की तरफ़ गया और
वैसी ही बातें करने लगा और लोगों ने उसे फिर पहले की तरह
जवाब दिया।
31 और जब वह बातें जो दाऊद ने कहीं सुनने में आईं तो उन्होंने
साऊल के आगे उनका ज़िक्र किया और उसने उसे बुला भेजा।

???? ?? ?????? ?? ?????

32 और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस शख़्स की वजह से
किसी का दिल न घबराए, तेरा ख़ादिम जाकर उस फ़िलिस्ती से
लड़ेगा।
33 साऊल ने दाऊद से कहा कि तू इस क़ाबिल नहीं कि उस
फ़िलिस्ती से लड़ने को उसके सामने जाए; क्यूँकि तू महज़ लड़का
है और वह अपने बचपन से जंगी जवान है।
34 तब दाऊद ने साऊल को जवाब दिया कि तेरा ख़ादिम अपने
बाप की भेड़ बकरियाँ चराता था और जब कभी कोई शेर या रीछ
आकर झुंड में से कोई बर्रा उठा ले जाता।

35 तो मैं उसके पीछे पीछे जाकर उसे मारता और उसे उसके
मुँह से छुड़ाता था और जब वह मुझ पर झपटता तो मैं उसकी
दाढ़ी पकड़ कर उसे मारता और हलाक कर देता था।
36 तेरे ख़ादिम ने शेर और रीछ दोनों को जान से मारा इसलिए
यह नामख़तून फ़िलिस्ती उन में से एक की तरह होगा, इसलिए
कि उसने ज़िन्दा ख़ुदा की फ़ौजों की बे'इज़्ज़ती की है।
37 फिर दाऊद ने कहा, "ख़ुदावन्द ने मुझे शेर और रीछ के
पंजे से बचाया, वही मुझको इस फ़िलिस्ती के हाथ से बचाएगा।"
साऊल ने दाऊद से कहा, "जा ख़ुदावन्द तेरे साथ रहे।"
38 तब साऊल ने अपने कपड़े दाऊद को पहनाए, और पीतल
का टोप उसके सर पर रख्खा और उसे ज़िरह भी पहनाई।
39 और दाऊद ने उसकी तलवार अपने कपड़ों पर कस ली और
चलने की कोशिश की क्यूँकि उसने इनको आजमाया नहीं था, तब
दाऊद ने साऊल से कहा, "मैं इनको पहन कर चल नहीं सकता
क्यूँकि मैंने इनको आजमाया नहीं है।" इसलिए दाऊद ने उन
सबको उतार दिया।
40 और उसने अपनी लाठी अपने हाथ में ली, और उस नाला से
पाँच चिकने — चिकने पत्थर अपने वास्ते चुन कर उनको चरवाहे
के थैले में जो उसके पास था, या'नी झोले में डाल लिया, और
उसका गोफ़न उसके हाथ में था फिर वह फ़िलिस्ती के नज़दीक
चला।
41 और वह फ़िलिस्ती बढ़ा, और दाऊद के नज़दीक़ आया और
उसके आगे — आगे उसका सिपर बरदार था।
42 और जब उस फ़िलिस्ती ने इधर उधर निगाह की और दाऊद
को देखा तो उसे नाचीज़ जाना क्यूँकि वह महज़ लड़का था, और
सुर्ख़रु और नाज़ुक चेहरे का था।
43 तब फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, "क्या मैं कुत्ता हूँ, जो तू
लाठी लेकर मेरे पास आता है?" और उस फ़िलिस्ती ने अपने
मा'बूदों का नाम लेकर दाऊद पर ला'नत की।

44 और उस फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, “तू मेरे पास आ, और
मैं तेरा गोश्त हवाई परिंदों और जंगली जानवरों को दूँगा।”
45 और दाऊद ने उस फ़िलिस्ती से कहा कि “तू तलवार भाला
और बरछी लिए हुए मेरे पास आता है, लेकिन मैं रब्ब — उल —
अफ़वाज के नाम से जो इस्राईल के लश्करों का ख़ुदा है, जिसकी
तूने बे'इज़्ज़ती की है तेरे पास आता हूँ।
46 और आज ही के दिन ख़ुदावन्द तुझको मेरे हाथ में कर देगा,
और मैं तुझको मार कर तेरा सर तुझ पर से उतार लूँगा और
मैं आज के दिन फ़िलिस्तियों के लश्कर की लाशें हवाई परिंदों
और ज़मीन के जंगली जानवरों को दूँगा ताकि दुनिया जान ले कि
इस्राईल में एक ख़ुदा है।
47 और यह सारी जमा'अत जान ले कि ख़ुदावन्द तलवार और
भाले के ज़रिए' से नहीं बचाता इसलिए कि जंग तो ख़ुदावन्द की
है, और वही तुमको हमारे हाथ में कर देगा।”
48 और ऐसा हुआ, कि जब वह फ़िलिस्ती उठा, और बढ़ कर
दाऊद के मुक़ाबिला के लिए नज़दीक आया, तो दाऊद ने जल्दी
की और लश्कर की तरफ़ उस फ़िलिस्ती से मुक़ाबिला करने को
दौड़ा।
49 और दाऊद ने अपने थैले में अपना हाथ डाला और उस में
से एक पत्थर लिया और गोफ़न में रख कर उस फ़िलिस्ती के माथे
पर मारा और वह पत्थर उसके माथे के अंदर घुस गया और वह
ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा।
50 इसलिए दाऊद उस गोफ़न और एक पत्थर से उस फ़िलिस्ती
पर ग़ालिब आया और उस फ़िलिस्ती को मारा और क़त्ल किया
और दाऊद के हाथ में तलवार न थी।
51 और दाऊद दौड़ कर उस फ़िलिस्ती के ऊपर खड़ा हो गया,

और उसकी तलवार पकड़ कर मियाँन से खींची और उसे क़त्ल
किया और उसी से उसका सर काट डाला और फ़िलिस्तियों ने जो
देखा कि उनका पहलवान मारा गया तो वह भागे।
52 और इस्राईल और यहूदाह के लोग उठे और ललकार कर
फ़िलिस्तियों को गई और '‡अक़रून के फाटकों तक दौड़ाया और
फ़िलिस्तियों में से जो ज़ख़्मी हुए थे वह शा'रीम के रास्ते में और
§जात और 'अक़्रून तक गिरते गए।
53 तब बनी इस्राईल फ़िलिस्तियों के पीछे से उलटे फिरे और
उनके ख़ेमों को लूटा।
54 और दाऊद उस फ़िलिस्ती का सर लेकर उसे येरूशलेम में
लाया और उसके हथियारों को उसने अपने डेरे में रख दिया।
55 जब साऊल ने दाऊद को उस फ़िलिस्ती का मुक़ाबिला करने
के लिए जाते देखा तो उसने लश्कर के सरदार अबनेर से पूछा
अबनेर यह लड़का किसका बेटा है? अबनेर ने कहा, ऐ बादशाह
तेरी जान की क़सम में नहीं जानता।
56 तब बादशाह ने कहा, तू मा'लूम कर कि यह नौजवान किस
का बेटा है।
57 और जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के फ़िरा तो
अबनेर उसे लेकर साऊल के पास लाया और फ़िलिस्ती का सर
उसके हाथ में था।
58 तब साऊल ने उससे कहा, "ऐ जवान तू किसका बेटा है?"
दाऊद ने जवाब दिया, "मैं तेरे ख़ादिम बैतलहमी यस्सी का बेटा
हूँ।"

18

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

‡ **17:52** शहर § **17:52** शहर, जत के लिए, जत की वादी

1 जब वह साऊल से बातें कर चुका, तो यूनतन का दिल दाऊद
के दिल से ऐसा मिल गया कि यूनतन उससे अपनी जान के बराबर
मुहब्बत करने लगा।
2 और साऊल ने उस दिन से उसे अपने साथ रख्खा और फिर
उसे उसके बाप के घर जाने न दिया।
3 और यूनतन और दाऊद ने आपस में 'अहद किया, क्यूँकि वह
उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था।
4 तब यूनतन ने वह क़बा जो वह पहने हुए था उतार कर दाऊद
को दी ओर अपनी पोशाक बल्कि अपनी तलवार और अपनी
कमान और अपना कमर बन्द तक दे दिया।
5 और जहाँ, कहीं साऊल दाऊद को भेजता वह जाता और
'अक़्लमन्दी से काम करता था, और साऊल ने उसे जंगी मर्दों
पर मुक़र्रर कर दिया और यह बात सारी क़ौम की और साऊल के
मुलाज़िमों की नज़र में अच्छी थी।
6 जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के लौटा आता था,
और वह सब भी आ रहे थे, तो इस्राईल के सब शहरों से 'औरतें
गाती और नाचती हुई दफ़ों और ख़ुशी के ना'रों और बाजों के साथ
साऊल बादशाह के इस्तक़बाल को निकलीं।
7 और वह 'औरतें नाचती हुई गाती जाती थीं, कि साऊल ने
तो हज़ारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा।
8 और साऊल निहायत ख़फ़ा हुआ क्यूँकि वह बात उसे बड़ी
बुरी लगी, और वह कहने लगा, कि उन्होंने दाऊद के लिए तो
लाखों और मेरे लिए सिर्फ़ हज़ारों ही ठहराए। इसलिए बादशाही
के 'अलावा उसे और क्या मिलना बाक़ी है?
9 इसलिए उस दिन से आगे को साऊल दाऊद को बद गुमानी
से देखने लगा।
10 और दूसरे दिन ऐसा हुआ, कि ख़ुदा कि तरफ़ से बुरी रूह
साऊल पर ज़ोर से नाज़िल हुई और वह घर के अंदर नबुव्वत
करने लगा, और दाऊद हर दिन की तरह अपने हाथ से बजा रहा

था, और साऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए था।
11 तब साऊल ने भाला चलाया क्यूँकि उसने कहा, कि मैं दाऊद
को दीवार के साथ छेद दूँगा, और दाऊद उसके सामने से दो बार
हट गया।
12 इसलिए साऊल दाऊद से डरा करता था क्यूँकि ख़ुदावन्द
उसके साथ था और साऊल से अलग हो गया था।
13 इसलिए साऊल ने उसे अपने पास से अलग कर के उसे
हज़ार जवानों का सरदार बना दिया, और वह लोगों के सामने
आया जाया करता था।
14 और दाऊद अपनी सब राहों में 'अक़्लमन्दी के साथ चलता
था, और ख़ुदावन्द उसके साथ था।
15 जब साऊल ने देखा कि वह 'अक़्लमन्दी से काम करता है,
तो वह उससे डरने लगा।
16 लेकिन पूरा इस्राईल और यहूदाह के लोग दाऊद को प्यार
करते थे, इसलिए कि वह उनके सामने आया जाया करता था।

[illegible]

17 तब साऊल ने दाऊद से कहा कि देख मैं अपनी बड़ी बेटी
मेरब को तुझ से ब्याह दूँगा, तू सिर्फ़ मेरे लिए बहादुरी का काम
कर और ख़ुदावन्द की लड़ाइयाँ लड़, क्यूँकि साऊल ने कहा कि
मेरा हाथ नहीं बल्कि फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर चले।
18 दाऊद ने साऊल से कहा, मैं क्या हूँ और मेरी हस्ती ही क्या
और इस्राईल में मेरे बाप का ख़ानदान क्या है, कि मैं बादशाह का
दामाद बनूँ?"
19 लेकिन जब वक़्त आ गया कि साऊल की बेटी मेरब दाऊद
से ब्याही जाए, तो वह महूलाती 'अदरीएल से ब्याह दी गई।
20 और साऊल की बेटी मीकल दाऊद को चाहती थीं, इसलिए
उन्होंने साऊल को बताया और वह इस बात से ख़ुश हुआ।
21 तब साऊल ने कहा, मैं उसी को उसे दूँगा, ताकि यह उसके
लिए फंदा हो और फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े, इसलिए

साऊल ने दाऊद से कहा कि इस दूसरी दफ़ा' तो तू आज के दिन
मेरा दामाद हो जाएगा।
22 और साऊल ने अपने ख़ादिमों को हुक्म किया कि दाऊद से
चुपके चुपके बातें करो और कहो कि देख बादशाह तुझ से ख़ुश
है और उसके सब ख़ादिम तुझे प्यार करतें हैं इसलिए अब तू
बादशाह का दामाद बन जा।
23 चुनाँचे साऊल के मुलाज़िमों ने यह बातें दाऊद के कान तक
पहूँचाईं, दाऊद ने कहा, क्या बादशाह का दामाद बनना तुमको
कोई हल्की बात मा'लूम होती है, जिस हाल कि मैं ग़रीब आदमी
हूँ और मेरी कुछ औक़ात नहीं?"
24 तब साऊल के मुलाज़िमों ने उसे बताया कि दाऊद ऐसा
कहता है।
25 तब साऊल ने कहा, तुम दाऊद से कहना कि बादशाह मेहर
नही माँगता वह सिर्फ़ फ़िलिस्तियों की सौ खलड़ियाँ चाहता है,
ताकि बादशाह के दुश्मनों से इन्तक़ाम लिया जाए, साऊल का
यह इरादा था, कि दाऊद को फ़िलिस्तियों के हाथ से मरवा डाले।
26 जब उसके ख़ादिमो ने यह बातें दाऊद से कहीं तो दाऊद
बादशाह का दामाद बनने को राज़ी हो गया और अभी दिन पूरे
भी नहीं हुए थे।
27 कि दाऊद उठा, और अपने लोगों को लेकर गया और दो
सौ फ़िलिस्ती क़त्ल कर डाले और दाऊद उनकी खलड़ियाँ लाया
और उन्होंने उनकी पूरी ता'दाद में बादशाह को दिया ताकि वह
बादशाह का दामाद हो, और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे
ब्याह दी।
28 और साऊल ने देखा और जान लिया कि ख़ुदावन्द दाऊद
के साथ है, और साऊल की बेटी *मीकल उसे चाहती थी।
29 और साऊल दाऊद से और भी डरने लगा, और साऊल
बराबर दाऊद का दुश्मन रहा।

---

* **18:28** तमाम इस्राईली लोग भी दाऊद से प्यार करते थे

30 फिर फ़िलिस्तियों के सरदारों ने धावा किया और जब जब
उन्होंने धावा किया साऊल के सब ख़ादिमों की निस्बत दाऊद ने
ज़्यादा 'अक़्लमंदी का काम किया इस से उसका नाम बहुत बड़ा
हो गया।

19

[illegible]

1 और साऊल ने अपने बेटे यूनतन और अपने सब ख़ादिमों से
कहा, कि दाऊद को मार डालो।
2 लेकिन साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से बहुत ख़ुश था
इसलिए यूनतन ने दाऊद से कहा, "मेरा बाप तेरे क़त्ल की फ़िक्र
में है, इसलिए तू सुबह को अपना ख़याल रखना और किसी
पोशीदा जगह में छिपे रहना।
3 और मैं बाहर जाकर उस मैदान में जहाँ तू होगा अपने बाप
के पास खड़ा हूँगा और अपने बाप से तेरे ज़रिए' बात करूँगा और
अगर मुझे कुछ मा'लूम हो जाए तो तुझे बता दूँगा।"
4 और यूनतन ने अपने बाप साऊल से दाऊद की ता'रीफ की
और कहा, कि बादशाह अपने ख़ादिम दाऊद से बुराई न करे
क्यूँकि उसने तेरा कुछ गुनाह नहीं किया बल्कि तेरे लिए उसके
काम बहुत अच्छे रहे हैं।
5 क्यूँकि उसने अपनी जान हथेली पर रख्खी और उस
फ़िलिस्ती को क़त्ल किया और ख़ुदावन्द ने सब इस्राईलियों के
लिए बड़ी फ़तह कराई, तूने यह देखा और ख़ुश हुआ, तब तू किस
लिए दाऊद को बे वजह क़त्ल करके बे गुनाह के ख़ून का मुजरिम
बनना चाहता है?
6 और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने क़सम
ख़ाकर कहा कि ख़ुदावन्द की हयात की क़सम है वह मारा नहीं
जाएगा।

7 और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और उसने वह सब बातें
उसको बताईं और यूनतन दाऊद को साऊल के पास लाया और
वह पहले की तरह उसके पास रहने लगा।
8 और फिर जंग हुई और दाऊद निकला और फ़िलिस्तियों से
लड़ा और बड़ी ख़ूँरेज़ी के साथ उनको क़त्ल किया और वह उसके
सामने से भागे।
9 और ख़ुदावन्द की तरफ़ से एक बुरी रूह साऊल पर जब वह
अपने घर में अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था, चढ़ी और
दाऊद हाथ से बजा रहा था,
10 और साऊल ने चाहा, कि दाऊद को दीवार के साथ भाले से
छेद दे लेकिन वह साऊल के आगे से हट गया, और भाला दीवार
में जा घुसा और दाऊद भागा और उस रात बच गया। श

[illegible]

11 और साऊल ने दाऊद के घर पर क़ासिद भेजे कि उसकी
ताक में रहें और सुबह को उसे मार डालें, इसलिए दाऊद की
बीवी मीकल ने उससे कहा, "अगर आज की रात तू अपनी जान
न बचाए तो कल मारा जाएगा।"
12 और मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया, इसलिए
वह चल दिया और भाग कर बच गया।
13 और मीकल ने एक बुत को लेकर पलंग पर लिटा दिया, और
बकरियों के बाल का तकिया सिरहाने रखकर उसे कपड़ों से ढांक
दिया।
14 और जब साऊल ने दाऊद के पकड़ने को क़ासिद भेजे तो
वह कहने लगी, कि वह बीमार है।
15 और साऊल ने क़ासिदों को भेजा कि दाऊद को देखें और
कहा, कि उसे पलंग समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे क़त्ल करूँ।
16 और जब वह क़ासिद अंदर आए, तो देखा कि पलंग पर बुत
पड़ा है और उसके सिरहाने बकरियों के बाल का तकिया है।

17 तब साऊल ने मीकल से कहा, “कि तू ने मुझ से क्यूँ ऐसी
दग़ा की और मेरे दुश्मन को ऐसे जाने दिया कि वह बच निकला?”
मीकल ने साऊल को जवाब दिया, “कि वह मुझ से कहने लगा,
मुझे जाने दे, मैं क्यूँ तुझे मार डालूँ?”
18 और दाऊद भाग कर बच निकला और रामा में समुएल
के पास आकर जो कुछ साऊल ने उससे किया था, सब उसको
बताया, तब वह और समुएल दोनों नयोत में जाकर रहने लगे।
19 और साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद रामा के बीच नयोत
में है।
20 और साऊल ने दाऊद को पकड़ने को क़ासिद भेजे और
उन्होंने जो देखा कि नबियों का मजमा' नबुव्वत कर रहा है और
समुएल उनका सरदार बना खड़ा है तो ख़ुदा की रूह साऊल के
क़ासिदों पर नाज़िल हुई और वह भी नबुव्वत करने लगे।
21 और जब साऊल तक यह ख़बर पहूँची तो उसने और क़ासिद
भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे और साऊल ने फिर तीसरी
बार और क़ासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे।
22 तब वह ख़ुद रामा को चला और उस बड़े कुवें पर जो सीको
में है पहूँच कर पूछने लगा कि समुएल और दाऊद कहाँ हैं? और
किसी ने कहा, कि देख वह रामा के बीच नयोत में हैं।
23 तब वह उधर रामा के नयोत की तरफ़ चला और ख़ुदा की
रूह उस पर भी नाज़िल हुई और वह चलते चलते नबुव्वत करता
हुआ, रामा के नयोत में पहूँचा।
24 और उसने भी अपने कपड़े उतारे और वह भी समुएल के
आगे नबुव्वत करने लगा, और उस सारे दिन और सारी रात नंगा
पड़ा रहा, इसलिए यह कहावत चली, “क्या साऊल भी नबियों
में है?”

20

[illegible]

1 और दाऊद रामा के नयोत से भागा, और यूनतन के पास
जाकर कहने लगा कि मैंने क्या किया है? मेरा क्या गुनाह है?
मैंने तेरे बाप के आगे कौन सी ग़ल्ती की है, जो वह मेरी जान
चाहता है?
2 उसने उससे कहा कि ख़ुदा न करे, तू मारा नहीं जाएगा, देख
मेरा बाप कोई काम बड़ा हो या छोटा नहीं करता जब तक उसे
मुझ को न बताए, फिर भला मेरा बाप इस बात को क्यूँ मुझसे
छिपाएगा? ऐसा नहीं।
3 तब दाऊद ने क़सम खाकर कहा कि तेरे बाप को अच्छी तरह
मा'लूम है, कि मुझ पर तेरे करम की नज़र है इस लिए वह सोचता
होगा, कि यूनतन को यह मा'लूम न हो नहीं तो वह दुखी होगा
लेकिन यक़ीनन ख़ुदावन्द की हयात और तेरी जान की क़सम मुझ
में और मौत में सिर्फ़ एक ही क़दम का फ़ासला है।
4 तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहता
हो मैं तेरे लिए वही करूँगा।
5 दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल नया चाँद है, और मुझे
लाज़िम है कि बादशाह के साथ खाने बैठूँ; लेकिन तू मुझे इजाज़त
दे कि मैं परसों शाम तक मैदान में छिपा रहूँ।
6 अगर मैं तेरे बाप को याद आऊँ तो कहना कि दाऊद ने मुझ
से बजिद होकर इजाज़त माँगी ताकि वह अपने शहर बैतलहम को
जाए, इसलिए कि वहाँ, सारे घराने की तरफ़ से सालाना क़ुर्बानी
है।
7 अगर वह कहे कि अच्छा तो तेरे चाकर की सलामती है
लेकिन अगर वह ग़ुस्से से भर जाए तो जान लेना कि उसने बदी
की ठान ली है।
8 तब तू अपने ख़ादिम के साथ नरमी से पेश आ, क्यूँकि तूने
अपने ख़ादिम को अपने साथ ख़ुदावन्द के 'अहद में दाख़िल कर

लिया है, लेकिन अगर मुझ में कुछ बुराई हो तो तू ख़ुद ही मुझे क़त्ल कर डाल तू मुझे अपने बाप के पास क्यूँ पहुँचाए?

9 यूनतन ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी, अगर मुझे 'इल्म होता कि मेरे बाप का 'इरादा है कि तुझ से बदी करे तो क्या में तुझे ख़बर न करता?”

10 फिर दाऊद ने यूनतन से कहा, “अगर तेरा बाप तुझे सख़्त जवाब दे तो कौन मुझे बताएगा?”

11 यूनतन ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को निकल जाएँ।” चुनाँचे वह दोनों मैदान को चले गए।

12 तब यूनतन दाऊद से कहने लगा, “ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा गवाह रहे, कि जब मैं कल या परसों 'अनक़रीब इसी वक़्त अपने बाप का राज़ लूँ और देखूँ कि दाऊद के लिए भलाई है तो क्या मैं उसी वक़्त तेरे पास कहला न भेजूँगा और तुझे न बताऊँगा?

13 ख़ुदावन्द यूनतन से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे अगर मेरे बाप की यही मर्ज़ी हो कि तुझ से बुराई करे और मैं तुझे न बताऊँ और तुझे रुख़्सत न करदूँ ताकि तू सलामत चला जाए और ख़ुदावन्द तेरे साथ रहे, जैसा वह मेरे बाप के साथ रहा।

14 और सिर्फ़ यहीं नहीं कि जब तक मैं जीता रहूँ तब ही तक तू मुझ पर ख़ुदावन्द का सा करम करे ताकि मैं मर न जाऊँ;

15 बल्कि मेरे घराने से भी कभी अपने करम को बाज़ न रखना और जब ख़ुदावन्द तेरे दुश्मनों में से एक एक को ज़मीन पर से मिटा और बर्बाद कर डाले तब भी ऐसा ही करना।”

16 इसलिए यूनतन ने दाऊद के ख़ानदान से 'अहद किया और कहा कि “ख़ुदावन्द दाऊद के दुशमनों से बदला ले।

17 और यूनतन ने दाऊद को उस मुहब्बत की वजह से जो उसको उससे थी दोबारा क़सम खिलाई क्यूँकि उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था।”

18 तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि "कल नया चाँद है और तू
याद आएगा, क्यूँकि तेरी जगह ख़ाली रहेगी।
19 और अपने तीन दिन ठहरने के बाद तू जल्द जाकर उस जगह
आ जाना जहाँ, तू उस काम के दिन छिपा था, और उस पत्थर के
नज़दीक रहना जिसका नाम अज़ल है।
20 और मैं उस तरफ़ तीन तीर इस तरह चलाऊँगा, गोया
निशाना मारता हूँ।
21 और देख, मैं उस वक़्त लड़के को भेजूँगा कि जा तीरों को
ढूँड ले आ, इसलिए अगर मैं लड़के से कहूँ कि देख, तीर तेरी इस
तरफ़ हैं तो तू उनको उठा, कर ले आना क्यूँकि ख़ुदावद की हयात
की क़सम तेरे लिए सलामती होगी न कि नुक़्सान।
22 लेकिन अगर मैं छोकरे से यूँ कहूँ कि देख, तीर तेरी उस तरफ़
हैं तो तू अपनी रास्ता लेना क्यूँकि ख़ुदावन्द ने तुझे रुख़्सत किया
है।
23 रहा वह मु'आमिला जिसका ज़िक्र तूने और मैंने किया है इस
लिए देख, ख़ुदावन्द हमेशा तक मेरे और तेरे बीच रहे।"
24 तब दाऊद मैदान मैं जा छिपा और जब नया चाँद हुआ तो
बादशाह खाना खाने बैठा।
25 और बादशाह अपने दस्तूर के मुताबिक़ अपनी मसनद पर
या'नी उसी मसनद पर जो दीवार के बराबर थी बैठा, और *यूनतन
खड़ा हुआ, और अबनेर साऊल के पहलू में बैठा, और दाऊद की
जगह ख़ाली रही।
26 लेकिन उस रोज़ साऊल ने कुछ न कहा, क्यूँकि उसने गुमान
किया कि उसे कुछ हो गया होगा, वह नापाक होगा, वह ज़रूर
नापाक ही होगा।
27 और नए चाँद के बाद दूसरे दिन दाऊद की जगह फिर ख़ाली
रही, तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि "क्या वजह है,

* **20:25** योनातन मुकाबिल में बैठ गया

कि यस्सी का बेटा न तो कल खाने पर आया न आज आया है?"
28 तब यूनतन ने साऊल को जवाब दिया कि दाऊद ने मुझ से
बजिद होकर बैतलहम जाने को इजाज़त माँगी।
29 वह कहने लगा कि "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ मुझे जाने दे
क्यूँकि शहर में हमारे घराने का ज़बीहा है और मेरे भाई ने मुझे
हुक्म किया है कि हाज़िर रहूँ, अब अगर मुझ पर तेरे करम की
नज़र है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूँ, इसीलिए वह
बादशाह के दस्तरख़्वान पर हाज़िर नही हुआ।"
30 तब साऊल का ग़ुस्सा यूनतन पर भड़का और उसने उससे
कहा, "ऐ कजरफ़्तार चण्डालन के बेटे क्या मैं नहीं जानता कि
तूने अपनी शर्मिंदगी और अपनी माँ की बरहनगी की शर्मिंदगी
के लिए यस्सी के बेटे को चुन लिया है?
31 क्यूँकि जब तक यस्सी का यह बेटा इस ज़मीन पर ज़िन्दा
है, न तो तुझ को क़याम होगा न तेरी बादशाहत को, इसलिए
अभी लोग भेज कर उसे मेरे पास ला क्यूँकि उसका मरना ज़रूर
है।"
32 तब यूनतन ने अपने बाप साऊल को जवाब दिया "वह क्यूँ
मारा जाए? उसने क्या किया है?"
33 तब साऊल ने भाला फेंका कि उसे मारे, इससे यूनतन जान
गया कि उसके बाप ने दाऊद के क़त्ल का पूरा 'इरादा किया है।
34 इसलिए यूनतन बड़े ग़ुस्सा में दस्तरख़्वान पर से उठ गया
और महीना के उस दूसरे दिन कुछ खाना न खाया क्यूँकि वह
दाऊद के लिए दुखी था इसलिए कि उसके बाप ने उसे रुसवा
किया।
35 और सुबह को यूनतन उसी वक़्त जो दाऊद के साथ ठहरा
था मैदान को गया और एक लड़का उसके साथ था।
36 और उसने अपने लड़के को हुक्म किया कि दौड़ और यह तीर
जो मैं चलाता हूँ ढूँड ला और जब वह लड़का दौड़ा जा रहा था,

तो उसने ऐसा तीर लगाया जो उससे आगे गया।
37 और जब वह लड़का उस तीर की जगह पहूँचा जिसे यूनतन
ने चलाया था, तो यूनतन ने लड़के के पीछे पुकार कर कहा, "क्या
वह तीर तेरी उस तरफ़ नहीं?"
38 और यूनतन उस लड़के के पीछे चिल्लाया, तेज़ जा, ज़ल्दी
कर ठहरमत, इस लिए यूनतन के लड़के ने तीरों को जमा' किया
और अपने आक़ा के पास लौटा।
39 लेकिन उस लड़के को कुछ मा'लूम न हुआ, सिर्फ़ दाऊद और
यूनतन ही इसका राज़ जानते थे।
40 फिर यूनतन ने अपने हथियार उस लड़के को दिए और उससे
कहा "इनको शहर को ले जा।"
41 जैसे ही वह लड़का चला गया दाऊद जुनूब की तरफ़ से
निकला और ज़मीन पर औंधा होकर तीन बार सिज्दा किया और
उन्होंने आपस में एक दूसरे को चूमा और आपस में रोए लेकिन
दाऊद बहुत रोया।
42 और यूनतन ने दाऊद से कहा कि सलामत चला जा क्यूँकि
हम दोनों ने ख़ुदावन्द के नाम की क़सम खाकर कहा है कि
ख़ुदावन्द मेरे और तेरे बीच और मेरी और तेरी नसल के बीच
हमेशा तक रहे, इसलिए वह उठ कर रवाना हुआ और यूनतन
शहर में चला गया।

21

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□

1 और दाऊद नोब में अख़ीमलिक काहिन के पास आया; और
अख़ीमलिक दाऊद से मिलने को काँपता हुआ आया और उससे
कहा, "तू क्यूँ अकेला है, और तेरे साथ कोई आदमी नहीं?"
2 दाऊद ने अख़ीमलिक काहिन से कहा कि "बादशाह ने मुझे
एक काम का हुक्म करके कहा है, कि जिस काम पर मैं तुझे भेजता

हूँ, और जो हुक्म मैंने तुझे दिया है वह किसी शख़्स पर ज़ाहिर न
हो इस लिए मैंने जवानों को फ़ुलानी जगह बिठा दिया है।
3 इसलिए अब तेरे यहाँ क्या है? मेरे हाथ में रोटियों के पाँच
टुकड़े या जो कुछ मौजूद हो दे।"
4 काहिन ने दाऊद को जवाब दिया "मेरे यहाँ 'आम रोटियाँ
तो नहीं लेकिन पाक रोटियाँ हैं; बशर्ते कि वह जवान 'औरतों से
अलग रहे हों।"
5 दाऊद ने काहिन को जवाब दिया "सच तो यह है कि तीन दिन
से 'औरतें हमसे अलग रहीं हैं, और अगरचे यह मा'मूली सफ़र है
तोभी जब मैं चला था तब इन जवानों के बर्तन पाक थे, तो आज
तो ज़रूर ही वह बर्तन पाक होंगे।"
6 तब काहिन ने पाक रोटी उसको दी क्यूँकि और रोटी वहाँ
नहीं थी, सिर्फ़ नज़र की रोटी थी, जो ख़ुदावन्द के आगे से उठाई
गई थी ताकि उसके बदले उस दिन जब वह उठाई जाए गर्म रोटी
रख्खी जाए।
7 और वहाँ उस दिन साऊल के ख़ादिमों में से एक शख़्स
ख़ुदावन्द के आगे रुका हुआ था, उसका नाम अदोमी दोएग था।
यह साऊल के चरवाहों का सरदार था।
8 फिर दाऊद ने अख़ीमलिक से पूछा "क्या यहाँ तेरे पास कोई
नेज़ह या तलवार नहीं? क्यूँकि मैं अपनी तलवार और अपने
हथियार अपने साथ नहीं लाया क्यूँकि बादशाह के काम की
जल्दी थी।"
9 उस काहिन ने कहा, कि "फ़िलिस्ती जोलियत की तलवार
जिसे तूने एला की वादी में क़त्ल किया कपड़े में लिपटी हुई अफ़ूद
के पीछे रख्खी है, अगर तु उसे लेना चाहता है तो ले, उसके
'अलावा यहाँ कोई और नहीं है।" दाऊद ने कहा, "वैसे तो कोई है
ही नहीं, वही मुझे दे।"
10 और दाऊद उठा, और साऊल के ख़ौफ़ से उसी दिन भागा
और जात के बादशाह अकीस के पास चला गया।

11 और अकीस के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “क्या यही उस
मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं? क्या इसी के बारे में नाचते वक़्त
गा — गा कर उन्होंने आपस में नहीं कहा था कि साऊल ने तो
हज़ारों को लेकिन दाऊद ने लाखों को मारा?”
12 दाऊद ने यह बातें अपने दिल में रक्खीं और जात के
बादशाह अकीस से निहायत डरा।
13 इसलिए वह उनके आगे दूसरी चाल चला और उनके हाथ
पड़ कर अपने को दीवाना सा बना लिया, और फाटक के किवाड़ों
पर लकीरें खींचने और अपनी थूक को अपनी दाढ़ी पर बहाने
लगा।
14 तब अकीस ने अपने नौकरों से कहा, “लो यह आदमी तो
दीवाना है, तुम उसे मेरे पास क्यूँ लाए?
15 क्या मुझे दीवानों की ज़रूरत है जो तुम उसको मेरे पास
लाए हो कि मेरे सामने दीवाना पन करे? क्या ऐसा आदमी मेरे
घर में आने पाएगा?”

22

'[illegible]

1 और दाऊद वहाँ से चला और 'अदूल्लाम के मग़ारे में भाग
आया, और उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना यह सुनकर
उसके पास वहाँ पहुँचा।
2 और सब कंगाल और सब क़र्ज़दार और सब बिगड़े दिल
उसके पास जमा' हुए और वह उनका सरदार बना और उसके साथ
क़रीबन चार सौ आदमी हो गए।
3 और वहाँ से दाऊद मोआब के मिसफ़ाह को गया और मोआब
के बादशाह से कहा, “मेरे माँ बाप को ज़रा यहीं आकर अपने यहाँ
रहने दे जब तक कि मुझे मा'लूम न हो कि ख़ुदा मेरे लिए क्या
करेगा।”
4 और वह उनको शाहे मोआब के सामने ले आया, इसलिए वह
जब तक दाऊद गढ़ में रहा, उसी के साथ रहे।

5 तब जाद नबी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह, रवाना
हो और यहूदाह के मुल्क में जा, इसलिए दाऊद रवाना हुआ, और
हारत के बन में चला गया।
6 और साऊल ने सुना कि दाऊद और उसके साथियों का पता
लगा है, और साऊल उस वक़्त रामा के जिब'आ में झाऊ के दरख़्त
के नीचे अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था और उसके
ख़ादिम उसके चारों तरफ़ खड़े थे।
7 तब साऊल ने अपने ख़ादिमों से जो उसके चारों तरफ़ खड़े थे
कहा, "सुनों तो ऐ बिनयमीनों। क्या यस्सी का बेटा तुम मैं से हर
एक को खेत और ताकिस्तान देगा और तुम सबको हज़ारों और
सैकड़ों का सरदार बनाएगा?
8 जो तुम सब ने मेरे ख़िलाफ़ साज़िश की है और जब मेरा बेटा
यस्सी के बेटे से 'अहद — ओ — पैमान करता है तो तुम में से
कोई मुझ पर ज़ाहिर नहीं करता और तुम में कोई नहीं जो मेरे
लिए ग़मगीन हो और मुझे बताए कि मेरे बेटे ने मेरे नौकर को
*मेरे ख़िलाफ़ घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है?"
9 तब अदोमी दोएग ने जो साऊल के ख़ादिमों के बराबर खड़ा
था जवाब दिया कि "मैंने यस्सी के बेटे को नोब में अख़ीतोब के
बेटे अख़ीमलिक काहिन के पास आते देखा।
10 और उसने उसके लिए ख़ुदावन्द से सवाल किया और उसे
ज़ाद — ए — राह दिया और फ़िलिस्ती जूलियत की तलवार
दी।"

[illegible]

11 तब बादशाह ने अख़ीतोब के बेटे अख़ीमलिक काहिन को
और उसके बाप के सारे घराने को या'नी उन काहिनों को जो नोब
में थे बुलवा भेजा और वह सब बादशाह के पास हाज़िर हुए।
12 और साऊल ने कहा, "ऐ अख़ीतोब के बेटे तू सुन। उसने
कहा, ऐ मेरे मालिक मैं हाज़िर हूँ।"

* **22:8** मेरा दुश्मन बन्ने के लिए

13 और साऊल ने उससे कहा कि “तुम ने या'नी तूने और यस्सी
के बेटे ने क्यूँ मेरे ख़िलाफ़ साज़िश की है, कि तूने उसे रोटी और
तलवार दी और उसके लिए ख़ुदा से सवाल किया ताकि वह मेरे
बर ख़िलाफ़ उठ कर घात लगाए जैसा आज के दिन है?”
14 तब अख़ीमलिक ने बादशाह को जवाब दिया कि “तेरे सब
ख़ादिमों में दाऊद की तरह आमानतदार कौन है? वह बादशाह
का दामाद है, और †तेरे दरबार में हाज़िर हुआ, करता और तेरे घर
में मु'अज़्ज़िज़ है।
15 और क्या मैंने आज ही उसके लिए ख़ुदा से सवाल करना
शुरू' किया? ऐसी बात मुझ से दूर रहे, बादशाह अपने ख़ादिम
पर और मेरे बाप के सारे घराने पर कोई इल्ज़ाम न लगाए क्यूँकि
तेरा ख़ादिम उन बातों को कुछ नहीं जानता, न थोड़ा न बहुत।”
16 बादशाह ने कहा, “ऐ अख़ीमलिक! तू और तेरे बाप का सारा
घराना ज़रूर मार डाला जाएगा।”
17 फिर बादशाह ने उन सिपाहियों को जो उसके पास खड़े थे
हुक्म किया कि “मुड़ो और ख़ुदावन्द के काहिनों को मार डालो
क्यूँकि दाऊद के साथ इनका भी हाथ है और इन्होंने यह जानते
हुए भी कि वह भागा हुआ है मुझे नही बताया।” लेकिन बादशाह
के ख़ादिमों ने ख़ुदावन्द के काहिनों पर हमला करने के लिए हाथ
बढाना न चाहा।
18 तब बादशाह ने दोएग से कहा, “तू मुड़ और उन काहिनों पर
हमला कर इसलिए अदोमी दोएग ने मुड़ कर काहिनों पर हमला
किया और उस दिन उसने पचासी आदमी जो कतान के अफ़ूद
पहने थे क़त्ल किए।
19 और उसने काहिनों के शहर नोब को तलवार की धार से मारा
और मर्दों और औरतों और लड़कों और दूध पीते बच्चों और बैलों
और गधों और भेड़ बकरियों को बरबाद किया।

† **22:14** तेरे मुहाफ़िज़ का कपतान

20 और अख़ीतोब के बेटे अख़ीमलिक के बेटों में से एक जिसका
नाम अबीयातर था बच निकला और दाऊद के पास भाग गया।
21 और अबीयातर ने दाऊद को ख़बर दी कि साऊल ने
ख़ुदावन्द के काहिनों को क़त्ल कर ड़ाला है।"
22 दाऊद ने अबीयातर से कहा, "मैं उसी दिन जब अदोमी
दोएग वहाँ मिला जान गया था कि वह ज़रूर साऊल को ख़बर
देगा तेरे बाप के सारे घराने के मारे जाने की वजह मैं हूँ।
23 इसलिए तू मेरे साथ रह और मत डर — जो तेरी जान
चाहता है, वह मेरी जान चाहता है, इसलिए तू मेरे साथ सलामत
रहेगा।"

23

[illegible]

1 और उन्होंने दाऊद को ख़बर दी कि "देख, फ़िलिस्ती क़'ईला
से लड़ रहे हैं और खलिहानों को लूट रहे हैं।"
2 तब दाऊद ने ख़ुदावन्द से पूछा कि "क्या मैं जाऊँ और उन
फ़िलिस्तियों को मारूं?" ख़ुदावन्द ने दाऊद को फ़रमाया, "जा
फ़िलिस्तियों को मार और क़'ईला को बचा।"
3 और दाऊद के लोगों ने उससे कहा कि "देख, हम तो यहीं
यहूदाह में डरते हैं, तब हम क़'ईला को जाकर फ़िलिस्ती लशकरों
का सामना करें तो कितना ज़्यादा न डर लगेगा?"
4 तब दाऊद ने ख़ुदावन्द से फिर सवाल किया, ख़ुदावन्द ने
जवाब दिया कि "उठ क़'ईला को जा क्यूँकि मैं फ़िलिस्तियों को
तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।"
5 इसलिए दाऊद और उसके लोग क़'ईला को गए और
फ़िलिस्तियों से लड़े और उनकी मवाशी ले आए और उनको बड़ी
खूँरेज़ी के साथ क़त्ल किया, यूँ दाऊद ने क़'ईलियों को बचाया।

6 जब अख़ीमलिक का बेटा अबीयातर दाऊद के पास क़'ईला
को भागा तो उसके हाथ में एक अफ़ूद था जिसे वह साथ ले गया
था।
7 और साऊल को ख़बर हुई कि दाऊद क़'ईला में आया है
इसलिए साऊल कहने लगा कि "ख़ुदा ने उसे मेरे क़ब्ज़े में कर
दिया क्यूँकि वह जो ऐसे शहर में घुसा है, जिस में फाटक और
अड़बंगे हैं तो क़ैद हो गया है।"
8 और साऊल ने जंग के लिए अपने सारे लश्कर को बुला लिया
ताकि क़'ईला में जाकर दाऊद और उसके लोगों को घेर ले।
9 और दाऊद को मा'लूम हो गया कि साऊल उसके ख़िलाफ़
बुराई की तदबीरें कर रहा है, इसलिए उसने अबीयातर काहिन से
कहा कि "अफ़ूद यहाँ ले आ।"
10 और दाऊद ने कहा, ऐ ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा तेरे बन्दे
ने यह क़त'ई सुना है कि साऊल क़'ईला को आना चाहता है ताकि
मेरी वजह से शहर को बरबाद करदे।
11 तब क्या क़'ईला के लोग मुझको उसके हवाले कर देंगे?
क्या साऊल जैसा तेरे बन्दे ने सुना है आएगा? ऐ ख़ुदावन्द
इस्राईल के ख़ुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दे को
बता दे "ख़ुदावन्द ने कहा, वह आएगा।"
12 तब दाऊद ने कहा कि "क्या क़'ईला के लोग मुझे और मेरे
लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?" ख़ुदावन्द ने कहा, "वह
तुझे हवाले कर देंगे।"

[illegible]

13 तब दाऊद और उसके लोग जो क़रीबन छ: सौ थे उठकर
क़'ईला से निकल गए और जहाँ कहीं जा सके चल दिए और
साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़'ईला से निकल गया तब
वह जाने से बाज़ रहा।

14 और दाऊद ने वीराने के क़िलों' में सुकूनत की और दश्त ऐ
ज़ीफ़ के पहाड़ी मुल्क में रहा, और साऊल हर रोज़ उसकी तलाश
में रहा, लेकिन ख़ुदावन्द ने उसको उसके क़ब्ज़े में हवाले न किया।
15 और दाऊद ने देखा कि साऊल उसकी जान लेने को निकला
है, उस वक़्त दाऊद दश्त — ए — ज़ीफ़ के बन में था।
16 और साऊल का बेटा यूनतन उठकर दाऊद के पास बन में
गया और ख़ुदा में उसका हाथ मज़बूत किया।
17 उसने उससे कहा, "तू मत डर क्यूँकि तू मेरे बाप साऊल के
हाथ में नहीं पड़ेगा और तू इस्राईल का बादशाह होगा और में
तुझ से दूसरे दर्जे पर हूँगा, यह मेरे बाप साऊल को भी मा'लूम
है।"
18 और उन दोनों ने ख़ुदावन्द के आगे 'अहद ओ पैमान किया
और दाऊद बन में ठहरा रहा, और यूनतन अपने घर को गया।
19 तब ज़ीफ़ के लोग जिबा' में साऊल के पास जाकर कहने
लगे, "क्या दाऊद हमारे बीच कोहे हकीला के बन के क़िलों' में
जंगल के जुनूब की तरफ़ छिपा नही है?
20 इसलिए अब ऐ बादशाह तेरे दिल को जो बड़ी आरज़ू आने
की है उसके मुताबिक़ आ और उसको बादशाह के हाथ में हवाले
करना हमारा ज़िम्मा रहा।"
21 तब साऊल ने कहा, "ख़ुदावन्द की तरफ़ से तुम मुबारक हो
क्यूँकि तुमने मुझ पर रहम किया।
22 इसलिए अब ज़रा जाकर सब कुछ और पक्का कर लो और
उसकी जगह को देख, कर जान लो कि उसका ठिकाना कहाँ है,
और किसने उसे वहाँ देखा है, क्यूँकि मुझ से कहा, गया है कि वह
बड़ी चालाकी से काम करता है।
23 इसलिए तुम देख भाल कर जहाँ — जहाँ वह छिपा करता
है उन ठिकानों का पता लगा कर ज़रूर मेरे पास फिर आओ और
मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और अगर वह इस मुल्क में कहीं भी हो तो

में उसे यहूदाह के हज़ारों हज़ार में से ढूँड निकालूँगा।"
24 इसलिए वह उठे और साऊल से पहले ज़ीफ़ को गए लेकिन
दाऊद और उसके लोग म'ऊन के वीराने में थे जो जंगल के जुनूब
की तरफ़ मैदान में था।
25 और साऊल और उसके लोग उसकी तलाश में निकले और
दाऊद को ख़बर पहुँची, इसलिए वह चट्टान पर से उतर आया और
म'ऊन के वीराने में रहने लगा, और साऊल ने यह सुनकर म'ऊन
के वीराने में दाऊद का पीछा किया।
26 और साऊल पहाड़ की इस तरफ़ और दाऊद और उसके लोग
पहाड़ की उस तरफ़ चल रहे थे, और दाऊद साऊल के ख़ौफ़ से
निकल जाने की जल्दी कर रहा, था इसलिए कि साऊल और
उसके लोगों ने दाऊद को और उसके लोगों को पकड़ने के लिए
घेर लिया था।
27 लेकिन एक क़ासिद ने आकर साऊल से कहा कि "जल्दी
चल क्यूँकि फ़िलिस्तियों ने मुल्क पर हमला किया है।"
28 इसलिए साऊल दाऊद का पीछा छोड़ कर फ़िलिस्तियों
का मुक़ाबिला करने को गया इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम
*सिला'हम्मख़ल्कोत रख्खा।
29 और दाऊद वहाँ से चला गया और 'ऐन जदी के क़िलों' में
रहने लगा।

24

[illegible]

1 जब साऊल फ़िलिस्तियों का पीछा करके लौटा तो उसे ख़बर
मिली कि दाऊद 'ऐन जदी के वीराने में हैं।
2 इसलिए साऊल सब इस्राईलियों में से तीन हज़ार चुने हुए
जवान लेकर जंगली बकरों की चट्टानों पर दाऊद और उसके लोगों
की तलाश में चला।

* **23:28** जुदाई की चट्टान

3 और वह रास्ता में भेड़ सालो के पास पहुँचा जहाँ एक ग़ार
था, और साऊल उस ग़ार में फ़राग़त करने घुसा और दाऊद अपने
लोगों के साथ उस ग़ार के अंदरूनी ख़ानों में बैठा, था।
4 और दाऊद के लोगों ने उससे कहा, "देख, यह वह दिन है,
जसके बारे में ख़ुदावन्द ने तुझ से कहा, था कि 'देख, मैं तेरे दुश्मन
को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा और जो तेरा जी चाहे वह तू उससे
करना' " इसलिए दाऊद उठकर साऊल के जुब्बे का दामन चुपके
से काट ले गया।
5 और उसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद का दिल बेचैन हुआ,
इसलिए कि उसने साऊल के जुब्बे का दामन काट लिया था।
6 और उसने अपने लोगों से कहा कि "ख़ुदावन्द न करे कि मैं
अपने मालिक से जो ख़ुदावन्द का मम्सूह है, ऐसा काम करूं कि
अपना हाथ उस पर चलाऊँ इसलिए कि वह ख़ुदावन्द का मम्सुह
है।"
7 इसलिए दाऊद ने अपने लोगों को यह बातें कह कर रोका
और उनको साऊल पर हमला करने न दिया और साऊल उठ कर
ग़ार से निकला और अपनी राह ली।
8 और बाद उसके दाऊद भी उठा, और उस ग़ार में से निकला
और साऊल के पीछे पुकार कर कहने लगा, ऐ मेरे मालिक
बादशाह! "जब साऊल ने पीछे फिर कर देखा तो दाऊद ने ओंधे
मुँह गिरकर सिज्दा किया।
9 और दाऊद ने साऊल से कहा, तू क्यूँ ऐसे लोगों की बातों को
सुनता है, जो कहते है कि दाऊद तेरी बदी चाहता है?
10 देख, आज के दिन तूने अपनी आँखों से देखा कि ख़ुदावन्द
ने ग़ार में आज ही तुझे मेरे क़ब्ज़े में कर दिया और कुछ ने मुझ
से कहा, भी कि तुझे मार डालूँ लेकिन मेरी आँखों ने तेरा लिहाज़
किया और मैंने कहा कि मैं अपने मालिक पर हाथ नहीं चलाऊँगा
क्यूँकि वह ख़ुदावन्द का मम्सूह है।

11 'अलावा इसके ऐ मेरे बाप देख, यह भी देख, कि तेरे जुब्बे
का दामन मेरे हाथ में है, और चूँकि मैंने तेरे जुब्बे का दामन काटा
और तुझे मार नहीं डाला इसलिए तू जान ले और देख, ले कि मेरे
हाथ में किसी तरह, की बदी या बुराई नहीं और मैंने तेरा कोई
गुनाह नहीं किया अगर्चे तू मेरी जान लेने के दर्पे है।
12 ख़ुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ़ करे और ख़ुदावन्द तुझ
से मेरा बदला ले लेकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा।
13 पुराने लोगों कि मिसाल है, कि बुरों से बुराई होती है लेकिन
मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा।
14 इस्राईल का बादशाह किस के पीछे निकला? तू किस के
पीछे पड़ा है? एक मरे हुए कुत्ते के पीछे, एक पिस्सू के पीछे।
15 जब ख़ुदावन्द ही मुंसिफ हो और मेरे और तेरे बीच फ़ैसला
करे और देखे, और मेरा मुक़द्दमा लड़े और तेरे हाथ से मुझे
छुड़ाए।"
16 और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद यह बातें साऊल से कह चुका
तो साऊल ने कहा, "ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है?"
और साऊल चिल्ला कर रोने लगा।
17 और उसने दाऊद से कहा, "तू मुझ से ज़्यादा सच्चा है
इसलिए कि तूने मेरे साथ भलाई की है, हालाँकि मैंने तेरे साथ
बुराई की।
18 और तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि तूने मेरे साथ
भलाई की है क्यूँकि जब ख़ुदावन्द ने मुझे तेरे क़ब्ज़े में कर दिया
तो तूने मुझे क़त्ल न किया।
19 भला क्या कोई अपने दुश्मन को पाकर उसे सलामत जाने
देता है? इसलिए ख़ुदावन्द उसने की के बदले जो तूने मुझ से
आज के दिन की तुझ को नेक अज्र दे।
20 और अब देख, मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू यक़ीनन बादशाह
होगा और इस्राईल की सल्तनत तेरे हाथ में पड़ कर क़ाईम होगी।

21 इसलिए अब मुझ से ख़ुदावन्द की क़सम खा कि तू मेरे बाद
मेरी नसल को हलाक नहीं करेगा और मेरे बाप के घराने में से मेरे
नाम को मिटा नहीं डालेगा।”
22 इसलिए दाऊद ने साऊल से क़सम खाई और साऊल घर
को चला गया पर दाऊद और उसके लोग उस गढ़ में जा बैठे।

25

[illegible]

1 और समुएल मर गया और सब इस्राईली जमा' हुए और
उन्होंने उस पर नौहा किया और उसे रामा में उसी के घर में दफ़न
किया और दाऊद उठ कर फ़ारान के *जंगल को चला गया।
2 और म'ऊन में एक शख़्स रहता था जिसकी जायदाद करमिल
में थी यह शख़्स बहुत बड़ा था और उस के पास तीन हज़ार भेड़ें
और एक हज़ार बकरियाँ थीं और यह कर्मिल में अपनी भेड़ों के
बाल कतर रहा था।
3 इस शख़्स का नाम नाबाल और उसकी बीवी का नाम
अबीजेल था, यह 'औरत बड़ी समझदार और ख़ूबसूरत थी लेकिन
वह आदमी बड़ा बे अदब और बदकार था और वह कालिब के
ख़ानदान से था।
4 और दाऊद ने वीराने में सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों के बाल
कतर रहा, है।
5 इसलिए दाऊद ने दस जवान रवाना किए और उसने उन
जवानों से कहा, “कि तुम कर्मिल पर चढ़कर नाबाल के पास
जाओ, और मेरा नाम लेकर उसे सलाम कहो।
6 और उस ख़ुश हाल आदमी से यूँ कहो कि तेरी और तेरे घर
कि और तेरे माल असबाब की सलामती हो।
7 मैंने अब सुना है कि तेरे यहाँ बाल कतरने वाले हैं और तेरे
चरवाहे हमारे साथ रहे और हमने उनको नुक़्सान नहीं पहूँचाया

* 25:1 बयाबान, कराहने वाला जंगल

और जब तक वह कर्मिल में हमारे साथ रहे उनकी कोई चीज़ खोई
न गई।
8 तू अपने जवानों से पूछ और वह तुझे बताएँगे, तब इन
जवानों पर तेरे करम की नज़र हो इसलिए कि हम अच्छे दिन
आए हैं, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि जो कुछ तेरे क़ब्ज़े में आए
अपने ख़ादिमों को और अपने बेटे दाऊद को 'अता कर।"
9 इसलिए दाऊद के जवानों ने जाकर नाबाल से दाऊद का
नाम लेकर यह बातें कहीं और चुप हो रहे।
10 नाबाल ने दाऊद के ख़ादिमों को जवाब दिया "कि दाऊद
कौन है? और यस्सी का बेटा कौन है? इन दिनों बहुत से नौकर
ऐसे हैं जो अपने आक़ा के पास से भाग जाते हैं।
11 क्या मैं अपनी रोटी और पानी और ज़बीहे जो मैंनें अपने
कतरने वालों के लिए ज़बह किए हैं, लेकर उन लोगों को दूँ जिनको
मैं नहीं जानता कि वह कहाँ के हैं?"
12 इसलिए दाऊद के जवान उलटे पाँव फिरे और लौट गए और
आकर यह सब बातें उसे बताईं।
13 तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, अपनी अपनी तलवार
बाँध लो, इसलिए हर एक ने अपनी तलवार बाँधी और दाऊद ने
भी अपनी तलवार लटकाई, तब क़रीबन चार सौ जवान दाऊद के
पीछे चले और दो सौ सामान के पास रहे।
14 और जवानों में से एक ने नाबाल की बीवी अबीजेल से कहा,
"कि देख, दाऊद ने वीराने से हमारे आक़ा को मुबारकबाद देने को
क़ासिद भेजे लेकिन वह उन पर झुंझलाया।
15 लेकिन इन लोगों ने हम से बड़ी नेकी की और हमारा नुक़्सान
नहीं हुआ, और मैदानों में जब तक हम उनके साथ रहे हमारी कोई
चीज़ गुम न हुई।
16 बल्कि जब तक हम उनके साथ भेड़ बकरी चराते रहे वह रात
दिन हमारे लिए गोया दीवार थे।
17 इसलिए अब सोच समझ ले कि तू क्या करेगी क्यूँकि हमारे

आक़ा और उसके सब घराने के ख़िलाफ़ बदी का मंसूबा बाँधा गया
है, क्यूँकि यह ऐसा †ख़बीस आदमी है कि कोई इस से बात नहीं
कर सकता।"
18 तब अबीजेल ने जल्दी की और दो सौ रोटियाँ और मय के
दो मश्कीज़े और ‡पाँच पकी पकाई भेंडें और भुने हुए अनाज के
पाँच पैमाने और किशमिश के एक सौ ख़ोशे और इन्जीर की दो
सौ टिकियाँ साथ लीं और उनको गधों पर लाद लिया।
19 और अपने चाकरों से कहा, "तुम मुझ से आगे जाओ, देखो
मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ" और उसने अपने शोहर नाबाल को
ख़बर न की।
20 और ऐसा हुआ, कि जैसे ही वह गधे पर चढ़ कर पहाड़ की
आड़ से उतरी दाऊद अपने लोगों के साथ उतरते हुए उसके सामने
आया और वह उनको मिली।
21 और दाऊद ने कहा, था "कि मैं इस पाजी के सब माल की
जो वीराने में था बे फ़ाइदा इस तरह निगहबानी की कि उसकी
चीज़ों में से कोई चीज़ गुम न हुई क्यूँकि उसने नेकी के बदले मुझ
से बदी की।
22 इसलिए अगर मैं सुबह की रोशनी होने तक उसके लोगों में
से एक लड़का भी बाक़ी छोड़ूँ तो ख़ुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से
ऐसा ही बल्कि इससे ज़्यादा ही करे।"

[illegible]

23 और अबीजेल ने जो दाऊद को देखा, तो जल्दी की और गधे
से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरीं और ज़मीन पर सरनगूँ
हो गई।
24 और वह उसके पाँव पर गिर कर कहने लगी, "मुझ पर ऐ
मेरे मालिक मुझी पर यह गुनाह हो और ज़रा अपनी लौंडी को
इजाज़त दे कि तेरे कान में कुछ कहे और तू अपनी लौंडी की
दरख़्वास्त सुन।

† **25:17** बलियाल का बेटा, बदकार का बेटा, शैतान ‡ **25:18** 20 किलोग्राम

25 मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि मेरा मालिक उस §ख़बीस आदमी
*नाबाल का कुछ ख़याल न करे क्यूँकि जैसा उसका नाम है वैसा
ही वह है उसका नाम नाबाल है और हिमाक़त उसके साथ है
लेकिन मैंनें जो तेरी लौंडी हूँ अपने मालिक के जवानों को जिनको
तूने भेजा था नहीं देखा।
26 और अब ऐ मेरे मालिक! ख़ुदावन्द की हयात की क़सम और
तेरी जान ही की क़सम कि ख़ुदावन्द ने जो तुझे ख़ूँरेज़ी से और
अपने ही हाथो अपना इन्तक़ाम लेने से बाज़ रख्खा है इसलिए
तेरे दुश्मन और मेरे मालिक के बुराई चाहने वाले नाबाल की तरह
ठहरें।
27 अब यह हदिया जो तेरी लौंडी अपने मालिक के सामने लाई
है, उन जवानों को जो मेरे ख़ुदावन्द की पैरवी करतें हैं दिया जाए।
28 तू अपनी लौंडी का गुनाह मु'आफ़ करदे क्यूँकि ख़ुदावन्द
यक़ीनन मेरे मालिक का घर क़ाईम रख्खेगा इसलिए कि मेरे
मालिक ख़ुदावन्द की लड़ाईयाँ लड़ता है और तुझ में तमाम उम्र
बुराई नहीं पाई जाएगी।
29 और जो इंसान तेरा पीछा करने और तेरी जान लेने को उठे
तोभी मेरे मालिक की जान ज़िन्दगी के बूक़चे में ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा के साथ बंधी रहेगी लेकिन तेरे दुशमनों की जानें वह गोया
गोफ़न में रखकर फेंक देगा।
30 और जब ख़ुदावन्द मेरे मालिक से वह सब नेकियाँ जो उसने
तेरे हक़ में फ़रमाई हैं कर चुकेगा और तुझ को इस्राईल का सरदार
बना देगा।
31 तो तुझे इसका ग़म और मेरे मालिक को यह दिली सदमा
न होगा कि तूने बे वजह ख़ून बहाया या मेरे मालिक ने अपना
बदला लिया और जब ख़ुदावन्द मेरे मालिक से भलाई करे तो तू
अपनी लौंडी को याद करना।"

---

§ **25:25** बलियाल का बेटा * **25:25** बेवकूफ़ या कुंद ज़ेहन

32 दाऊद ने अबीजेल से कहा, “कि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा
मुबारक हो जिसने तुझे आज के दिन मुझ से मिलने को भेजा।
33 और तेरी 'अक़्लमंदी मुबारक तू ख़ुद भी मुबारक हो जिसने
मुझको आज के दिन ख़ूँरेज़ीऔर अपने हाथों अपना बदला लेने
से बाज़ रख्खा।
34 क्यूँकि ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की हयात की क़सम
जिसने मुझे तुझको नुक़्सान पहुचाने से रोका कि अगर तू जल्दी
न करती और मुझ से मिलने को न आती तो सुबह की रोशनी तक
नाबाल के लिए एक लड़का भी न रहता।”
35 और दाऊद ने उसके हाथ से जो कुछ वह उसके लिए लाई
थी क़ुबूल किया और उससे कहा, “अपने घर सलामत जा, देख
मैंने तेरी बात मानी और तेरा लिहाज़ किया।”
36 और अबीजेल नाबाल के पास आई और देखा कि उसने अपने
घर में शाहाना ज़ियाफ़त की तरह दावत कर रख्खी है और नाबाल
का दिल उसके पहलू में ख़ुश है इसलिए कि वह नशे में चूर था,
इसलिए उसने उससे सुबह की रोशनी तक न थोड़ा न बहुत कुछ
न कहा,
37 सुबह को जब नाबाल का नशा उतर गया तो उसकी बीवी ने
यह बातें उसे बताईं तब उसका दिल उसके पहलू में मुर्दा हो गया
और वह पत्थर की तरह सुन पड़ गया।
38 और दस दिन के बाद ऐसा हुआ कि ख़ुदावन्द ने नाबाल को
मारा और वह मर गया।
39 जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया तो वह कहने लगा,
“कि ख़ुदावन्द मुबारक हो जो नाबाल से मेरी रुसवाई का मुक़द्दमा
लड़ा और अपने बन्दे को बुराई से बाज़ रख्खा और ख़ुदावन्द ने
नाबाल की शरारत को उसी के सिर पर लादा।” और दाऊद ने
अबीजेल के बारे में पैग़ाम भेजा ताकि उससे शादी करे।
40 और जब दाऊद के ख़ादिम करमिल में अबीजेल के पास
आए तो उन्होंने उससे कहा, “कि दाऊद ने हमको तेरे पास भेजा

है ताकि हम तुझे उससे शादी करने को लें जाएँ।"
41 इसलिए वह उठी, और ज़मीन पर ओंधे मुँह गिरी और कहने
लगी "कि देख, तेरी लौंडी तो नौकर है ताकि अपने मालिक के
ख़ादिमों के पाँव धोए।"
42 और अबीजेल ने जल्दी की और उठकर गधे पर सवार हुई
और अपनी पाँच लौंडियाँ जो उसके जिलौ में थीं साथ लेलीं और
वह दाऊद के क़ासिदों के पीछे पीछे गई और उसकी बीवी बनी।
43 और दाऊद ने यज़रएल की अख़नूअम को भी ब्याह लिया,
इसलिए वह दोनों उसकी बीवियाँ बनीं।
44 और साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की बीवी
थी लैस के बेटे जिल्लीमी फिल्ती को दे दिया था।

26

1 और ज़ीफ़ी जिबा' में साऊल के पास जाकर कहने लगे, "क्या
दाऊद हकीला के पहाड़ में जो जंगल के सामने है, छिपा हुआ,
नहीं?"
2 तब साऊल उठा, और तीन हज़ार चुने हुए इस्राईली जवान
अपने साथ लेकर ज़ीफ़ के जंगल को गया ताकि उस जंगल में
दाऊद को तलाश करे।
3 और साऊल हकीला के पहाड़ में जो जंगल के सामने है रास्ता
के किनारे ख़ेमा ज़न हुआ, पर दाऊद जंगल में रहा, और उसने
देखा कि साऊल उसके पीछे जंगल में आया है।
4 तब दाऊद ने जासूस भेज कर मा'लूम कर लिया कि साऊल
हक़ीक़त में आया है?
5 तब दाऊद उठ कर साऊल की ख़ेमागाह, में आया और वह
जगह देखी जहाँ साऊल और नेर का बेटा अबनेर भी जो उसके
लश्कर का सरदार था आराम कर रहे थे और साऊल गाड़ियों की
जगह के बीच सोता था और लोग उसके चारों तरफ़ डेरे डाले हुए
थे।

6 तब दाऊद ने हित्ती अख़ीमलिक ज़रोयाह के बेटे अबीशै से
जो योआब का भाई था कहा "कौन मेरे साथ साऊल के पास
ख़ेमागाह में चलेगा?" अबीशय ने कहा, "मैं तेरे साथ चलूँगा।"
7 इसलिए दाऊद और अबीशै रात को लश्कर में घुसे और देखा
कि साऊल गाड़ियों की जगह के बीच में पड़ा सो रहा है और
उसका नेज़ा उसके सरहाने ज़मीन में गड़ा हुआ है और अबनेर
और लश्कर के लोग उसके चारों तरफ़ पड़े हैं।
8 तब अबीशै ने दाऊद से कहा, ख़ुदा ने आज के दिन तेरे दुश्मन
को तेरे हाथ में कर दिया है इसलिए अब तू ज़रा मुझको इजाज़त
दे कि नेज़े के एक ही वार में उसे ज़मीन से पैवंद कर दूँ और मैं उस
पर दूसरा वार करने का भी नहीं।
9 दाऊद ने अबीशै से कहा, "उसे क़त्ल न कर क्यूँकि कौन है
जो ख़ुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाए और बे गुनाह ठहरे।"
10 और दाऊद ने यह भी कहा, "कि ख़ुदावन्द की हयात की
क़सम ख़ुदावन्द आप उसको मारेगा या उसकी मौत का दिन
आएगा या वह जंग में जाकर मर जाएगा।
11 लेकिन ख़ुदावन्द न करे कि मैं ख़ुदावन्द के मम्सूह पर हाथ
चलाऊँ पर ज़रा उसके सरहाने से यह नेज़ा और पानी की सुराही
उठा, ले फिर हम चले चलें।"
12 इसलिए दाऊद ने नेज़ा और पानी की सुराही साऊल के
सरहाने से उठा ली और वह चल दिए और न किसी आदमी ने यह
देखा और न किसी को ख़बर हुई और न कोई जागा क्यूँकि वह सब
के सब सोते थे इसलिए कि ख़ुदावन्द की तरफ़ से उन पर गहरी
नींद आई हुई थी।
13 फिर दाऊद दूसरी तरफ़ जाकर उस पहाड़ की चोटी पर दूर
खड़ा रहा, और उनके बीच एक बड़ा फ़ासला था।
14 और दाऊद ने उन लोगों को और नेर के बेटे अबनेर को पुकार
कर कहा, ऐ अबनेर तु जवाब नहीं देता? अबनेर ने जवाब दिया

"तू कौन है जो बादशाह को पुकारता है?"

15 दाऊद ने अबनेर से कहा, क्या तू बड़ा बहादुर नहीं और
कौन बनी इस्राईल में तेरा नज़ीर है? फिर किस लिए तूने अपने
मालिक बादशाह की निगहबानी न की? क्यूँकि एक शख़्स तेरे
मालिक बादशाह को क़त्ल करने घुसा था।

16 तब यह काम तूने कुछ अच्छा न किया ख़ुदावन्द कि हयात
की क़सम तुम क़त्ल के लायक़ हो क्यूँकि तुमने अपने मालिक की
जो ख़ुदावन्द का मम्सूह है, निगहबानी न की अब ज़रा देख, कि
बादशाह का भाला और पानी की सुराही जो उसके सरहाने थी
कहाँ हैं।

17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचानी और कहा, "ऐ
मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है?" दाऊद ने कहा, "ऐ मेरे
मालिक बादशाह यह मेरी ही आवाज़ है।"

18 और उसने कहा, "मेरा मालिक क्यूँ अपने ख़ादिम के पीछे
पड़ा है? मैंने क्या किया है और मुझ में क्या बुराई है?

19 इसलिए अब ज़रा मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दे की
बातें सुने अगर ख़ुदावन्द ने तुझ को मेरे ख़िलाफ़ उभारा हो तो
वह कोई हदिया मंज़ूर करे और अगर यह आदमियों का काम
हो तो वह ख़ुदावन्द के आगे ला'नती हों क्यूँकि उन्होंने आज के
दिन मुझको ख़ारिज किया है कि मैं ख़ुदावन्द की दी हुई मीरास में
शामिल न रहूँ और मुझ से कहते हैं जा और मा'बूदों की इबादत
कर।

20 इसलिए अब ख़ुदावन्द की सामने से अलग मेरा ख़ून ज़मीन
पर न बहे क्यूँकि बनी इस्राईल का बादशाह एक पिस्सू ढूँढने को
इस तरह, निकला है जैसे कोई पहाड़ों पर तीतर का शिकार करता
हो।"

21 तब साऊल ने कहा, "कि मैंने ख़ता की — ऐ मेरे बेटे दाऊद
लौट आ क्यूँकि मैं फिर तुझे नुक़्सान नहीं पहुचाऊँगा इसलिए की

मेरी जान आज के दिन तेरी निगाह में क़ीमती ठहरी — देख, मैंने
हिमाक़त की और निहायत बड़ी भूल मुझ से हुई।"
22 दाऊद ने जवाब दिया "ऐ बादशाह इस भाला को देख,
इसलिए जवानों में से कोई आकर इसे ले जाए।
23 और ख़ुदावन्द हर शख़्स को उसकी सच्चाई और
दियानतदारी के मुताबिक़ बदला देगा क्यूँकि ख़ुदावन्द ने आज
तुझे मेरे हाथ में कर दिया था लेकिन मैंनें न चाहा कि ख़ुदावन्द
के मम्सूह पर हाथ उठाऊँ।
24 और देख, जिस तरह, तेरी ज़िन्दगी आज मेरी नज़र में
क़ीमती ठहरी इसी तरह मेरी ज़िंदगी ख़ुदावन्द की निगाह में
क़ीमती हो और वह मुझे सब तकलीफ़ों से रिहाई बख़्शे।"
25 तब साऊल ने दाऊद से कहा, ऐ मेरे बेटे दाऊद तू मुबारक हो
तू बड़े बड़े काम करेगा और ज़रूर फ़तहमंद होगा। इसलिए दाऊद
अपनी रास्ते चला गया और साऊल अपने मकान को लौटा।

27

[illegible]

1 और दाऊद ने अपने दिल में कहा कि अब मैं किसी न किसी
दिन साऊल के हाथ से हलाक हूँगा, तब मेरे लिए इससे बेहतर
और कुछ नहीं कि मैं फ़िलिस्तियों की सर ज़मीन को भाग जाऊँ
और साऊल मुझ से न उम्मीद हो कर बनी इस्राईल की सरहदों
में फिर मुझे नहीं ढूँडेगा, यूँ मैं उसके हाथ से बच जाऊँगा।
2 इसलिए दाऊद उठा और अपने साथ के छ: सौ जवानों को
लेकर जात के बादशाह म'ओक के बेटे अकीस के पास गया।
3 और दाऊद उसके लोग जात में अकीस के साथ अपने
अपने ख़ानदान समेत रहने लगे और दाऊद के साथ भी उसकी
दोनों बीवियाँ या'नी यज़र'एली अख़नूअम और नाबाल की बीवी
कर्मिली अबीजेल थीं।

4 और साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद जात को भाग गया,
तब उस ने फिर कभी उसकी तलाश न की।
5 और दाऊद ने अकीस से कहा, “कि अगर मुझ पर तेरे करम
की नज़र है तो मुझे उस मुल्क के शहरों में कहीं जगह दिला दे
ताकि मैं वहाँ बसूँ, तेरा ख़ादिम तेरे साथ दार — उस — सल्तनत
में क्यूँ रहें?”
6 इसलिए अकीस ने उस दिन सिक़लाज उसे दिया इसलिए
सिक़लाज आज के दिन तक यहूदाह के बादशाहों का है।
7 और दाऊद फ़िलिस्तियों की सर ज़मीन में कुल एक बरस और
चार महीने तक रहा।
8 और दाऊद और उसके लोगों ने जाकर जसूरियों और
जज़ीरयों और 'अमालीक़ियों पर हमला किया क्यूँकि वह शोर
कि राह से मिस्र की हद तक उस सर ज़मीन के पुराने बाशिंदे थे।
9 और दाऊद ने उस सर ज़मीन को तबाह कर डाला और 'औरत
मर्द किसी को ज़िन्दा न छोड़ा और उनकी भेड़ बकरियाँ और बैल
और गधे और ऊँट और कपड़े लेकर लौटा और अकीस के पास
गया।
10 अकीस ने पूछा, “कि आज तुम ने किधर लूट मार की, दाऊद
ने कहा, यहूदाह के दख्खिन और यरहमीलियों के दख्खिन और
क़ीनियों के दख्खिनमें।”
11 और दाऊद उन में से एक मर्द 'औरत को भी ज़िन्दा बचा
कर जात में नहीं लाता था और कहता था कि “कहीं वह हमारी
हक़ीक़त न खोल दें, और कह दें कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया और
जब से वह फ़िलिस्तियों के मुल्क में बसा है, तब से उसका यहीं
तरीक़ा रहा, है।”
12 और अकीस ने दाऊद का यक़ीन कर के कहा, “कि उसने
अपनी कौम इस्राईल को अपनी तरफ़ से कमाल नफ़रत दिला दी
है इसलिए अब हमेशा यह मेरा ख़ादिम रहेगा।”

28

1 और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौजें
जंग के लिए जमा' कीं ताकि इस्राईल से लड़ें और अकीस ने दाऊद
से कहा, “तू यक़ीन जान कि तुझे और तेरे लोगों को लश्कर में हो
कर मेरे साथ जाना होगा।”
2 दाऊद ने अकीस से कहा, फिर जो कुछ तेरा ख़ादिम करेगा
वह तुझे मा'लूम भी हो जाएगा “अख़ीस ने दाऊद से कहा, फिर तो
हमेशा के लिए तुझ को मैं अपने बुराई का निगहबान ठहराऊँगा।”
3 और समुएल मर चुका था और सब इस्राईलियों ने उस पर
नौहा कर के उसे उसके शहर रामा में दफ़न किया था और साऊल
ने जिन्नात के आशनाओं और अफ़सूँगरों को मुल्क से ख़ारिज कर
दिया था।
4 और फ़िलिस्ती जमा'हुए और आकर शूनीम में डेरे डाले और
साऊल ने भी सब इस्राईलियों को जमा' किया और वह जिलबु'आ
में ख़ेमाज़न हुए।
5 और जब साऊल ने फ़िलिस्तियों का लश्कर देखा तो परेशान
हुआ, और उसका दिल बहुत काँपने लगा।
6 और जब साऊल ने ख़ुदावन्द से सवाल किया तो ख़ुदावन्द
ने उसे न तो ख़्वाबों और न उरीम और न नबियों के वसीले से कोई
जवाब दिया।
7 तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “कोई ऐसी 'औरत
मेरे लिए तलाश करो जिसका आशना जिन्न हो ताकि मैं उसके
पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके मुलाज़िमों ने उससे कहा, देख,
“ऐन दोर में एक 'औरत है जिसका आशना जिन्न है।”
8 इसलिए साऊल ने अपना भेस बदल कर दूसरी पोशाक पहनी
और दो आदमियों को साथ लेकर चला और वह रात को उस
'औरत के पास आए और उसने कहा, “ज़रा मेरी ख़ातिर जिन्न
के ज़रिए' से मेरा फ़ाल खोल और जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ
उसे ऊपर बुला दे।”

9 तब उस 'औरत ने उससे कहा, "देख, तू जानता है कि साऊल
ने क्या किया कि उसने जिन्नात के आशनाओं और अफ़सूँगरों को
मुल्क से काट डाला है, फिर तू क्यूँ मेरी जान के लिए फँदा लगाता
है ताकि मुझे मरवा डाले।"
10 तब साऊल ने ख़ुदावन्द की क़सम खा कर कहा, "कि
ख़ुदावन्द की हयात की क़सम इस बात के लिए तुझे कोई सज़ा
नहीं दी जाएगी।"
11 तब उस 'औरत ने कहा, "मैं किस को तेरे लिए ऊपर बुला
दूँ?" उसने कहा, "समुएल को मेरे लिए बुला दे।"
12 जब उस 'औरत ने समुएल को देखा तो बुलंद आवाज़ से
चिल्लाई और उस 'औरत ने साऊल से कहा, "तूने मुझ से क्यूँ
दग़ा की क्यूँकि तू तो साऊल है।"
13 तब बादशाह ने उससे कहा, "परेशान मत हो, तुझे क्या
दिखाई देता है?" उसने साऊल से कहा, "मुझे एक मा'बूद ज़मीन
से उपर आते दिखाई देता है।"
14 तब उसने उससे कहा, "उसकी शक्ल कैसी है?" उसने कहा,
"एक बुड्ढा ऊपर को आ रहा है और जुब्बा पहने है," तब साऊल
जान गया कि वह समुएल है और उसने मुँह के बल गिर कर ज़मीन
पर सिज्दा किया।
15 समुएल ने साऊल से कहा, "तूने क्यूँ मुझे बेचैन किया कि
मुझे ऊपर बुलवाया?" साऊल ने जवाब दिया, "मैं सख़्त परेशान
हूँ; क्यूँकि फ़िलिस्ती मुझ से लड़तें हैं और ख़ुदा मुझ से अलग
हो गया है और न तो नबियों और न तो ख़्वाबों के वसीले से मुझे
जवाब देता है इसलिए मैंने तुझे बुलाया ताकि तू मुझे बताए कि
मैं क्या करूँ।"
16 समुएल ने कहा, फिर तू मुझ से किस लिए पूछ़ता है जिस
हाल कि ख़ुदावन्द तुझ से अलग हो गया और तेरा दुश्मन बना
है?

17 और ख़ुदावन्द ने जैसा मेरे ज़रिए' कहा, था वैसा ही किया
है, ख़ुदावन्द ने तेरे हाथ से सल्तनत चाक कर ली और तेरे पड़ोसी
दाऊद को 'इनायत की है।
18 इसलिए कि तूने ख़ुदावन्द की बात नहीं मानी और
'अमालीक़ियों से उसके क़हर — ए — शदीद के मुताबिक़ पेश
नहीं आया इसी वजह से ख़ुदावन्द ने आज के दिन तुझ से यह
बरताव किया।
19 'अलावा इसके ख़ुदावन्द तेरे साथ इस्राईलियों को भी
फ़िलिस्तियों के हाथ में कर देगा और कल तू और तेरे बेटे मेरे
साथ होंगे और ख़ुदावन्द इस्राईली लश्कर को भी फ़िलिस्तियों
के हाथ में कर देगा।
20 तब साऊल फ़ौरन ज़मीन पर लम्बा होकर गिरा और समुएल
की बातों की वजह से निहायत डर गया और उस में कुछ ताक़त
बाक़ी न रही क्यूँकि उसने उस सारे दिन और सारी रात रोटी नहीं
खाई थी।
21 तब वह 'औरत साऊल के पास आई और देखा कि वह
निहायत परेशान है, इसलिए उसने उससे कहा, “देख, तेरी लौंडी
ने तेरी बात मानी और मैंने अपनी जान अपनी हथेली पर रख्खी
और जो बातें तूने मुझ से कहीं मैंने उनको माना है।
22 इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि तू अपनी लौंडी
की बात सुन और मुझे 'इजाज़त दे कि रोटी का टुकड़ा तेरे आगे
रख्खूँ, तू खा कि जब तू अपनी राह ले तो तुझे ताक़त मिले।”
23 लेकिन उसने इनकार किया और कहा, कि मैं नहीं खाऊँगा
लेकिन उसके मुलाज़िम उस 'औरत के साथ मिलकर उससे बजिद
हुए, तब उसने उनका कहा, माना और ज़मीन पर से उठ कर पलंग
पर बैठ गया।
24 उस 'औरत के घर में एक मोटा बछड़ा था, इसलिए उसने
जल्दी की और उसे ज़बह किया और आटा लेकर गूँधा और बे
ख़मीरी रोटियाँ पकाईं।

25 और उनको साऊल और उसके मुलाज़िमों के आगे लाई और
उन्होंने खाया तब वह उठेऔर उसी रात चले गए।

29

1 और फ़िलिस्ती अपने सारे लश्कर को अफ़ीक़ में जमा' करने
लगे और इस्राईली उस चश्मा के नज़दीक जो यज़र'एल में है
ख़ेमा ज़न हुए।
2 और फ़िलिस्तियों के उमरा सैकड़ों और हज़ारों के साथ आगे
— आगे चल रहे थे और दाऊद अपने लोगों के साथ अकीस के
साथ पीछे — पीछे जा रहा था।
3 तब फ़िलिस्ती अमीरों ने कहा, “इन 'इब्रानियों का यहाँ क्या
काम है?” अकीस ने फ़िलिस्ती अमीरों से कहा “क्या यह इस्राईल
के बादशाह साऊल का ख़ादिम दाऊद नहीं जो इतने दिनों बल्कि
इतने बरसों से मेरे साथ है और मैंने जब से वह मेरे पास भाग
आया है आज के दिन तक उस में कुछ बुराई नहीं पाई?”
4 लेकिन फ़िलिस्ती हाकिम उससे नाराज़ हुए और फ़िलिस्ती
ने उससे कहा, इस शख़्स को लौटा दे कि वह अपनी जगह को जो
तूने उसके लिए ठहराई है वापस जाए, उसे हमारे साथ जंग पर
न जाने दे ऐसा न हो कि जंग में वह हमारा मुख़ालिफ़ हो क्यूँकि
वह अपने आक़ा से कैसे मेल करेगा? क्या इन ही लोगों के सिरों
से नहीं?
5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में उन्होंने नाचते वक़्त
गा — गा कर एक दूसरे से कहा कि “साऊल ने तो हज़ारों को पर
दाऊद ने लाखों को मारा?”
6 तब अकीस ने दाऊद को बुला कर उससे कहा, “ख़ुदावन्द
की हयात की क़सम कि तू सच्चा है और मेरी नज़र में तेरा आना
जाना मेरे साथ लश्कर में अच्छा है क्यूँकि मैंने जिस दिन से तू मेरे
पास आया आज के दिन तक तुझ में कुछ बुराई नहीं पाई तोभी
यह हाकिम तुझे नहीं चाहते।

7 इसलिए तू अब लौट कर सलामत चला जा ताकि फ़िलिस्ती
हाकिम तुझ से नाराज़ न हों।"
8 दाऊद ने अकीस से कहा, "लेकिन मैंने क्या किया है? और
जब से मैं तेरे सामने हूँ तब से आज के दिन तक मुझ में तूने क्या
बात पाई जो मैं अपने मालिक बादशाह के दुश्मनों से जंग करने
को न जाऊँ।"
9 अकीस ने दाऊद को जवाब दिया "मैं जानता हूँ कि तू मेरी
नज़र में ख़ुदा के फ़रिश्ता की तरह नेक है तोभी फ़िलिस्ती हाकिम
ने कहा है कि वह हमारे साथ जंग के लिए न जाए।
10 इसलिए अब तू सुबह सवेरे अपने आक़ा के ख़ादिमों को
लेकर जो तेरे साथ यहाँ आए हैं उठना और जैसे ही तुम सुबह
सवेरे उठो रोशनी होते होते रवाना हो जाना।"
11 इसलिए दाऊद अपने लोगों के साथ तड़के उठा ताकि
सुबह को रवाना होकर फ़िलिस्तियों के मुल्क को लौट जाए और
फ़िलिस्ती यज़र'एल को चले गए।

30

1 और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन
सिक़लाज में पहुँचे तो देखा कि 'अमालीक़ियों ने दख्खिनी हिस्से
और सिक़लाज पर चढ़ाई कर के सिक़लाज को मारा और आग से
फूँक दिया।
2 और 'औरतों को और जितने छोटे बड़े वहाँ थे सब को क़ैद कर
लिया है, उन्होंने किसी को क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको लेकर
चल दिए थे।
3 इसलिए जब दाऊद और उसके लोग शहर में पहुँचे तो देखा
कि शहर आग से जला पड़ा है, और उनकी बीवियाँ और बेटे और
बेटियाँ क़ैद हो गई हैं।
4 तब दाऊद और उसके साथ के लोग ज़ोर ज़ोर से रोने लगे
यहाँ तक कि उन में रोने की ताक़त न रही।

5 और दाऊद की दोनों बीवियाँ यज़र'एली अख़नूअम और
कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल क़ैद हो गई थीं।
6 और दाऊद बड़े शिकंजे में था क्यूँकि लोग उसे संगसार करने
को कहते थे इसलिए कि लोगों के दिल अपने बेटों और बेटियों के
लिए निहायत ग़मग़ीन थे लेकिन दाऊद ने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
में अपने आप को मज़बूत किया।
7 और दाऊद ने अख़ीमलिक के बेटे अबीयातर काहिन से कहा,
कि ज़रा अफ़ूद को यहाँ मेरे पास ले आ, इसलिए अबीयातर
अफ़ूद को दाऊद के पास ले आया।
8 और दाऊद ने ख़ुदावन्द से पूछा कि "अगर मैं उस फ़ौज का
पीछा करूँ तो क्या मैं उनको जा लूँगा?" उसने उससे कहा कि
"पीछा कर क्यूँकि तू यक़ीनन उनको पालेगा और ज़रूर सब कुछ
छुड़ा लाएगा।"
9 इसलिए दाऊद और वह छ: सौ आदमी जो उसके साथ थे
चले और बसोर की नदी पर पहुँचे जहाँ वह लोग जो पीछे छोड़े
गए ठहरे रहे।
10 लेकिन दाऊद और चार सौ आदमी पीछा किए चले गए
क्यूँकि दो सौ जो ऐसे थक गए थे कि बसोर की नदी के पार न जा
सके पीछे रह गए।
11 और उनको मैदान में एक मिस्री मिल गया, उसे वह दाऊद
के पास ले आए और उसे रोटी दी, इसलिए उसने खाई और उसे
पीने को पानी दिया।
12 और उन्होंने अंजीर की टिकया का टुकड़ा और किशमिश के
दो खोशे उसे दिए, जब वह खा चुका तो उसकी जान में जान आई
क्यूँकि उस ने तीन दिन और तीन रात से न रोटी खाई थी न पानी
पिया था।
13 तब दाऊद ने पूछा "तू किस का आदमी है? और तू कहाँ का
है?" उस ने कहा "मैं एक मिस्री जवान और एक 'अमालीक़ी का

नौकर हूँ और मेरा आक़ा मुझ को छोड़ गया क्यूँकि तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ गया था।
14 हमने करेतियों के दख्खिन में और यहूदाह के मुल्क में और कालिब के दख्खिन में लूट मार की और सिक़लाज को आग से फूँक दिया।"
15 दाऊद ने उस से कहा "क्या तू मुझे उस फ़ौज तक पहुँचा देगा?" उसने कहा "तू मुझ से ख़ुदा की क़सम खा कि न तू मुझे क़त्ल करेगा और न मुझे मेरे आक़ा के हवाले करेगा तो मैं तुझ को उस फ़ौज तक पहुँचा दूँगा।"
16 जब उसने उसे वहाँ पहुँचा दिया तो देखा कि वह लोग उस सारी ज़मीन पर फैले हुए थे और उसे बहुत से माल की वजह से जो उन्होंने फ़िलिस्तियों के मुल्क और यहूदाह के मुल्क से लूटा था खाते पीते और ज़ियाफतें उड़ा रहे थे।
17 इसलिए दाऊद रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की शाम तक उनको मारता रहा, और उन में से एक भी न बचा सिवा चार सौ जवानों के जो ऊँटों पर चढ़ कर भाग गए।
18 और दाऊद ने सब कुछ जो 'अमालीक़ी ले गए थे छुड़ा लिया और अपनी दोनों बीवियों को भी दाऊद ने छुड़ाया।
19 और उनकी कोई चीज़ गुम न हुई न छोटी न बड़ी न लड़के न लड़कियाँ न लूट का माल न और कोई चीज़ जो उन्होंने ली थी दाऊद सब का सब लौटा लाया।
20 और दाऊद ने सब भेड़ बकरियाँ और गाय और बैल ले लिए और वह उनको बाक़ी जानवर के आगे यह कहते हुए हाँक लाए कि यह दाऊद की लूट है।
21 और दाऊद उन दो सौ जवानों के पास आया जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके और जिनको उन्होंने बसोर की नदी पर ठहराया था, वह दाऊद और उसके साथ के

लोगों से मिलने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के नज़दीक
पहुँचा तो उसने उनसे ख़ैर — ओ — 'आफ़ियत पूछी।
22 तब उन लोगों में से जो दाऊद के साथ गए थे सब बद ज़ात
और ख़बीस लोगों ने कहा, चूँकि यह हमारे साथ न गए, इसलिए
हम इनको उस माल में से जो हम ने छुड़ाया है कोई हिस्सा नहीं
देंगे 'अलावा हर शख़्स की बीवी और बाल बच्चों के ताकि वह
उनको लेकर चलें जाएँ। *
23 तब दाऊद ने कहा, "ऐ मेरे भाइयों तुम इस माल के साथ जो
ख़ुदावन्द ने हमको दिया है ऐसा नहीं करने पाओगे क्यूँकि उसी ने
हमको बचाया और उस फ़ौज को जिसने हम पर चढ़ाई की हमारे
क़ब्ज़े में कर दिया।
24 और इस काम में तुम्हारी मानेगा कौन? क्यूँकि जैसा उसका
हिस्सा है जो लड़ाई में जाता है वैसा ही उसका हिस्सा होगा जो
सामान के पास ठहरता है, दोनों बराबर हिस्सा पाएँगे।"
25 और उस दिन से आगे को ऐसा ही रहा कि उसने इस्राईल के
लिए यही क़ानून और आईन मुक़र्रर किया जो आज तक है।
26 और जब दाऊद सिक़लाज में आया तो उसने लूट के माल में
से यहूदाह के बुज़ुर्गों के पास जो उसके दोस्त थे कुछ कुछ भेजा
और कहा, कि देखो ख़ुदावन्द के दुश्मनों के माल में से यह तुम्हारे
लिए हदिया है।
27 यह उनके पास जो बैतएल में और उनके पास जो रामात —
उल — जुनूब में और उनके पास जो यतीर में।
28 और उनके पास जो 'अरो'ईर में, और उनके पास जो
सिफ़मोत में और उनके पास जो इस्तिमू'अ में।
29 और उनके पास जो रकिल में और उनके पास जो
यरहमीलियों के शहरों में और उनके पास जो क़ीनियों के शहरों
में।

---

* **30:22** देखें1:16

30 और उनके पास जो हुरमा में और उनके पास जो कोर'आसान
में, और उनके पास जो 'अताक में।
31 और उनके पास जो हबरून में थे और उन सब जगहों में जहाँ
जहाँ दाऊद और उसके लोग फ़िरा करते थे, भेजा।

31

1 और फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़े और इस्राईली जवान
फ़िलिस्तियों के सामने से भागे और पहाड़ी — ए — जिल्बू'आ में
क़त्ल होकर गिरे।
2 और फ़िलिस्तियों ने साऊल और उसके बेटों का ख़ूब
पीछा किया और फ़िलिस्तियों ने साऊल के बेटों यूनतन और
अबीनदाब, और मलकीशु'अ को मार डाला।
3 और यह जंग साऊल पर निहायत भारी हो गई और
तीरअंदाज़ो ने उसे पा लिया और वह तीरअंदाज़ों की वजह से
सख़्त मुश्किल में पड़ गया।
4 तब साऊल ने अपने सिलाह बरदार से कहा, अपनी तलवार
खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामख़्तून आएँ
और मुझे छेद लें, और मुझे बे 'इज़्ज़त करें लेकिन उसके सिलाह
बरदार ऐसा करना न चाहा, क्यूँकि वह बहुत डर गया था इसलिए
साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा।
5 जब उसके सिलाह बरदार ने देखा, कि साऊल मर गया तो
वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उसके साथ मर गया।
6 इसलिए साऊल और उसके तीनों बेटे और उसका सिलाह
बरदार और उसके सब लोग उसी दिन एक साथ मर मिटे।
7 जब उन इस्राईली मर्दों ने जो उस वादी की दूसरी तरफ़ और
यरदन के पार थे यह देखा कि इस्राईल के लोग भाग गए और
साऊल और उसके बेटे मर गए तो वह शहरों को छोड़ कर भाग
निकले और फ़िलिस्ती आए और उन में रहने लगे।

8 दूसरे दिन जब फ़िलिस्ती लाशों के कपड़े उतारने आए तो
उन्होंने साऊल और उसके तीनों बेटों को कोहे जिल्बू'आ पर मुर्दा
पाया।
9 इसलिए उन्होंने उसका सर काट लिया और उसके हथियार
उतार लिए और फ़िलिस्तियों के मुल्क में क़ासिद रवाना कर दिए,
ताकि उनके बुतख़ानों और लोगों को यह ख़ुशख़बरी पहूँचा दें।
10 इसलिए उन्होंने उसके हथियारों को 'अस्तारात के मन्दिर
में रख्खा और उसकी लाश को बैतशान की दीवार पर जड़ दिया।
11 जब यबीस जिल'आद के बाशिंदों ने इसके बारे में वह बात
जो फ़िलिस्तियों ने साऊल से की सुनी।
12 तो सब बहादुर उठे, और रातों रात जाकर साऊल और उसके
बेटों की लाशें बैतशान की दीवार पर से ले आए और यबीस में
पहुँच कर वहाँ उनको जला दिया।
13 और उनकी हड्डियाँ लेकर यबीस में झाऊ के दरख़्त के नीचे
दफ़न कीं और सात दिन तक रोज़ा रख्खा।

c

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc